KHOUFE KHUDA (HINDI)

ख़ौफ़े ख़ुदा के हुसूल के त़रीक़े और अकाबिरीन के
सौ[100] से ज़ाइद वाक़िआत पर मुश्तमिल एक मुनफ़रिद तह़रीर

ख़ौफ़े ख़ुदा

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही कुतुब)

SC1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात** कम हों या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

"ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ)" का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह किताब **'उर्दू'** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **'हिन्दी' रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,
बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

ख़ौफ़े ख़ुदा के हुसूल के त़रीके़ और अकाबिरीन के सौ 100 से ज़ाइद वाक़िआत पर मुश्तमिल एक मुनफ़रिद तह़रीर

ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ)

-: मुसन्निफ़ :-

अबू वासिफ़ अल अ़त्तारिय्युल मदनी

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-110006

फ़ोन : 011-23284560

e-mail : maktabadelhi@gmail.com

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

(((जुम्ला हुक़ूक़ ब हक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं)))

नाम किताब : ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

मुसन्निफ़ : मौलाना अबू वासिफ़ अल अ़त्तारिय्युल मदनी

पेशकश : शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

त़बाअ़ते अव्वल : रजबुल मुरज्जब, सिने 1435 हिजरी

त़बाअ़ते दुवुम : जमादिल आख़िर, सिने 1437 हिजरी

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- अजमेर : मक्तबतुल मदीना, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- बरेली : मक्तबतुल मदीना, दरगाह आ'ला ह़ज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- गुलबर्गा : मक्तबतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- कानपुर : मक्तबतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- कलकत्ता : मक्तबतुल मदीना, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- नागपुर : मक्तबतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- अनंतनाग : मक्तबतुल मदीना, मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- सुरत : मक्तबतुल मदीना, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- इन्दोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- बेंग्लोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कॉम्पलेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अ़रेबिक कॉलेज, बेंग्लोर, कर्नाटक : 09343268414
- हुबली : मक्तबतुल मदीना, ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इ़ल्तिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है।

तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक, **1425** हि.

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़हा
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ की ज़रूरत	13
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ का मत्लब	14
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ अपनाने की तरग़ीब पर मुश्तमिल आयाते कुरआनिया	14
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ अपनाने की तरग़ीब पर मुश्तमिल अहादीसे मुक़द्दसा	15
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ अपनाने की तरग़ीब पर मुश्तमिल अक़्वाले अकाबिरीन	16
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के दरजात	18
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ की अ़लामात	19
क्या ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ की कैफ़िय्यत का मुस्तक़िल एहसास ज़रूरी है ?	21
क्या हमें येह ने'मत हासिल है ?	22
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के हुसूल की कोशिश का अ़मली त़रीक़ा	23
सच्ची तौबा और इस ने'मत के हुसूल की दुआ़	24
कुरआने अ़ज़ीम में बयान कर्दा ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल	26
अहादीसे मुबारका में मज़कूर ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल	29
अकाबिरीन के बयान कर्दा ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल	33
अ़ज़ाबाते जहन्नम और हमारा नाज़ुक बदन	35
ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से मुतअ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के तक़रीबन 117 वाक़िआ़त	41
(1) क़ब्र की तय्यारी करो.....	42
(2) बादलों में कहीं अ़ज़ाब न हो....	42
(3) जहन्नम की आग आंसू ही बुझा सकते हैं.....	42

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़ह़ा
(4) एक मील तक आवाज़ सुनाई देती.....	44
(5) तीस हज़ार लोग इन्तिक़ाल कर गए.....	44
(6) मुसलसल बहने वाले आंसू.....	45
(7) किसी ने आंख खोलते नहीं देखा.....	45
(8) उन के पहलू लरज़ रहे हैं.....	46
(9) तुम क्यूं रोते हो ?.....	46
(10) कांप रहे होते.....	47
(11) तुम इसी ह़ालत पर रहना.....	47
(12) दिल उड़ने लगे.....	47
(13) जहन्नम में न डाल दिया जाऊं	48
(14) सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام की गिर्या व ज़ारी.....	48
(15) हंसते हुवे नहीं देखा.....	49
(16) काश ! मैं एक परन्दा होता.....	49
(17) अफ़्सोस ! तूने मुझे हलाक कर दिया.....	49
(18) रोने की आवाज़.....	50
(19) सुवारी से गिर पड़े.....	51
(20) कोड़ों के निशानात.....	51
(21) काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता.....	52
(22) बेहोश हो कर गिर पड़े.....	52
(23) आगे न पढ़ सके.....	52

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़ह़ा
(24) अगर तू ने अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ न रखा.....	53
(25) क़ब्र का मन्ज़र सब मनाज़िर से हौलनाक है.....	53
(26) मरने के बा'द न उठाया जाए.....	53
(27) राख हो जाना पसन्द करूं.....	54
(28) मैं तुझे तीन त़लाक़ दे चुका हूं.....	54
(29) उन जैसा नज़र नहीं आता.....	55
(30) भूली बिसरी हो जाऊं.....	55
(31) काश ! मैं एक दरख़्त होता.....	56
(32) हवा मुझे बिखेर दे.....	56
(33) काश ! मैं मेंढ़ा होता.....	56
(34) आह ! मैं इन्सान न होता.....	56
(35) जिगर टुकड़े टुकड़े कर दिया है.....	57
(36) अमानत रखवा दिये हैं.....	57
(37) मुझे किस त़रफ़ जाने का हुक्म होगा ?.....	59
(38) रोने वाला ह़बशी.....	60
(39) मैं कौन सी मुट्ठी में होऊंगा ?.....	61
(40) मैं दुन्या के छूटने पर नहीं रोता.....	61
(41) मैं नहीं जानता.....	61
(42) एक ह़बशी का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ.....	62
(43) क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को भी ख़बर नहीं ?.....	62

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़ह़ा
(44) चेहरे का रंग ज़र्द पड़ जाता.....	63
(45) पुल सिरात़ से गुज़रो.....	63
(46) बेहोश हो कर गिर गए.....	64
(47) बेशक मुझे दो जन्नतें अ़त़ा की गईं.....	65
(48) आंख निकाल दी.....	66
(49) रोने वाला पथ्थर.....	67
(50) चट्टान हट गई.....	68
(51) मुझे जला देना.....	69
(52) दुआ़ के वक़्त चेहरा ज़र्द हो जाता.....	70
(53) होशो ह़वास जाते रहे.....	70
(54) मुझे भूक ही नहीं लगती.....	71
(55) आंखों की ख़ूबसूरती जाती रही.....	71
(56) रोना कैसे छोड़ दूं ?.....	72
(57) अब तौबा का वक़्त आ गया है.....	72
(58) दिन रात रोते रहते.....	73
(59) जहन्नम का नाम सुन कर बेहोश हो गए.....	73
(60) "लब्बैक" कैसे कहूं ?.....	74
(61) भुनी हुई सिरी देख कर बेहोश हो गए.....	75
(62) दर्द में कमी वाक़ेअ़ न हुई.....	75
(63) फूट फूट कर रोते.....	76

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़ह
(64) मुझे शर्म आती है.....	76
(65) रूह परवाज़ कर गई.....	77
(66) बदन पर लरज़ा त़ारी हो जाता.....	78
(67) आंख की बीनाई जाती रही.....	78
(68) ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इन्तिक़ाल करने वाला.....	78
(69) कमर झुक जाने का सबब.....	80
(70) आह ! मेरा क्या बनेगा ?.....	81
(71) ख़ून के आंसू.....	81
(72) मिट्टी हो जाना पसन्द करूंगा.....	82
(73) नेकियों का पलड़ा भारी है या गुनाहों का ?.....	83
(74) रोज़ाना का एक गुनाह भी हो तो ?.....	84
(75) चालीस साल आस्मान की त़रफ़ नहीं देखा.....	85
(76) क़ियामत का इमतिहान.....	86
(77) जन्नती हूर के तबस्सुम का नूर.....	87
(78) इज़हार किस से करूं ?.....	88
(79) मैं मुजरिमों में से हूं.....	89
(80) चार माह बीमार रहे.....	89
(81) सर पर हाथ रख कर पुकार उठे.....	90
(82) तुझ से ह़या आती है.....	90
(83) हंसते हुवे नहीं देखा.....	91

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़्हा
(84) क्या जहन्नम से निकलने में कामयाब हो जाऊंगा ?......	91
(85) गुनाह याद आ गया......	91
(86) इन्तिक़ाल कर गए.........	92
(87) तेरे किस रुख़्सार को कीड़ों ने खाया होगा ?.......	92
(88) जन्नत का दरवाज़ा खुलता है या जहन्नम का ?.......	93
(89) अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर लो......	94
(90) गारा बनाने वाला मज़्दूर.......	95
(91) मुझे अल्लाह तआला के सिवा किसी का ख़ौफ़ नहीं.........	99
(92) अपने ख़ौफ़ के सबब बख़्श दिया..........	99
(93) तमाम गुनाहों की मग़्फ़िरत हो गई.......	100
(94) अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िरी का ख़ौफ़........	102
(95) उंगलियां जला डालीं.........	103
(96) बादल साया फ़िगन हो गया........	104
(97) मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ है........	105
(98) बोसीदा हड्डियों की नसीहत.........	106
(99) मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया.......	108
(100) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है.....	110
(101) मैं किस गिनती में आता हूं ?......	111
(102) नींद कैसे आ सकती है ?.......	111
(103) मेरे पास कोई जवाब न होगा........	112

www.dawateislami.net

उनवान	सफ़ह़ा
(104) दम तोड़ देने वाला मदनी मुन्ना.....	113
(105) आप उसे मार डालेंगे.....	113
(106) ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! क्यूं नहीं ?.....	114
(107) मेरी उम्मीदों को मत तोड़ना.....	115
(108) मेरा क्या बनेगा ?.....	117
(109) फ़ना हो जाने वाली को तरजीह़ न दो.....	117
(110) पाउं अन्दर दाख़िल न किया.....	119
(111) ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ.....	119
(112) जिस के हुक्म से रोज़ा रखा है.....	120
(113) बेहोशी में दुआ़एं.....	121
(114) मुझे अपने रब तआ़ला का डर है.....	122
(115) ईमान की शम्अ़ सदा रोशन रहे.....	123
(116) फूट फूट कर रोने लगे.....	124
(117) दीवार से लिपट कर रोने लगे.....	125
फ़िक्रे मदीना की आ़दत कैसे अपनाई जाए, इस की मिसालें.....	127
रोने के फ़ज़ाइल.....	137
रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बरसात.....	146
नेक सोह़बत की बरकतें.....	155
माख़ज़ो मराजेअ़.....	159
याद दाश्त	161

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

बिला शुबा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हमारी उख़रवी नजात के लिये बड़ी अहम्मिय्यत का ह़ामिल है क्यूंकि इबादात की बजा आवरी और मुन्हिय्यात से बाज़ रहने का अ़ज़ीम ज़रीआ़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ है। ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : راس الحكمة مخافة الله या'नी हिक्मत का सर चश्मा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का ख़ौफ़** है। (کنز العمال: رقم ۵۸۷۳)

ज़ेरे नज़र किताब **"दा'वते इस्लामी"** की मजलिस **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के **शो'बए इस्लाही कुतुब** की पेशकश है, जिस में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुतअ़ल्लिक़ कसीर आयाते करीमा, अह़ादीसे मुबारका और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल के बिखरे हुवे मोतियों को सिल्के तह़रीर में पिरोने की कोशिश की गई है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि वोह अ़वाम व ख़वास को इस किताब से मुस्तफ़ीद होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इसे मुअल्लिफ़ व दीगर अराकीने मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** की उख़रवी नजात का ज़रीआ़ बनाए नीज़ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस बशुमूल मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के तमाम शो'बाजात को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए और हमें नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये दिन रात कोशिशें करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ

प्यारे इस्लामी भाइयो !

इस ह़क़ीक़त से किसी मुसलमान को इन्कार नहीं हो सकता कि मुख़्तसर सी ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारने के बा'द हर एक को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तमाम आ'माल का ह़िसाब देना है। जिस के बा'द रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह होने की सूरत में जन्नत की आ'ला ने'मतें हमारा मुक़द्दर बनेंगी या फिर गुनाहों की शामत के सबब जहन्नम की हौलनाक सज़ाएं हमारा नसीब होंगी। (وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ)

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ज़रूरत :

लिहाज़ा इस दुन्यवी ज़िन्दगी की रोनक़ों, मसर्रतों, और रा'नाइयों में खो कर ह़िसाबे आख़िरत के बारे में ग़फ़्लत का शिकार हो जाना यक़ीनन नादानी है। याद रखिये ! हमारी नजात इसी में है कि हम रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करते हुवे अपने लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इक्ठ्ठा करें और गुनाहों के इर्तिकाब से परहेज़ करें। इस मक़्सदे अ़ज़ीम में कामयाबी ह़ासिल करने के लिये दिल में **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ का होना भी बेह़द ज़रूरी है। क्यूंकि जब तक येह ने'मत ह़ासिल न हो, गुनाहों से फ़रार और नेकियों से प्यार तक़रीबन नामुमकिन है। इस ने'मते उ़ज़्मा के ह़ुसूल में कामयाबी की ख़्वाहिश रखने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये दरजे ज़ैल सुत़ूर का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद साबित होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मत़लब :

याह रखिये कि मुत़लक़न ख़ौफ़ से मुराद वोह क़ल्बी कैफ़िय्यत है जो किसी नापसन्दीदा अम्र के पेश आने की तवक़्क़ोअ़ के सबब पैदा हो मसलन फल काटते हुवे छुरी से हाथ के ज़ख़्मी हो जाने का डर ....

जब कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए। ﴿ماخوذ من احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ج ۴﴾

प्यारे इस्लामी भाइयो !

रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ ने ख़ुद क़ुरआने मजीद में मुतअ़द्दिद मक़ामात पर इस सिफ़त को इख़्तियार करने का हुक्म फ़रमाया है, जिसे दर्जे ज़ैल आयात में मुलाह़ज़ा किया जा सकता है।

﴿1﴾ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि* **अल्लाह** *से डरते रहो।*

(پ۵، النسآء: ۱۳۱)

﴿2﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो और सीधी बात कहो।* (پ۲۲، الاحزاب: ۷۰)

﴿3﴾ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَ اخْشَوْنِ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो उन से न डरो और मुझ से डरो।* (پ۶، المائدۃ: ۳)

www.dawateislami.net

﴿4﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ लोगो ! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया ।* (پ۴،النساء:۱)

﴿5﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो,* ***अल्लाह*** *से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना, मगर मुसलमान ।*

(پ۴،آل عمران:۱۰۲)

﴿6﴾ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और मुझ से डरो, अगर ईमान रखते हो ।* (پ۴،آل عمران۱۷۵)

﴿7﴾ وَ اِيَّایَ فَارْهَبُوْنِ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और ख़ास मेरा ही डर रखो ।* (پ۱،البقرۃ:۴۰)

﴿8﴾ يُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** ***अल्लाह*** *तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है ।* (پ۳،آل عمران۲۸)

﴿9﴾ وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और डरो उस दिन से जिस में* ***अल्लाह*** *की त़रफ़ फिरोगे ।* (پ۳،البقرۃ:۲۸۱)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

प्यारे आक़ा, अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से निकलने वाले इन मुक़द्दस कलिमात को भी मुलाह़ज़ा फ़रमाएं जिन में आप ने इस सिफ़ते अ़ज़ीमा को अपनाने की ताकीद फ़रमाई है, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

﴾1﴿ रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : "अगर तुम मुझ से मिलना चाहते हो तो मेरे बा'द ख़ौफ़ ज़ियादा रखना।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۱۹۸﴾

﴾2﴿ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हिक्मत की अस्ल **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ है।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱ ص ۴۷۰ رقم الحدیث ۷۴۳﴾

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दो निहायत अहम चीज़ों को न भूलना, जन्नत और दोज़ख़।" येह कह कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोने लगे ह़त्ता कि आंसूओं से आप की दाढ़ी मुबारक तर हो गई। फिर फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है अगर तुम वोह जान लो जो मैं जानता हूं तो जंगलों में निकल जाओ और अपने सरों पर ख़ाक डालने लगो।" ﴿مکاشفۃ القلوب ص ۳۱۶﴾

प्यारे इस्लामी भाइयो !

क़ुरआने अ़ज़ीम और अह़ादीसे करीमा के साथ साथ अकाबिरीने इस्लाम के अक़्वाल में भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ह़ुसूल की नसीह़तें मौजूद हैं, जैसा कि

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने बेटे को फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! तुम सफ़्ला बनने से बचना।" उस ने अ़र्ज़ की, कि सफ़्ला कौन है ?" फ़रमाया : "वोह जो रब तआ़ला से नहीं डरता।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱ ص ۴۸۰ رقم الحدیث ۷۷۱﴾

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का वक़्ते वफ़ात क़रीब आया तो किसी ने अ़र्ज़ की : मुझे कुछ वसिय्यत इरशाद फ़रमाइयें।" इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने, अपने घर को लाज़िम पकड़ने, अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने और अपनी ख़त़ाओं पर रोने की वसिय्यत करता हूं।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱، ص ۵۰۳ رقم الحدیث ۸۴۴﴾

www.dawateislami.net

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''तौरेत में लिखा है कि जो बारगाहे इलाही में समझदार बनना चाहे तो उसे चाहिये कि दिल में अल्लाह तआ़ला का ह़क़ीक़ी ख़ौफ़ पैदा करे।''

(المنبہات علی الاستعداد لیوم المعاد ص ۱۳۴)

﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल फ़रज इब्ने जौज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ''ख़ौफ़े इलाही ही ऐसी आग है जो शहवात को जला देती है। इस की फ़ज़ीलत इतनी ही ज़ियादा होगी जितना ज़ियादा येह शहवात को जलाए और जिस क़दर येह अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी से रोके और इत़ाअ़त की तरग़ीब दे और क्यूं न हो ? कि इस के ज़रीए पाकीज़गी, वरअ़, तक़्वा और मुजाहदा नीज़ अल्लाह तआ़ला का क़ुर्ब अ़त़ा करने वाले आ'माल ह़ासिल होते हैं।'' ﴿مکاشفۃ القلوب، ص۱۹۸﴾

﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान दारानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''जिस दिल से ख़ौफ़ दूर हो जाता है वोह वीरान हो जाता है।''

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۱۹۹﴾

﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते थे : ''नेक बख़्ती की अ़लामत बद बख़्ती से डरना है क्यूंकि ख़ौफ़ अल्लाह तआ़ला और बन्दे के दरमियान एक लगाम है, जब येह लगाम टूट जाए तो बन्दा हलाक होने वालों के साथ हलाक हो जाता है।''

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۱۹۹﴾

﴾7﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ दुन्या और आख़िरत की हर भलाई की अस्ल है।''

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱، ص ۵۱۰، رقم الحدیث ۸۷۵﴾

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो !

कुरआने पाक, अहादीसे मुबारका और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मुतअ़ल्लिक़ अह़कामात मुलाह़ज़ा करने के बा'द इस के ह़ुसूल का त़रीक़ा सीखने से क़ब्ल येह जान लेना मुफ़ीद रहेगा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तह़क़ीक़ की रोशनी में ख़ौफ़ के तीन दरजात हैं,

﴿पहला﴾ **ज़ईफ़ (या'नी कमज़ोर) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की कुव्वत न रखता हो मसलन जहन्नम की सज़ाओं के ह़ालात सुन कर मह़ज़ झुर झुरी ले कर रह जाना और फिर से ग़फ़्लत व मा'सिय्यत में गिरिफ़्तार हो जाना....

﴿दूसरा﴾ **मो'तदिल (या'नी मुतवस्सित़) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को किसी नेकी के अपनाने और गुनाह को छोड़ने पर आमादा करने की कुव्वत रखता हो मसलन अ़ज़ाबे आख़िरत की वईदों को सुन कर इन से बचने के लिये अ़मली कोशिश करना और इस के साथ साथ रब तआ़ला से उम्मीदे रह़मत भी रखना...

﴿तीसरा﴾ **क़वी (या'नी मज़बूत़) :** येह वोह ख़ौफ़ है जो इन्सान को नाउम्मीदी, बेहोशी और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला कर दे । मसलन **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब वग़ैरा का सुन कर अपनी मग़फ़िरत से नाउम्मीद होना.....

येह भी याद रहे कि इन सब में बेहतर दरजा ''मो'तदिल'' है क्यूंकि ख़ौफ़ एक ऐसे ताज़ियाने की मिस्ल है जो किसी जानवर को तेज़ चलाने के लिये मारा जाता है लिहाज़ा अगर इस ताज़ियाने की ज़र्ब इतनी ''ज़ईफ़'' हो कि जानवर की रफ़्तार में ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा न हो तो इस का

www.dawateislami.net

कोई फ़ाइदा नहीं, और अगर येह ज़र्ब इतनी "क़वी" हो कि जानवर इस की ताब न ला सके और इतना ज़ख़्मी हो जाए कि उस के लिये चलना ही मुमकिन न रहे तो येह भी नफ़्अ़ बख़्श नहीं और अगर येह "मो'तदिल" हो कि जानवर की रफ़्तार में भी ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा हो जाए और वोह ज़ख़्मी भी न हो तो येह ज़र्ब बेहद मुफ़ीद है। ﴿ماخوذ من احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ج ۴﴾

हो सकता है कि आप के ज़ेहन में येह सुवाल पैदा हो कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तो एक क़ल्बी कैफ़िय्यत का नाम है, हमें किस त़रह़ मा'लूम हो कि हमारे दिल में रब तआ़ला का ख़ौफ़ मौजूद है और अगर है तो बयान कर्दा दरजात में से किस नौइय्यत का है? तो याद रखिये कि उ़मूमन हर कैफ़िय्यते क़ल्बी की कुछ अ़लामात होती हैं जिन की बिना पर पता चलाया जा सकता है कि वोह कैफ़िय्यत दिल में पाई जा रही है या नहीं? इसी त़रह़ ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ की भी चन्द अ़लामात हैं, जिन के सबब हमें अपनी क़ल्बी कैफ़िय्यत का अन्दाज़ा करने में दिक़्क़त पेश नहीं आएगी,

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ की अ़लामत आठ चीज़ों में ज़ाहिर होती है :

﴿1﴾ इन्सान की ज़बान में, वोह इस त़रह़ कि रब तआ़ला का ख़ौफ़ उस की ज़बान को झूट, ग़ीबत, फ़ुज़ूल गोई से रोकेगा और उसे ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ, तिलावते क़ुरआन और इ़ल्मी गुफ़्तगू में मश्ग़ूल रखेगा।

﴿2﴾ उस के शिकम में, वोह इस त़रह़ कि वोह अपने पेट में ह़राम को दाख़िल न करेगा और ह़लाल चीज़ भी ब क़दरे ज़रूरत खाएगा।

﴿3﴾ उस की आंख में, वोह इस त़रह़ कि वोह इसे ह़राम देखने से बचाएगा और दुन्या की त़रफ़ रग़बत से नहीं बल्कि ह़ुसूले इ़ब्रत के लिये देखेगा।

www.dawateislami.net

﴾4﴿ उस के हाथ में, वोह इस त़रह़ कि वोह कभी भी अपने हाथ को ह़राम की जानिब नहीं बढ़ाएगा बल्कि हमेशा इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस्ति'माल करेगा।

﴾5﴿ उस के क़दमों में, वोह इस त़रह़ कि वोह इन्हें **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी में नहीं उठाएगा बल्कि उस के हुक्म की इत़ाअ़त के लिये उठाएगा।

﴾6﴿ उस के दिल में, वोह इस त़रह़ कि वोह अपने दिल से बुग़्ज़, कीना और मुसलमान भाइयों से ह़सद करने को दूर कर दे और उस में ख़ैरख़्वाही और मुसलमानों से नर्मी का सुलूक करने का जज़्बा बेदार करे।

﴾7﴿ उस की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में, इस त़रह़ की वोह फ़क़त **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये इबादत करे और रिया व निफ़ाक़ से ख़ाइफ़ रहे।

﴾8﴿ उस की समाअ़त में, इस त़रह़ कि वोह जाइज़ बात के इलावा कुछ न सुने। ﴿تنبیہ الناصحین المجلس الثلاثون ص۱۲۷﴾

इस तफ़्सील से ब ख़ूबी मा'लूम हो गया कि क़ब्रो ह़श्र और ह़िसाब व मीज़ान वग़ैरा के ह़ालात सुन कर या पढ़ कर मह़ज़ चन्द आहें भर लेना....या.....अपने सर को चन्द मरतबा इधर उधर फिरा लेना...या....कफ़े अफ़्सोस मल लेना....या.....फिर....चन्द आंसू बहा लेना ही काफ़ी नहीं, बल्कि इस के साथ साथ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अ़मली तक़ाज़ों को पूरा करते हुवे गुनाहों का तर्क कर देना और इत़ाअ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो जाना भी उख़रवी नजात के लिये बेह़द ज़रूरी है।

प्यारे इस्लामी भाइयो !

इन तमाम बातों के साथ साथ येह भी जान लीजिये कि येह ज़रूरी नहीं कि हर वक़्त दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा की कैफ़िय्यत ग़ालिब रहे, क्यूंकि दिल की कैफ़िय्यात किसी न किसी वजह से तबदील होती रहती है, इस पर

www.dawateislami.net

कभी एक कैफ़िय्यात ग़ालिब होती है तो कभी दूसरी,.....इस का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल वाक़िए से लगाया जा सकता है, चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हम नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर थे, आप ने हमें कुछ नसीह़तें इरशाद फ़रमाईं, जिन को सुन कर हमारे दिल नर्म हो गए, हमारी आंखों से आंसू बहने लगे और हम ने अपने आप को पहचान लिया। फिर जब मैं अपने घर वापस पहुंचा और मेरी बीवी मेरे क़रीब आई तो हमारे दरमियान दुन्यावी गुफ़्तगू होने लगी। इस का नतीजा येह हुवा कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मेरे दिल पर जो कैफ़िय्यत त़ारी हुई थी, तब्दील हो गई और हम दुन्या के कामों में मश्ग़ूल हो गए। फिर जब मुझे वोह बात याद आई तो मैं ने दिल ही दिल में कहा कि : "मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया हूं क्यूंकि जो ख़ौफ़ और रिक़्क़त मुझे पहले ह़ासिल थी, वोह तब्दील हो गई।" चुनान्चे, मैं घबरा कर बाहर निकला और पुकार कर कहने लगा : "ह़न्ज़ला मुनाफ़िक़ हो गया है !" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे सामने तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं ! ह़न्ज़ला मुनाफ़िक़ नहीं हुवा।"

बिल आख़िर मैं येही बात कहते कहते सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंच गया। रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी फ़रमाया : "हरगिज़ नहीं ! ह़न्ज़ला मुनाफ़िक़ नहीं हुवा।" तो मैं ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब हम आप की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे तो आप ने हमें वा'ज़ फ़रमाया : जिस को सुन कर हमारे दिल दहल गए, आंखों से आंसू जारी हो गए और हम ने अपने आप को पहचान लिया। इस के बा'द मैं अपने घर वालों की

www.dawateislami.net

त़रफ़ पलटा और हम दुन्यावी बातों में मश्ग़ूल हो गए जिस के सबब आप की बारगाह में पैदा होने वाला सोज़ो गुदाज़ रुख़्सत हो गया।" (येह सुन कर) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ ह़न्ज़ला (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) अगर तुम हमेशा इसी ह़ालत पर रहते तो फ़िरिश्ते रास्ते और तुम्हारे बिस्तर पर तुम से मुसाफ़ह़ा करते, लेकिन येह वक़्त वक़्त की बात होती है।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۰۱﴾

प्यारे इस्लामी भाइयो !

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और इस की मुख़्तसर सी वज़ाह़त जान लेने के बा'द हमें अपना मुह़ासबा करना चाहिये कि अब तक हम अपनी ज़िन्दगी की कितनी सांसें ले चुके हैं, इस दुन्याए फ़ानी में अपनी ह़यात के कितने अय्याम गुज़ार चुके हैं ! बचपन, जवानी, बुढ़ापे में से अपनी उ़म्र के कितने अदवार हम गुज़ार चुके हैं ? और इस दौरान कितनी मरतबा हम ने इस ने'मते उ़ज़्मा को अपने दिल में मह़सूस किया ? क्या कभी हमारे बदन पर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर से लरज़ा त़ारी हुवा ? क्या कभी हमारी आंखों से ख़शिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ की वजह से आंसू निकले ? क्या कभी किसी गुनाह के लिये उठे हुवे हमारे क़दम इस के नतीजे में मिलने वाली सज़ा का सोच कर वापस हुवे ? क्या कभी हम ने **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िरी और उस की त़रफ़ से की जाने वाली गिरिफ़्त के डर से ज़िन्दगी की कोई रात आंखों में काटी ? क्या कभी रब तआ़ला की नाराज़ी का सोच कर हमें गुनाहों से वह़शत मह़सूस हुई ? क्या कभी अपने मालिक عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को पा लेने की ख़्वाहिश से हमारे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हुई.....?

अगर जवाब हां में हो तो सोचिये कि अगर हम ने इन कैफ़िय्यात को मह़सूस भी किया तो क्या ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अ़मली तक़ाज़ों पर अ़मल पैरा होने की सआ़दत ह़ासिल की या मह़ज़ इन कैफ़िय्यात के दिल

www.dawateislami.net

पर त़ारी होने पर मुत़मइन हो गए कि हम **अल्लाह** तआ़ला से डरने वालों में से हैं और मुख़्तलिफ़ गुनाहों से अपना नामए आ'माल सियाह करने का अ़मल ब दस्तूर जारी रखा और नेकियों से महरूमी का तसलसुल भी न टूट सका ? सिर्फ़ येही नहीं बल्कि इन कैफ़िय्यात के बार बार एह़सास के लिये कोई दुआ़ भी लबों पर न आई।

और अगर इन सुवालात का जवाब नफ़ी में आए तो ग़ौर कीजिये कहीं ऐसा तो नहीं कि गुनाहों की कसरत के नतीजे में हमारा दिल सख़्त से सख़्त तर हो चुका हो जिस की वजह से हम इन कैफ़िय्यात से अब तक ना आशना हों। अगर वाक़ेई ऐसा है तो मक़ामे तशवीश है कि हमारी कसावते क़ल्बी और इस के नतीजे में पैदा होने वाली ग़फ़्लत कहीं हमें जहन्नम की अथ्थाह गहराइयों में न गिरा दे। (والعیاذ باللہ)

क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्ती में बढ़ा जाता है
दिल पे इक ख़ौल सियाही का चढ़ा जाता है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस से पहले कि हमारी सांसों की आमदो रफ़्त रुक जाए और सिवाए एह़सासे ज़ियां के हमारे दामन में कुछ भी न हो, हम अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये इस सिफ़्ते अ़ज़ीमा को अपना ने की जिद्दो जहद में लग जाएं। ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इस अ़ज़ीम ने'मत के ह़ुसूल के लिये अ़मली कोशिश के सिलसिले में दर्जे ज़ैल उमूर मददगार साबित होंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

﴿1﴾ रब तआ़ला की बारगाह में सच्ची तौबा और इस ने'मत के ह़ुसूल की दुआ़ करना।

﴿2﴾ क़ुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीसे मुबारका में वारिद होने वाले ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखना।

www.dawateislami.net

﴾3﴿ अपनी कमज़ोरी व नातुवानी को सामने रख कर जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौरो तफ़क्कुर करना।

﴾4﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले से अस्लाफ़ के ह़ालात का मुत़ालआ़ करना।

﴾5﴿ ख़ुद एह़तिसाबी की आ़दत अपना ने की कोशिश करते हुवे फ़िक्रे मदीना करना (इस की तफ़्सील आगे आ रही है)।

﴾6﴿ ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना जो इस सिफ़ते अ़ज़ीमा से मुत्तसिफ़ हों।

﴾इन उमूर की तफ़्सील﴿

﴾1﴿ रब तआ़ला की बारगाह में सच्ची तौबा करना और इस ने'मत के ह़ुसूल की दुआ़ करना :

जिस त़रह़ त़वील दुन्यावी सफ़र पर तन्हा रवाना होते वक़्त उ़मूमन हमारी येह कोशिश होती है कि कम से कम सामान अपने साथ रखें ताकि हमारा सफ़र क़दरे आराम से गुज़रे और हमें ज़ियादा परेशानी का सामना न करना पड़े, बिल्कुल इसी त़रह़ सफ़रे आख़िरत को कामयाबी से त़ै करने की ख़्वाहिश रखने वाले को चाहिये कि रवानगी से क़ब्ल गुनाहों का बोझ अपने कन्धों से उतारने की कोशिश करे कि कहीं येह बोझ उसे थका कर कामयाबी की मन्ज़िल पर पहुंचने से महरूम न कर दे। और इस बोझ से छुटकारे का त़रीक़ा येह है कि बन्दा अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा करे क्यूंकि सच्ची तौबा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देती है जैसे कभी किये ही न थे। जैसा कि सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ "या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है कि गोया उस ने कभी कोई गुनाह किया ही न हो।"

﴾کنز العمال، ج ۴، ص ۹۲، رقم الحدیث ۱۰۲۴۵﴿

www.dawateislami.net

और येह भी ज़ेहन में रहे कि सच्ची तौबा से मुराद येह है कि बन्दा किसी गुनाह को अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी जान कर इस पर नादिम होते हुवे रब عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी त़लब करे और आइन्दा के लिये इस गुनाह से बचने का पुख़्ता इरादा करते हुवे, इस गुनाह के इज़ाले के लिये कोशिश करे, या'नी नमाज़ क़ज़ा की थी तो अब अदा भी करे, चोरी की थी या रिश्वत ली थी तो बा'दे तौबा वोह माल अस्ल मालिक को वापस करे या उस से मुआ़फ़ करवा ले या मालिक न मिलने की सूरत में उस की त़रफ़ से राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दे। **علی هذا القیاس**

﴿ماخوذ من الفتاوٰی الرضویۃ جلد ۱۰ ص ۹۷ النصف الاول﴾

और दुआ़ इस त़रह़ करे

"ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ तेरा येह कमज़ोर व नातुवां बन्दा दुन्या व आख़िरत में कामयाबी के लिये तेरे ख़ौफ़ को अपने दिल में बसाना चाहता है। ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों की ग़लाज़त से लिथड़ा हुवा बदन लिये तेरी पाक बारगाह में ह़ाज़िर हूं। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे और आइन्दा ज़िन्दगी में गुनाहों से बचने के लिये इस सिफ़त को अपनाने के सिलसिले में भरपूर अ़मली कोशिश करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे और इस कोशिश को कामयाबी की मन्ज़िल पर पहुंचा दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने ख़ौफ़ से मा'मूर दिल, रोने वाली आंख और लरज़ने वाला बदन अ़त़ा फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

या रब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम

दीवाना शहनशाहे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बना दे

www.dawateislami.net

﴾2﴿ क़ुरआने अज़ीम और अहादीसे मुबारका में वारिद होने वाले ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल पेशे नज़र रखना :

फ़ित्री तौर पर इन्सान हर उस चीज़ की तरफ़ आसानी से माइल हो जाता है जिस में उसे कोई फ़ाइदा नज़र आए। इस तक़ाज़े के पेशे नज़र हमें चाहिये कि क़ुरआने पाक में बयान कर्दा ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़ दर्जे ज़ैल आयात का बग़ौर मुतालआ़ करें।

﴾दो जन्नतों की बिशारत......﴿

सूरए रह़मान में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वालों के लिये दो जन्नतों की बिशारत सुनाई गई है, चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।* (پ۲۷،الرحمٰن۴٦)

﴾आख़िरत में कामयाबी......﴿

अल्लाह तआ़ला से डरने वालों को आख़िरत में कामयाबी की नवीद सुनाई गई है जैसा कि इरशाद होता है : وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़गारों के लिये है।* (پ۲۵،الزخرف:۳۵)

www.dawateislami.net

﴾जन्नत के बाग़ात.....﴿

अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ अपने दिल में बसाने वालों को जन्नत के बाग़ात और चश्मे अ़ता किये जाएंगे, जैसा कि रब तआ़ला का फ़रमान है : اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में हैं।* (پ۱۴، الحجر: ۴۵)

﴾आख़िरत में अम्न.....﴿

दुन्या में अपने ख़ालिक़ व मालिक عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाले आख़िरत में अम्न की जगह पाएंगे, जैसा कि इरशाद होता है, اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ مَقَامٍ اَمِیْنٍ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं।* (پ۲۵، الدخان: ۵۱)

﴾अल्लाह तआ़ला की ताईद व मदद.....﴿

अल्लाह तआ़ला से डरने वालों को उस की ताईद व मदद ह़ासिल होती है, चुनान्चे, इरशाद होता है,

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِیْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* **अल्लाह**, *उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं।* (پ۱۴، النحل: ۱۲۸)

दूसरे मक़ाम पर है : اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** **अल्लाह** *डर वालों के साथ है।* (پ۲، البقرۃ: ۱۹۴)

मज़ीद एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाता है : وَاللّٰهُ وَلِیُّ الْمُتَّقِیْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और डर वालों का दोस्त* **अल्लाह**। (پ۲۵، الجاثیۃ: ۱۹)

www.dawateislami.net

﴾अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा बन्दे.....﴿

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले ख़ुश नसीब **अल्लाह** तआ़ला का पसन्दीदा बन्दा बनने की सआ़दत ह़ासिल कर लेते हैं, जैसा कि इरशाद होता है: اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَّقِیْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक परहेज़गार,* ***अल्लाह*** *को ख़ुश आते हैं।* (پ۱۰،التوبۃ:۷)

﴾आ'माल की क़बूलिय्यत.....﴿

ख़ौफ़े इलाही आ'माल की क़बूलिय्यत का एक सबब है, जैसा कि इरशाद होता है : اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** ***अल्लाह*** *उसी से क़बूल करता है, जिसे डर है।* (پ۶،المائدۃ:۲۷)

﴾बारगाहे इलाही में मुक़र्रब.....﴿

अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले सआ़दत मन्द उस की बारगाह में मुक़र्रब क़रार पाते हैं, चुनान्चे, इरशाद होता है, اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक* ***अल्लाह*** *के यहां, तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह, जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।* (پ۲۶،الحجرات:۱۳)

﴾उख़रवी कामयाबी का सामान.....﴿

अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दुन्या व आख़िरत में कामयाबी का सामान है, जैसा कि इरशाद होता है,

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ○ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَ فِی الْاٰخِرَةِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं उन्हें ख़ुशख़बरी है, दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।* (پ۱۱،یونس:۶۳، ۶۴)

www.dawateislami.net

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो हुक्म माने* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल का और* ***अल्लाह*** *से डरे और परहेज़गारी करे तो येही लोग कामयाब हैं।* (پ۱۸،النور:۵۲)

मज़ीद एक मक़ाम पर है : ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *फिर हम डर वालों को बचा लेंगे।* (پ۱۶،مریم:۷۲)

﴿जहन्नम से छुटकारा.....﴾

अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ जहन्नम से छुटकारे का ज़रीआ़ है, जैसा कि इरशाद होता है, وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और बहुत जल्द उस से दूर रखा जाएगा, जो सब से बड़ा परहेज़गार।* (پ۳۰،اللیل:۱۷)

﴿ज़रीअ़ए नजात.....﴾

रब तआ़ला का ख़ौफ़ ज़रीअ़ए नजात है।

चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो* ***अल्लाह*** *से डरे* ***अल्लाह*** *उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।* (پ۲۸،الطلاق:۲،۳)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

सुल्ताने मदीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने अक़्दस से निकलने वाले ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल भी मुलाहज़ा हों.....

www.dawateislami.net

﴾उसे अम्न में रखूंगा.....﴿

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ जम्अ़ नहीं करूंगा और न उस के लिये दो अम्न जम्अ़ करूंगा, अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहे तो मैं क़ियामत के दिन उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करूंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से डरता रहे तो मैं बरोज़े क़ियामत उसे अम्न में रखूंगा।"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالی ،ج ۱ ،ص ۴۸۳ ،رقم الحدیث ۷۷۷﴿

﴾हर चीज़ उस से डरती है.....﴿

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो शख़्स **अल्लाह** से डरता है, हर चीज़ उस से डरती है और जो **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी से डरता है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे हर शै से ख़ौफ़ज़दा करता है।"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالی ،ج ۱ ،ص ۴۵۴ ،رقم الحدیث ۹۸۴﴿

﴾जहन्नम से रिहाई.....﴿

सरवरे आ़लम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस मोमिन की आंखों से **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से आंसू निकलता है अगर्चे मख्खी के पर के बराबर हो, फिर उस के चेहरे की गर्मी की वजह से उसे कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जहन्नम पर ह़राम कर देता है।"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالی ،ج ۱ ،ص ۴۹۰ ،رقم الحدیث ۸۰۲﴿

www.dawateislami.net

जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं........

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मोमिन का दिल **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से लरज़ता है तो उस की ख़ताएं इस त़रह़ झड़ती हैं जैसे दरख़्त से उस के पत्ते झड़ते हैं।"

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالٰی ،ج ا ،ص ۴۹۱ ،رقم الحدیث ۸۰۳﴾

उसे आग से निकालो........

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा कि उसे आग से निकालो जिस ने मुझे कभी याद किया हो या किसी मक़ाम में मेरा ख़ौफ़ किया हो।"

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالٰی ،ج ا ،ص ۴۷۰ ،رقم الحدیث ۷۴۰﴾

जिस से वोह डरता है.....

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसे नौजवान के पास तशरीफ़ लाए जो क़रीबुल मर्ग था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "तुम अपने आप को कैसा पाते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे मुआ़फ़ी की उम्मीद भी है और मैं गुनाहों की वजह से **अल्लाह** तआ़ला से डरता भी हूं।" तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐसी ह़ालत में जब भी येह दो बातें जम्अ़ होती हैं तो **अल्लाह** तआ़ला उस की उम्मीद के मुत़ाबिक़ उसे अ़त़ा करता है और उस चीज़ से मह़फ़ूज़ रखता है जिस से वोह डरता है।"

﴿مکاشفۃ القلوب ،ص ۱۹۶﴾

सब्ज़ मोतियों का मह़ल.....

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "**अल्लाह** तआ़ला ने सब्ज़ मोती का एक मह़ल पैदा फ़रमाया है जिस में

www.dawateislami.net

सत्तर हज़ार घर हैं और हर घर में सत्तर हज़ार कमरे हैं। इस में वोह शख़्स दाख़िल होगा जिस के सामने ह़राम पेश किया जाए और वोह महज़ **अल्लाह** के ख़ौफ़ से उसे छोड़ दे।" ﴿ملائفة القلوب ص ۱۰﴾

﴿कामिल अ़क़्ल वाला.....﴾

मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से सब से बढ़ कर कामिल अ़क़्ल वाला वोह है जो रब तआ़ला से ज़ियादा डरने वाला है और तुम में से सब से अच्छा वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के अवामिर व नवाही (या'नी अह़काम) में ज़ियादा ग़ौर करता है।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۱۹۹﴾

﴿अ़र्शे इलाही के साए में.....﴾

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि "सात क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला अपने अ़र्श के साए में उस दिन जगह देगा कि जिस दिन इस साए के सिवा किसी चीज़ का साया न होगा : (1) आ़दिल हुक्मरान। (2) वोह आदमी जिस को किसी मन्सब व जमाल वाली औ़रत ने तन्हाई में अपने पास बुलाया और उस ने जवाब में कहा कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं। (3) वोह शख़्स कि जिस का दिल मस्जिद में लगा रहे। (4) वोह नौजवान जिस ने बचपन में क़ुरआन सीखा और जवानी में भी इस की तिलावत करता हो। (5) वोह आदमी जो छुपा कर सदक़ा करे ह़त्ता कि उस के बाएं हाथ को भी ख़बर न हो कि उस के दाएं हाथ ने कितना ख़र्च किया। (6) वोह शख़्स कि जिस ने तन्हाई में अपने रब عَزَّوَجَلَّ को याद किया और उस की आखों से आंसू निकल गए। (7) वोह आदमी जो अपने भाई से कहे कि मैं तुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

की ख़ातिर महब्बत रखता हूं और दूसरा जवाब दे कि मैं भी रिज़ाए इलाही के लिये तुझ से महब्बत करता हूं।"

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالی ،ج ۱ ،ص۴۸۷ ،رقم الحدیث ۷۹۳﴾

﴾बड़ी घबराहट के दिन अम्न में......﴿

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी वफ़ात से पहले के एक खुत़बे में इरशाद फ़रमाया : " जिस शख़्स ने किसी लौंडी या औरत पर गुनाह की क़ुदरत पाई लेकिन उसे ख़ुदा के ख़ौफ़ के सबब छोड़ दिया तो **अल्लाह** तआ़ला उसे बड़ी घबराहट के दिन में अम्न नसीब करेगा, उस को दोज़ख़ पर ह़राम और जन्नत में दाख़िला अ़ता फ़रमाएगा।" ﴿ذم الھوی ،ص ۱۹۴﴾

प्यारे इस्लामी भाइयो !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे अस्लाफ़े किराम ने भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए हैं जिन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं.....

﴾भलाई की त़रफ़ राहनुमाई....﴿

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला से डरता है तो येह ख़ौफ़ हर भलाई की त़रफ़ उस की राहनुमाई करता है।" ﴿احیاء العلوم ،کتاب الخوف والرجاء ج ۴ ،ص ۱۹۸﴾

﴾ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का फ़ाइदा......﴿

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "जब दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पैदा हो जाए तो उस की शहवात को तोड़ देता है, दुन्या से बे रग़बत कर देता है और ज़बान को ज़िक्रे दुन्या से रोक देता है।" ﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالی ،ج ۱ ،ص ۵۱۳ ،رقم الحدیث ۸۸۶﴾

www.dawateislami.net

हिक्मत का दरवाज़ा.....

ह़ज़रते सय्यिदुना शिब्ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं जिस दिन अल्लाह तआ़ला से डरता हूं, उसी दिन ह़िक्मत व इ़ब्रत का ऐसा दरवाज़ा देखता हूं जो पहले कभी नहीं देखा।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۱۹۸﴾

जन्नत में दाख़िला.....

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "येह कमज़ोर इन्सान अगर जहन्नम से इसी त़रह़ डरे जिस त़रह़ मोह़ताजी से डरता है तो जन्नत में दाख़िल हो।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۱۹۹﴾

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा देता है.....

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "ख़्वाहिशाते नफ़्स हलाकत में डालती हैं और ख़ौफ़े ख़ुदा शिफ़ा देता है। याद रखो ! तुम्हारी ख़्वाहिशाते नफ़्स उसी वक़्त ख़त्म होंगी जब तुम उस से डरोगे जो तुम्हें देख रहा है !" ﴿شعب الایمان، ج ۱ ص ۵۱۱ رقم الحدیث ۸۷۶﴾

दिल को ख़ाली कर लो.....

ख़लीफ़ा मामून रशीद, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ुसूले नसीह़त की ग़रज़ से ह़ाज़िर हुवा तो आप ने फ़रमाया कि "अपने दिल को ग़म और ख़ौफ़ के लिये ख़ाली कर लो, येह तुम्हें अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी से बचाएंगे और अ़ज़ाबे जहन्नम से छुटकारा दिलाएंगे।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱ ص ۵۱۴ رقم الحدیث ۸۸۸﴾

www.dawateislami.net

﴾इन से बेहतर साथी कोई नहीं......﴿

हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किसी बुज़ुर्ग को फ़रमाते सुना कि "बन्दे के लिये ग़म और ख़ौफ़ से बेहतर साथी कोई नहीं, ग़म उस चीज़ का कि पिछले गुनाहों का क्या बनेगा ? और ख़ौफ़ इस बात का कि बन्दा नहीं जानता कि उस का ठिकाना कहां होगा ?"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج ۱ ،ص۵۱۵ ،رقم الحدیث ۸۹۵﴿

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

﴾3﴿ अपनी कमज़ोरी व नातुवानी को सामने रख कर जहन्नम के अ़ज़ाबात पर ग़ौरो तफ़क्कुर करना :

अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ बेदार करने के सिलसिले में तीसरा तरीक़ा येह है कि इन्सान जहन्नम के अ़ज़ाबात को पेशे नज़र रखते हुवे अपनी नातुवानी पर ग़ौर करे । जहन्नम के अ़ज़ाबात की मा'रिफ़त के सिलसिले में ज़ैल की रिवायात का मुतालआ़ नफ़्अ़ बख़्श साबित होगा । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

﴾1﴿ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी येह आग जिसे इब्ने आदम रोशन करता है, जहन्नम की आग से सत्तर दरजे कम है ।" येह सुन कर सहाबए किराम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ) ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जलाने के लिये तो येही काफ़ी है ?" इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"वोह इस से उनहत्तर (69) दरजे ज़ियादा है, हर दरजे में यहां की आग के बराबर गरमी है।" ﴿صحیح مسلم، باب فی شدۃ حر نار جہنم، ص ۱۱۹۷، رقم ۲۸۷۳﴾

﴿2﴾ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दोज़ख़ की आग हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि सुर्ख़ (लाल) हो गई, फिर हज़ार साल तक भड़काई गई यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल तक भड़काई गई, यहां तक कि सियाह (काली) हो गई, पस अब वोह निहायत सियाह है।" ﴿جامع الترمذی، کتاب صفۃ الجہنم، جلد ۴، ص ۲۶۶، رقم الحدیث ۲۶۰۰﴾

﴿3﴾ हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी येह आग, दोज़ख़ की आग का सत्तरवां हिस्सा है, अगर येह दोबारा न बुझाई जाती तुम इस से नफ़्अ़ न उठा सकते थे, अब येह आग ख़ुद अल्लाह तआ़ला से इल्तिजा करती है कि इसे दोबारा जहन्नम में न लौटाया जाए।" ﴿سنن ابن ماجہ، جلد ۴، ص ۵۲۸، رقم الحدیث ۴۳۱۸﴾

﴿4﴾ हज़रते समरा बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "दोज़ख़ियों में बा'ज़ लोग वोह होंगे जिन के टख़्नों तक आग होगी और बा'ज़ लोग वोह होंगे जिन के ज़ानूओं तक आग के शो'ले पहुंचेंगे और बा'ज़ वोह होंगे जिन के कमर तक होगी और बा'ज़ लोग वोह होंगे जिन के गले तक आग के शो'ले होंगे।" ﴿صحیح مسلم، باب صفۃ النار، ص ۱۱۹۷، رقم الحدیث ۲۸۴۵﴾

www.dawateislami.net

﴿5﴾ ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "उस ज़र्द (पीला) पानी का एक डोल जो दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से जारी होगा दुन्या में डाल दिया जाए तो दुन्या वाले बदबूदार हो जाएं।"

﴿ترمذی، کتاب صفة الجہنم، جلد ۴، ص ۲۶۳، رقم الحدیث ۲۵۹۴﴾

﴿6﴾ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन जज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "दोज़ख़ में बख़्ती ऊंट के बराबर सांप हैं, येह सांप एक मरतबा किसी को काटे तो उस का दर्द और ज़हर चालीस बरस तक रहेगा और दोज़ख़ में पालान बन्धे हुवे ख़च्चरों के मिस्ल बिच्छू हैं तो उन के एक मरतबा काटने का दर्द चालीस साल तक रहेगा।"

﴿مشکوۃ المصابیح، باب صفة النار واھلھا، جلد ۳، ص ۲۴۰، رقم الحدیث ۵۶۹۳﴾

﴿7﴾ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "दोज़ख़ में सिर्फ़ बद नसीब दाख़िल होगा।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बद नसीब कौन है ?" फ़रमाया : "वोह शख़्स बद नसीब है जिस ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये उस की इत़ाअ़त नहीं की और अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त के लिये गुनाह को नहीं छोड़ा।"

﴿مشکوۃ المصابیح، باب صفة النار واھلھا، جلد ۳، ص ۲۴۰، رقم الحدیث ۵۶۹۳﴾

﴿8﴾ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "दोज़ख़ियों में सब से हलका अ़ज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा।" ﴿صحیح البخاری، باب صفة الجنة والنار، ص ۱۱۶۵، رقم الحدیث ۶۵۶۱﴾

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो !

इन अ़ज़ाबात को पेशे नज़र रखते हुवे अपने बदन की कमज़ोरी और नातुवानी पर ज़रा ग़ौर फ़रमाइये कि हमारे जिस्म का हर एक उ़ज़्व किस क़दर नाज़ुक है। **मसलन**....

हमारी आंखें जो आ़म ह़ालात में हमें काफ़ी दूर तक के मनाज़िर दिखा देती हैं, अगर हम कभी धूप से उठ कर अचानक किसी कमरे में चले जाएं तो येह इतना बे बस हो जाती हैं कि बिल्कुल क़रीब की चीज़ भी नहीं देख पातीं। इसी त़रह़ कभी रैत वग़ैरा का हल्का सा ज़र्रा इन में पड़ जाए तो इस के सबब होने वाली चुभन हमारे पूरे वुजूद को तड़पा कर रख देती है।.....

हमारे कान इस क़दर नाज़ुक हैं कि अगर इन में छोटा सा कीड़ा घुस जाए, या इन में वरम वग़ैरा हो जाए तो इस की तक्लीफ़ से हमारी रातों की नींद बरबाद हो जाती है।.....

हमारी ज़बान जिस की मदद से हम मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चट पटी और दीगर अश्या अपने मे'दे में उतारते हैं, और मुसलसल बोल बोल कर बा'ज़ अवक़ात दूसरों को कोफ़्त तक में मुब्तला कर देते हैं, अगर कभी अन्जाने में हम कोई इन्तिहाई गर्म चीज़ खा बैठें तो इस की ह़रारत नाक़ाबिले बरदाश्त होने की वजह से इस ज़बान पर छाले पड़ जाते हैं, चुनान्चे, हम कई दिन तक न तो कोई ठोस और मिर्चदार चीज़ खा पाते हैं और न ही किसी से इत़मीनान से गुफ़्तगू कर सकते हैं।

हमारे पाउं जिन के ज़रीए़ हम रोज़ाना त़वील फ़ासिला त़ै करते हैं, अगर येह भूले से किसी गर्म अंगारे पर जा पड़ें या किसी वजह से ज़ख़्मी हो जाएं तो हमारा चलना फिरना दुश्वार हो जाता है। .....

www.dawateislami.net

हमारे हाथ जिन की मदद से हम कपड़े पहनने, खाना खाने, लिखने, ड्राइविंग और दीगर काम सर अन्जाम देते हैं, अगर इन पर ज़रा सी ख़राश आ जाए या फुन्सी वग़ैरा हो जाए तो हमें कितनी दिक़्क़त का सामना करना पड़ता है ?....﴿علیٰ ھذا القیاس﴾

बल्कि हमारा पूरा वुजूद ही इन्तिहाई नाज़ुक और ह़स्सास है कि अगर इस का दरजए ह़रारत मा'मूली सा बढ़ जाए, या हमारे सर में हल्का सा दर्द हो जाए तो हम बिस्तर से लग जाते हैं, इसी त़रह़ हमारी रगों में दौड़ने वाले ख़ून की रफ़्तार में ज़रा सी कमी व बेशी हो जाए तो ब्लड प्रेशर के इस मरज़ के नतीजे में हमारे रोज़ मर्रा के मा'मूलात बेह़द मुतअस्सिर होते हैं, और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई हमारे सीने में ख़न्जर या पिस्तोल की गोलियां उतार दे...या...बिलफ़र्ज़ कोई गाड़ी हमें कुचल डाले तो तक्लीफ़ की शिद्दत से पहले तो हम बेहोश हो जाएं और फिर ग़ालिबन हमारी लाश ही देखने को मिले।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये कि येह तो दुन्या में लाह़िक़ होने वाली तकालीफ़ की चन्द मिसालें थीं, लेकिन ज़रा तसव्वुर कीजिये कि अगर हमें जहन्नम में डाल दिया गया तो हमारा येह नर्म व नाज़ुक बदन उस के हौलनाक अ़ज़ाबात को किस त़रह़ बरदाश्त कर पाएगा ? ह़ालांकि येह तो इतना कमज़ोर है कि किसी तक्लीफ़ की शिद्दत जब अपनी इन्तिहा को पहुंचती है तो येह बेहोश हो जाता है या फिर बे ह़िसो ह़रकत हो जाता है। जब कि जहन्नम में पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिद्दत के सबब इन्सान पर न तो बेहोशी त़ारी होगी और न ही उसे मौत आएगी। आह ! वोह वक़्त कितनी बेबसी का होगा जिस का तसव्वुर करते ही हमारे रौंगटे

www.dawateislami.net

खड़े हो जाते हैं । क्या येह रोने का मक़ाम नहीं ? क्या अब भी हमारी आंखों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ के सबब आंसू नहीं निकलेंगे ? क्या अब भी हमारे दिल में नेकियों की महब्बत नहीं बढ़ेगी ? क्या अब भी हमें गुनाहों से वहशत महसूस नहीं होगी ? आह ! अगर रहमते ख़ुदावन्दी शामिले हाल न हुई तो हमारा क्या बनेगा ?.....

मुनाजात

या इलाही عَزَّوَجَلَّ हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा ﷺ का साथ हो

या इलाही عَزَّوَجَلَّ भूल जाऊं नज़्अ़ की तक्लीफ़ को
शादिये दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा ﷺ का साथ हो

या इलाही عَزَّوَجَلَّ गोरे तीरा की जब आए सख़्त रात
उन ﷺ के प्यारे मुंह की सुब्हे जां फ़िज़ा का साथ हो

या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहिबे कौसर, शहे जूदो अ़ता ﷺ का साथ हो

या इलाही عَزَّوَجَلَّ गर्मिये महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब ﷺ की ठन्डी हवा का साथ हो

या इलाही عَزَّوَجَلَّ नामए आ'माल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क़, सत्तारे ख़ता ﷺ का साथ हो

या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब बहें आखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ का साथ हो

www.dawateislami.net

या इलाही عَزَّوَجَلَّ रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो
या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात़
आफ़्ताबे हाशिमी, नूरुल हुदा ﷺ का साथ हो
या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा ﷺ का साथ हो
या इलाही عَزَّوَجَلَّ जो दुआ़ए नेक मैं तुझ से करूं
कुदसियों के लब से "आमीं रब्बना" का साथ हो
या इलाही عَزَّوَجَلَّ जब "रज़ा" ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदार इश्क़े मुस्त़फ़ा ﷺ का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, अज़ : इमाम अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)

﴾4﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले से अस्लाफ़ के ह़ालात का मुत़ालआ़ करना :

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ अपनाने में मुआ़विन उमूर में से एक येह भी है कि अस्लाफ़े किराम के उन वाक़िआ़त का मुत़ालआ़ किया जाए, जिन में ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ का पहलू नुमायां हो। चुनान्चे, ज़ैल में सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, फ़िरिश्तों, ख़ुलफ़ाए राशिदीन व दीगर सह़ाबए किराम, अहले बैते अत़्हार, ताबेईने किराम, फ़ुक़हाए इस्लाम, मुह़द्दिसीने उ़ज़्ज़ाम, उ़-लमा व औलिया वग़ैरहुम (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के मुन्तख़ब वाक़िआ़त पेश किये गए हैं.....

www.dawateislami.net

﴾1﴿ ﴾क़ब्र की तय्यारी करो.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्र के किनारे बैठे और इतना रोए कि आप की चश्माने अक़्दस से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम हो गई। फिर फ़रमाया : "ऐ भाइयो ! इस क़ब्र के लिये तय्यारी करो।"

﴾سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد والبکاء، ج ۴، ص ۴۶۶، رقم الحدیث ۴۱۹۵﴿

﴾2﴿ ﴾बादलों में कहीं अ़ज़ाब न हो....﴿

ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि जब रसूले अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तेज़ आंधी को मुलाह़ज़ा फ़रमाते और जब बादल आस्मान पर छा जाते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस का रंग मुतग़य्यिर हो जाता और आप कभी हुजरे से बाहर तशरीफ़ ले जाते और कभी वापस आ जाते, फिर जब बारिश हो जाती तो येह कैफ़िय्यत ख़त्म हो जाती। मैं ने इस की वजह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ आइशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) मुझे येह ख़ौफ़ हुवा कि कहीं येह बादल, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब न हो जो मेरी उम्मत पर भेजा गया हो।"

﴾شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱، ص ۴۶۵، رقم الحدیث ۹۹۴﴿

﴾3﴿ ﴾जहन्नम की आग आंसू ही बुझा सकते हैं....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं और मेरे साथ ह़ज़रते इब्ने उ़मर और ह़ज़रते उ़बैद बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे

www.dawateislami.net

और अ़र्ज़ की, कि "हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में कोई बात बताइये।" तो आप रो पड़ीं और फ़रमाया : "एक रात रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे : "मुझे रुख़्सत दो कि मैं रब तआ़ला की इ़बादत कर लूं।" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "मुझे आप का रब तआ़ला के क़रीब होना अपनी ख़्वाहिश से ज़ियादा अ़ज़ीज़ है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर के एक कोने में खड़े हो गए और रोने लगे। फिर वुज़ू कर के क़ुरआने पाक पढ़ना शुरूअ़ किया तो दोबारा रोना शुरूअ़ कर दिया यहां तक कि आप की चश्माने मुबारक से निकलने वाले आंसू ज़मीन तक जा पहुंचे। इतने में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ाज़िर हुवे तो आप को रोते देख कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप क्यूं रो रहे हैं ? ह़ालांकि आप के सबब तो अगलों और पिछलों के गुनाह बख़्शे जाते हैं ?" तो इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?" और मुझे रोने से कौन रोक सकता है जब कि **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई है :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ۝ الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ۔

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन की बाहम बदलियों में निशानियां हैं अ़क़्ल मन्दों के लिये, जो* **अल्लाह** *की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं, ऐ रब हमारे तू ने येह बेकार न बनाया, पाकी है तुझे, तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।* (پ۴، اٰل عمران ۱۹۰، ۱۹۱)

www.dawateislami.net

(फिर फ़रमाया) : "ऐ बिलाल ! जहन्नम की आग को आंख के आंसू ही बुझा सकते हैं, उन लोगों के लिये हलाकत है कि जो येह आयत पढ़ें और इस में ग़ौर न करें।"

﴿درة الناصحين، المجلس الخامس والستون، ص ۲۹۴﴾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा

रो रो के मुस्तफ़ा ﷺ ने दरया बहा दिये हैं

﴿4﴾ ﴿एक मील तक आवाज़ सुनाई देती.....﴾

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते कि एक मील के फ़ासिले से इन के सीने में होने वाली गिड़ गिड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۴﴾

﴿5﴾ ﴿तीस हज़ार लोग इन्तिक़ाल कर गए..﴾

एक दिन हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام लोगों को नसीहत करने और ख़ौफ़े ख़ुदा दिलाने के लिये घर से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप के बयान में उस वक़्त चालीस हज़ार लोग मौजूद थे। जिन पर आप के पुर असर बयान की वजह से ऐसी रिक़्क़त तारी हुई कि तीस हज़ार लोग ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ताब न ला सके और इन्तिक़ाल कर गए।

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۴﴾

www.dawateislami.net

﴾6﴿ ﴾मुसलसल बहने वाले आंसू.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो (ख़ौफ़े ख़ुदा से) इस क़दर रोते कि दरख़्त और मिट्टी के ढेले भी आप के साथ रोने लगते ह़त्ता कि आप के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام भी आप को देख कर रोने लगते यहां तक कि बेहोश हो जाते। आप इसी त़रह़ मुसलसल आंसू बहाते रहते यहां तक कि इन मुसलसल बहने वाले आंसूओं के सबब आप के रुख़्सारे मुबारक पर ज़ख़्म हो गए। येह देख कर आप की वालिदए माजिदा ने आप के रुख़्सारों पर ऊनी पट्टियां चिपटा दीं। इस के बावुजूद जब आप दोबारा नमाज़ के लिये ख़ड़े होते तो फिर रोना शुरूअ़ कर देते, जिस के नतीजे में वोह रूई की पट्टियां भीग जातीं। जब आप की वालिदा इन्हें ख़ुश्क करने के लिये निचोड़तीं और आप अपने आंसूओं के पानी को अपनी मां के बाज़ू पर गिरता हुवा देखते तो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह मेरे आंसू हैं, येह मेरी मां है और मैं तेरा बन्दा हूं जब कि तू सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाला है।" ﴾احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۵﴿

﴾7﴿ ﴾किसी ने आंख खोलते नहीं देखा.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से इतना रोते थे कि मुसलसल रोने की वजह से आप की अकसर बीनाई रुख़्सत हो गई। लोगों ने अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह (عَلَيْهِ السَّلَام) आप इतना क्यूं रोए कि आप की अकसर बीनाई जाती रही ?" इरशाद फ़रमाया : "दो बातों के सबब (1) कहीं मेरी नज़र ऐसी चीज़ पर न जा पड़े जिसे देखने से शरीअ़त

www.dawateislami.net

ने मन्अ़ फ़रमाया है। (2) जो आंखें अपने रब عَزَّوَجَلَّ का जल्वा देखना चाहती हैं, मैं नहीं चाहता कि वोह किसी और चीज़ को भी देखे, लिहाज़ा मैं ने मुनासिब ख़याल किया कि नाबीना की त़रह़ हो जाऊं और जब क़ियामत में मेरी आंख खुले तो फ़ौरन मेरी नज़र अपने रब तआ़ला का दीदार करे।" इस के बा'द आप साठ बरस ह़याते ज़ाहिरी से मुत्तसिफ़ रहे लेकिन किसी ने इन्हें आंख खोलते नहीं देखा।

(**रिसाला :** कुफ़्ले मदीना, **अज़ :** अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

﴾8﴿ ﴿उन के पहलू लरज़ रहे हैं.....﴾

सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के कुछ फ़िरिश्ते ऐसे हैं जिन के पहलू उस के ख़ौफ़ की वजह से लरज़ते रहते हैं, उन की आंख से गिरने वाले हर आंसू से एक फ़िरिश्ता पैदा होता है, जो खड़े हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करना शुरूअ़ कर देता है।" ﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱ ص ۵۲۱، رقم الحدیث ۹۱۴﴾

﴾9﴿ ﴿तुम क्यूं रोते हो ?.....﴾

नबिय्ये मोह़तरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को देखा कि वोह रो रहे हैं तो आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) तुम क्यूं रोते हो ? ह़ालांकि तुम बुलन्द तरीन मक़ाम पर फ़ाइज़ हो।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मैं क्यूं न रोऊं कि मैं रोने का ज़ियादा ह़क़दार हूं कि कहीं मैं **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म में अपने मौजूदा ह़ाल के इ़लावा किसी दूसरे ह़ाल में न होऊं और मैं नहीं जानता कि कहीं इब्लीस की त़रह़ मुझ पर इब्तिला न आ जाए कि वोह भी फ़िरिश्तों में रहता था और मैं नहीं जानता कि मुझ पर कहीं हारूत व मारूत

www.dawateislami.net

की तरह आज़माइश न आ जाए।" येह सुन कर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोने लगे। येह दोनों रोते रहे यहां तक कि निदा दी गई : "ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) और ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह तआ़ला ने तुम दोनों को नाफ़रमानी से महफ़ूज़ फ़रमा दिया है।" फिर हज़रते जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) चले गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले आए। ﴿مکاشفۃ القلوب، ص ۳۱۷﴾

﴿10﴾ ﴿कांप रहे होते.....﴾

ताजदारे हरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام जब भी मेरे पास आए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वजह से कांप रहे होते।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۳﴾

﴿11﴾ ﴿तुम इसी हालत पर रहना.....﴾

मन्क़ूल है कि जब इब्लीस के मर्दूद होने का वाक़िआ़ हुवा तो हज़रते जिब्राईल और हज़रते मीकाईल (علیہما السلام) रोने लगे तो रब तआ़ला ने दरयाफ़्त किया कि "तुम क्यूं रोते हो?" उन्हों ने अ़र्ज़ की, "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ हम तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं हैं।" रब तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : "तुम इसी हालत पर रहना (या'नी कभी मुझ से बे ख़ौफ़ मत होना)।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۳﴾

﴿12﴾ ﴿दिल उड़ने लगे.....﴾

हज़रते मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि "जब आग को पैदा किया गया तो फ़िरिश्तों के दिल अपनी जगह से उड़ने लगे फिर जब इन्सानों को पैदा किया गया तो वापस आ गए।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۳﴾

www.dawateislami.net

﴾13﴿ ﴾जहन्नम में न डाल दिया जाऊं !.... ﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام एक मरतबा बारगाहे रिसालत में रोते हुवे ह़ाज़िर हुवे तो रह़मते दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त किया : "ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) तुम्हें किस चीज़ ने रुला दिया ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जब से **अल्लाह** तआ़ला ने जहन्नम को पैदा फ़रमाया है, मेरी आंखें उस वक़्त से कभी इस ख़ौफ़ के सबब ख़ुश्क नहीं हुईं कि मुझ से कहीं कोई नाफ़रमानी न हो जाए और मैं जहन्नम में डाल दिया जाऊं !"

﴾شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱ ص ۵۲۱، رقم الحدیث ۹۱۵﴿

﴾14﴿ ﴾सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام की गिर्या व ज़ारी....﴿

मन्क़ूल है कि इब्लीस (या'नी शैत़ान) ने अस्सी हज़ार साल इ़बादत में गुज़ारे और एक क़दम के बराबर भी कोई जगह न छोड़ी जिस पर उस ने सजदा न किया हो । फिर जब उस ने रब तआ़ला की हुक्म उ़दूली की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे अपनी बारगाह से मर्दूद कर दिया, क़ियामत तक के लिये उस के गले में ला'नत का त़ौक़ डाल दिया गया, उस की सारी इ़बादत ज़ाएअ़ हो गई और उसे हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में जलने की सज़ा दे दी गई ।

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है कि आप ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को देखा कि इब्लीस के अन्जाम से इ़ब्रत गीर हो कर का'बए मुशर्रफ़ा के पर्दे से लिपट कर निहायत गिर्या व ज़ारी के साथ **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में येह दुआ़ कर रहे हैं :

www.dawateislami.net

اِلٰهِی وَسَیِّدِی لَا تُغَیِّرْ اِسْمِی وَلَا تُبَدِّلْ جِسْمِی या'नी ऐ मेरे अल्लाह ! ऐ मेरे मालिक ! कहीं मेरा नाम नेकों की फ़ेहरिस्त से न निकाल देना और कहीं मेरा जिस्म अहले अ़ता के ज़ुमरे से निकाल कर अहले इ़ताब के गुरौह में शामिल न फ़रमा देना। ﴿منہاج العابدین، ص ۱۵۸﴾

﴿15﴾ ﴿हंसते हुवे नहीं देखा.....﴾

सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से दरयाफ़्त किया कि "क्या वजह है कि मैं ने कभी मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام को हंसते हुवे नहीं देखा ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जब से जहन्नम को पैदा किया गया, ह़ज़रते मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام नहीं हंसे।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۳﴾

﴿16﴾ ﴿काश ! मैं एक परन्दा होता.....﴾

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक परन्दे को दरख़्त पर बैठा देखा तो फ़रमाया : "बहुत ख़ूब ऐ परन्दे ! तू खाता पीता है लेकिन तुझ पर ह़िसाब नहीं, ऐ काश ! मैं तेरी त़रह़ होता और मुझे इन्सान न बनाया जाता।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج ۱، ص ۴۸۵، رقم الحدیث ۷۸۸﴾

﴿17﴾ ﴿अफ़्सोस ! तू ने मुझे हलाक कर दिया !...﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक ग़ुलाम था जो अकसर आप की ख़िदमत में हदाया (या'नी तोह़फ़े) पेश किया करता था। एक रात वोह आप के लिये कोई खाने की चीज़ लाया, जिसे आप ने खा लिया। ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : "आप रोज़ाना मुझ से पूछते हैं कि येह चीज़ कहां से लाए, लेकिन आज दरयाफ़्त नहीं फ़रमाया ?" आप ने इरशाद फ़रमाया कि "शिद्दते भूक की वजह से याद न रहा, (अब बताओ)

www.dawateislami.net

तुम येह चीज़ कहां से लाए ?" उस ने जवाब दिया कि मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में मन्तर से किसी का इलाज किया था जिस पर उन्हों ने मुझे मुआ़वज़ा देने का वा'दा किया था। आज जब मैं उन के क़रीब से गुज़रा तो उन्हों ने मुझे बत़ौरे मुआ़वज़ा येह खाना दिया।"

येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अफ़्सोस ! तू ने मुझे हलाक कर दिया !" फिर आप ने अपने ह़ल्क़ में हाथ डाला ताकि क़ै कर सकें लेकिन वोह शै जिसे आप ने खाली पेट खाया था, न निकल सकी। आप को बताया गया कि पानी पिये बिग़ैर येह लुक़्मा नहीं निकलेगा। चुनान्चे, आप ने पानी का पियाला मंगवाया और मुसलसल पानी पीते रहे और उस लुक़्मे को निकालने की कोशिश करते रहे (ह़त्ता कि उस में कामयाब हो गए)। जब आप से अ़र्ज़ की गई कि "अल्लाह तआ़ला आप पर रह़्म फ़रमाए ! आप ने एक लुक़्मे की वजह से इतनी तक्लीफ़ उठाई ?" तो इरशाद फ़रमाया : "मैं ने सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि जिस्म का जो ह़िस्सा माले ह़राम से बना है, वोह दोज़ख़ का ज़ियादा ह़क़दार है, तो मुझे ख़ौफ़ हुवा कि वोह लुक़्मा कहीं मेरे बदन का ह़िस्सा न बन जाए।"

﴿حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، ج ۱، ص ۳۷، رقم الحدیث ۴۱﴾

﴿18﴾ ﴿रोने की आवाज़.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "मैं ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे नमाज़ पढ़ी तो देखा कि तीन सफ़ों तक उन के रोने की आवाज़ पहुंच रही थी।"

﴿حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، ج ۱ ص ۸۹، رقم الحدیث ۱۴۱﴾

www.dawateislami.net

﴾19﴿ ﴾सुवारी से गिर पड़े.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी आयते अ़ज़ाब को सुनते तो ग़श खा कर गिर पड़ते और इतना बीमार हो जाते कि आप के साथी आप की इ़यादत के लिये जाया करते थे। आप के चेहरए मुबारक पर कसरत से आंसू बहाने के सबब दो लकीरें बन गई थीं। आप फ़रमाया करते थे : " काश ! मेरी मां ने मुझे न जना होता।" एक दिन आप कहीं से गुज़र रहे थे कि येह आयत सुनी.....

اِنَّ عَذَابَ رَبِّکَ لَوَاقِعٌ○مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है, उसे कोई टालने वाला नहीं।* {پ۲۷، الطّور ۷، ۸}

तो आप पर ग़शी की कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और आप सुवारी से गिर पड़े, लोग आप को घर ले आए। फिर आप एक महीने तक घर से बाहर न निकल सके। ﴾درة الناصحین، المجلس الخامس والستون، ص۲۹۳﴿

﴾20﴿ ﴾कोड़ों के निशानात.....﴿

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक रजिस्टर था जिस में वोह अपने हफ़्तावार आ'माल लिखा करते थे। जब जुमुआ़ का दिन आता तो वोह अपने आ'माल का जाइज़ा लेते और जिस अ़मल को (अपने गुमान में) रिज़ाए इलाही के लिये न पाते तो खुद को दुर्रा मारते और फ़रमाते : "तुम ने येह काम क्यूं किया ?" जब आप का विसाल हो गया और लोग आप को ग़ुस्ल देने लगे तो देखा कि आप की पीठ और पहलूओं पर कोड़ों के निशानात थे।

﴾درة الناصحین، المجلس الخامس والستون، ص۲۹۳﴿

www.dawateislami.net

﴾21﴿ ﴾काश ! मेरी मां ने मुझ को न जना होता...﴿

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा ज़मीन से एक तिन्का उठाया और फ़रमाया : "काश ! मैं येह तिन्का होता, काश ! मेरा ज़िक्र न होता, काश ! मुझे भुला दिया गया होता, काश ! मेरी मां मुझे न जनती ।"

﴾احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۶﴿

﴾22﴿ ﴾बेहोश हो कर गिर पड़े........﴿

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : "जो **अल्लाह** तआ़ला से डरता है वोह ग़ुस्सा नहीं दिखाता और जो **अल्लाह** तआ़ला के हां तक़्वा इख़्तियार करता है वोह अपनी मरज़ी नहीं करता और अगर क़ियामत न होती तो हम कुछ और देखते ।" आप ने एक मरतबा येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : اِذَا الشَّمْسُ کُوِّرَتْO ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान*** : *जब धूप लपेटी जाए ।"* (پ۳۰، التکویر۱)

फिर जब इस आयत पर पहुंचे : وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْO ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान*** : *और जब नामए आ'माल खोले जाएंगे ।* (پ۳۰، التکویر۱۰) तो बेहोश हो कर गिर पड़े । ﴾احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۶﴿

﴾23﴿ ﴾आगे न पढ़ सके......﴿

हज़रते उ़बैद बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हमें हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और सूरए यूसुफ़ की क़िराअत की, जब इस आयत पर पहुंचे :

وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌO ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान*** : *और उस की आंखें ग़म से सफ़ेद हो गईं तो वोह ग़ुस्सा खाता रहा ।* (پ۱۳، یوسف۸۴)

तो रोने लगे और ख़ौफ़े ख़ुदा के ग़लबे की वजह से आगे न पढ़ सके और रुकूअ़ कर दिया । ﴾کنز العمال ج۱۲،ص۲۶۴، رقم الحدیث۳۵۸۲۸﴿

www.dawateislami.net

﴾24﴿ ﴾अगर तू ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ न रखा...﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक बाग़ की दीवार के पास देखा कि वोह अपने आप से फ़रमा रहे थे : "वाह ! लोग तुझे अमीरुल मोमिनीन कहते हैं (फिर बत़ौरे आ़जिज़ी फ़रमाने लगे) और तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता, अगर तू ने रब तआ़ला का ख़ौफ़ न रखा तो उस के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा ।" ﴾کیمیائے سعادت ج ۲ ص ۸۹۲﴿

﴾25﴿ ﴾क़ब्र का मन्ज़र सब मनाज़िर से हौलनाक है....﴿

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी की क़ब्र पर तशरीफ़ ले जाते तो इस क़दर रोते कि आप की दाढ़ी मुबारक आंसूओं से तर हो जाती । आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : "जन्नत और दोज़ख़ के तज़किरे पर आप इतना नहीं रोते जितना कि क़ब्र पर रोते हैं ?" तो इरशाद फ़रमाया : "मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि "क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल है, अगर साह़िबे क़ब्र ने इस से नजात पा ली तो बा'द (या'नी क़ियामत) का मुआ़मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है ।" फिर फ़रमाया : "क़ब्र का मन्ज़र सब मनाज़िर से ज़ियादा हौलनाक है ।" ﴾جامع الترمذی ،باب ماجاء فی ذکر الموت ، رقم الحدیث ۲۳۱۵ ، ج ۴ ، ص ۱۳۸﴿

﴾26﴿ ﴾मरने के बा'द न उठाया जाए.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी ख़्वाहिश है कि मुझे मरने के बा'द न उठाया जाए ।"

﴾احیاء العلوم ، کتاب الخوف والرجاء ج ۴ ، ص ۲۲۶﴿

www.dawateislami.net

﴾27﴿ ﴾ राख हो जाना पसन्द करूंगा.....﴿

इसी त़रह़ एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर मुझे जन्नत और जहन्नम के दरमियान लाया जाए और येह मा'लूम न हो कि मुझे दोनों में से किस में डाला जाएगा ? तो मैं वहीं राख हो जाना पसन्द करूंगा ।"

﴾حلیۃ الاولیاء ، ذکر الصحابۃ من المہاجرین ، ج ۱ ، ص ۹۹ ، رقم الحدیث ۱۸۲﴿

﴾28﴿ ﴾ मैं तुझे तीन त़लाक़ दे चुका हूं.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़रार किनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि, "मैं ख़ुदा को गवाह बना कर कहता हूं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कई मरतबा देखा, उस वक़्त कि जब रात की तारीकी छा रही होती, सितारे टिमटिमा रहे होते और आप अपने मेह़राब में लरजां व तरसां अपनी दाढ़ी मुबारक थामे हुवे ऐसे बेचैन बैठे होते कि गोया ज़हरीले सांप ने डस लिया हो । आप ग़म के मारों की त़रह़ रोते और बे इख़्तियार हो कर "ऐ मेरे रब ! ऐ मेरे रब !" पुकारते, फिर दुन्या से मुख़ात़ब हो कर फ़रमाते, "तू मुझे धोके में डालने के लिये आई है ? मेरे लिये बन संवर कर आई है ? दूर हो जा ! किसी और को धोका देना, मैं तुझे तीन त़लाक़ दे चुका हूं, तेरी उ़म्र कम है और तेरी मह़फ़िल ह़क़ीर जब कि तेरे मसाइब झेलना आसान हैं, आह सद आह ! ज़ादे राह की कमी है और सफ़र त़वील है जब कि रास्ता वह़शत से भरपूर है ।"

﴾حلیۃ الاولیاء ، ذکر الصحابۃ من المہاجرین ، ج ۱ ، ص ۸۵﴿

www.dawateislami.net

﴾29﴿ ﴾ उन जैसा नज़र नही आता.....﴿

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मरतबा फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई, आप उस वक़्त ग़मगीन थे और अपना हाथ उलट पलट कर रहे थे फिर फ़रमाने लगे कि "मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को देखा है लेकिन आज उन जैसा कोई नज़र नहीं आता। उन की सुब्ह़ इस ह़ाल में होती थी कि बाल बिखरे होते, रंग ज़र्द होता, चेहरे पर गर्दो ग़ुबार होता, उन की आंखों की दरमियानी जगह बकरियों की रानों की त़रह़ होती, उन की रातें **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में क़ियाम और सजदे में गुज़रतीं, वोह क़ुरआने पाक की तिलावत करते, अपनी पेशानी और पाउं पर बारी बारी ज़ोर डालते। सुब्ह़ हो जाती तो **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करते हुवे इस त़रह़ कांपते, जिस त़रह़ हवा के साथ दरख़्त के पत्ते हिलते हैं और उन की आंखों से इतने आंसू बहते कि उन के कपड़े तर हो जाते।"

फिर फ़रमाने लगे : "**अल्लाह** की क़सम ! मैं गोया ऐसी क़ौम के साथ हूं जो ग़फ़्लत में रात गुज़ारते हैं।" इतना कह कर आप खड़े हो गए और इस के बा'द किसी ने आप को हंसते हुवे नहीं देखा यहां तक कि इब्ने मुलजम ने आप को शहीद कर दिया।

﴾احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۶﴿

﴾30﴿ ﴾ भूली बिसरी हो जाऊं.....﴿

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "मैं चाहती हूं कि मैं भूली बिसरी हो जाऊं।"

﴾شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج۱، ص۴۸۶، رقم الحدیث ۷۹۱﴿

www.dawateislami.net

﴾31﴿ ﴾काश ! मैं एक दरख़्त होता.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि मैं एक दरख़्त होता जिसे काटा जाता ।"

﴾احیاء العلوم ، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۶﴿

﴾32﴿ ﴾हवा मुझे बिखेर दे.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरी ख़्वाहिश है कि मैं राख बन जाऊं और सख़्त आंधी के दिन हवा मेरे अजज़ा को बिखेर दे ।" ﴾احیاء العلوم ، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۲۶﴿

﴾33﴿ ﴾काश ! मैं मेंढ़ा होता.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "काश ! मैं मेंढ़ा होता और मेरे घर वाले मुझे ज़ब्ह़ कर देते फिर मेरा गोश्त खा लेते और शोरबा पीते ।"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج ۱ ص ۴۸۶،رقم الحدیث ۷۹۰﴿

﴾34﴿ ﴾आह ! मैं इन्सान न होता.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ काश ! मैं एक दरख़्त होता, जिस को काटा जाता, उस के फल खाए जाते, आह ! मैं इन्सान न होता ।"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج ۱ ص ۴۸۵،رقم الحدیث ۷۸۷﴿

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

www.dawateislami.net

काश ! मैं मदीने का कोई दुम्बा होता या
सींग वाला चितकुब्रा मेंढ़ा बन गया होता
आह ! कसरते इस्यां, हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

(वसाइले बख़्शिश, **अज़** : अमीरे अहले सुन्नत मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

(35) जिगर टुकड़े टुकड़े कर दिया है......

मरवी है कि एक नौजवान अन्सारी सह़ाबी पर दोज़ख़ का ऐसा ख़ौफ़ त़ारी हुवा कि वोह मुसलसल रोने लगे और अपने आप को घर में क़ैद कर लिया। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और उन को अपने सीने से लगाया तो वोह इन्तिक़ाल कर गए। रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने साथी के कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम करो, जहन्नम के ख़ौफ़ ने इस के जिगर को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ج۱، ص۵۳۰، رقم الحدیث ۹۳۶)

(36) अमानत रखवा दिये हैं.......

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िम्स शहर में सय्यिदुना उ़मर बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवर्नर बना कर भेजा। जब एक साल गुज़र गया तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें ख़त़ लिखा कि अपना माल व अस्बाब ले कर मदीना शरीफ़ पहुंच जाओ। जैसे ही ह़ज़रते उ़मर बिन सईद को येह ख़त़ मिला, उन्हों ने अपना सामान जो कि एक अ़सा, एक पियाला, एक कूज़े और मौज़ों के एक जोड़े पर मुश्तमिल था, समेटा और मदीनतुल मुनव्वरा रवाना हो गए। जब येह मदीनए त़य्यिबा में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचे तो बड़े ग़मगीन और

www.dawateislami.net

परेशान दिखाई दिये । आप की इस परेशानी को देख कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "शायद आप को वोह शहर रास नहीं आया ?" तो आप ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोमिनीन ! बात दर अस्ल येह है कि मेरे पास कोई ऐसी मौज़ूं चीज़ नहीं जो आप को दिखा सकूं और न ही मेरे पास दुन्या का माल व अस्बाब है ।" ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "फिर आप के पास क्या है ?" आप ने जवाब दिया : "मेरे पास येह एक अ़सा है जिस से मैं सहारा लेता हूं, येह एक पियाला है जिस में खाना खाता हूं और येह मौज़े हैं जो पाउं में पहनता हूं और एक कूज़ा है जिस में पानी पीता हूं, इस के इ़लावा कुछ नहीं ।"

येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "क्या उस शहर में कोई भी मुख़य्यर आदमी न था जो आप को सुवारी ही मुहय्या कर देता, आख़िर अल्लाह तआ़ला ने उन्हें एक अमीर दिया था जो उन के मुआ़मलात को संभालता था ।" फिर ख़ादिम से फ़रमाया : "जाओ ! एक काग़ज़ और क़लम ले कर आओ, मैं इन के लिये नया हुक्म नामा लिख दूं ।" येह सुन कर आप ने अ़र्ज़ की, "अमीरल मोमिनीन ! मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें, आप को ख़ुदा का वासिता मुझे इस आज़माइश में न डालें क्यूंकि मैं ने एक दिन एक नस्रानी को येह कह दिया था कि : "अल्लाह तआ़ला तुझे रुस्वा करे ।" अब मुझे ख़ौफ़ है कि रब तआ़ला कहीं इसी बात पर मेरी पकड़ न फ़रमा ले ।" आप की इस ख़ुदा ख़ौफ़ी को देख कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रो पड़े और फ़रमाया : "ठीक है ! आप को येह ज़िम्मेदारी नहीं दी जा रही ।" इस के बा'द आप अपने घर चले आए ।

www.dawateislami.net

हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़क़ीक़ते ह़ाल जानने के लिये एक आदमी को सौ दीनार की थेली दे कर उन के घर भेजा और उसे हिदायत की, कि जब तुम ख़ुदा ख़ौफ़ी की कोई बात देखो, येह थेली उन की ख़िदमत में पेश कर देना। वोह आदमी तीन दिन तक आप के मा'मूलात का मुशाहदा करता रहा। उस ने देखा कि आप दिन को रोज़ा रखते, शाम के वक़्त एक रोटी और ज़ैतून के तेल के साथ रोज़ा इफ़्तार फ़रमाते हैं और पूरी रात इबादत में गुज़ारते हैं। जब तीसरा दिन आया तो उस ने वोह थेली आप की बारगाह में पेश कर दी और साथ अमीरुल मोमिनीन का हुक्म भी सुनाया। आप येह सब देख कर रो पड़े तो उस आदमी ने आप के रोने का सबब पूछा तो आप ने फ़रमाया : "मुझे सोना दे कर आज़माया गया है ह़ालांकि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सह़ाबी हूं, काश ! ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे कभी न देख सकें।" आप ने उस वक़्त एक पुरानी क़मीज़ पहन रखी थी, जिसे आप ने चाक कर दिया और पांच दीनार अपने पास रख कर बक़िय्या राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दिये। कुछ अ़र्से बा'द अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से उन दीनारों के बारे में दरयाफ़्त किया तो आप ने अ़र्ज़ की, "मैं ने वोह दीनार **अल्लाह** तआ़ला के पास अमानतन रखवा दिये हैं कि क़ियामत के दिन मुझे वापस कर देना।"

﴿حکایات الصالحین، ص ۱۲٤﴾

﴿37﴾ ﴿मुझे किस त़रफ़ जाने का हुक्म होगा ?...﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हुवे तो रोने लगे। जब आप

www.dawateislami.net

से रोने का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : "मुझे दुन्या से रुख़्सती का ग़म नहीं रुला रहा बल्कि मैं तो इस लिये रो रहा हूं कि मेरा सफ़र कठिन और त़वील है जब कि मेरे पास ज़ादे सफ़र भी कम है और मैं गोया ऐसे टीले पर जा पहुंचा हूं जिस के बा'द जन्नत और दोज़ख़ का रास्ता है और मैं नहीं जानता कि मुझे किस त़रफ़ जाने का हुक्म होगा ?"

﴿حلیۃ الاولیاء ، ذکر اصحاب الصفۃ ، ج ۱، ص ۳۵۰﴾

﴿38﴾ ﴿रोने वाला ह़बशी.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई, وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।* (پ۲۸، التحریم ۶)

फिर फ़रमाया : "जहन्नम की आग एक हज़ार बरस जलाई गई तो वोह सुर्ख़ (लाल) हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाई गई तो सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल भड़काई गई तो सियाह (काली) हो गई, और अब वोह सियाह व तारीक है।" येह सुन कर एक ह़बशी जो वहां मौजूद था, रोने लगा। मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "येह कौन रो रहा है ?" अ़र्ज़ की गई, "ह़बशा का रहने वाला एक शख़्स है।" आप ने उस के रोने को पसन्द फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام वह़ी ले कर उतरे कि रब तआ़ला फ़रमाता है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मेरा जो बन्दा दुन्या में मेरे ख़ौफ़ से रोएगा, मैं ज़रूर उसे जन्नत में ज़ियादा हंसाऊंगा।"

﴿شعب الایمان ، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ، ج ۱، ص ۴۹۰، رقم الحدیث ۷۹۹﴾

www.dawateislami.net

﴾39﴿ ﴾मैं कौन सी मुट्ठी में होऊंगा ?......﴿

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो रोने लगे। इन से पूछा गया, " आप को किस चीज़ ने रुलाया ?" फ़रमाया : "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं न तो मौत की घबराहट से रो रहा हूं और न ही दुन्या से रुख़्सती के ग़म में आंसू बहा रहा हूं बल्कि मैं तो इस लिये रोता हूं कि मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि, " दो मुठ्ठियां हैं, एक जहन्नम में जाएगी और दूसरी जन्नत में.....।" और मुझे नहीं मा'लूम कि मैं कोन सी मुठ्ठी में होऊंगा !

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج١،ص٥٠٢،رقم الحدیث ٨٤١﴿

﴾40﴿ ﴾मैं दुन्या के छूटने पर नहीं रोता.......﴿

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की मौत का वक़्त जब क़रीब आया तो रो दिये और शदीद घबराहट का इज़्हार होने लगा। लोगों ने इन से रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया : "मैं दुन्या छूटने पर नहीं रोता क्यूंकि मौत मुझे महबूब है, बल्कि मैं तो इस लिये रो रहा हूं कि मैं **अल्लाह** तआला की रिज़ा पर दुन्या से जा रहा हूं या नाराज़ी में ?"

﴾اسد الغابۃ ج١، ص٥٧٤﴿

﴾41﴿ ﴾मैं नहीं जानता......﴿

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ौजए मोहतरमा की गोद में सर रख कर लैटे हुवे थे कि अचानक रोने लगे, इन को रोता देख कर ज़ौजा भी रोने लगीं। आप ने ज़ौजा से पूछा : "तुम क्यूं रोती हो ?" उन्हों ने जवाब दिया : " आप को रोता देख कर मुझे भी रोना आ गया।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे तो **अल्लाह** तआला का येह क़ौल याद आ गया था :

www.dawateislami.net

وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।* (پ١٦،مریم:٧١) और मैं नहीं जानता कि उस से ब आ़फ़िय्यत गुज़र जाऊंगा या नहीं।" ﴿المستدرك للحاكم،الحديث:٨٧٤٨،جلد٤،ص٦٣١ و التخويف من النار،ص٢٤٩﴾

﴾42﴿ ﴾एक ह़बशी का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ.......﴿

एक ह़बशी ने सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे गुनाह बेशुमार हैं, क्या मेरी तौबा बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में क़बूल हो सकती है ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं।" उस ने अ़र्ज़ की : "क्या वोह मुझे गुनाह करते हुवे देखता भी रहा है ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! वोह सब कुछ देखता रहा है।" येह सुन कर ह़बशी ने एक चीख़ मारी और ज़मीन पर गिरते ही जां बह़क़ हो गया। ﴿كيميائے سعادت،ج٢،ص٨٨٦﴾

﴾43﴿ ﴾क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को भी ख़बर नहीं ?...﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हमराह मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ जा रहा था कि एक जगह हम थोड़ी देर आराम के लिये रुके। इतने में एक चरवाहा उधर से बकरियां लिये हुवे गुज़रा। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस से कहा कि : "एक बकरी मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दो।" उस ने अ़र्ज़ की, "येह बकरियां मेरी ज़ाती मिल्क नहीं हैं, बल्कि मैं तो किसी का ग़ुलाम हूं।" आप ने (बत़ौरे आज़्माइश) फ़रमाया : मालिक से कह देना कि एक बकरी को भेड़िया उठा कर ले गया, उसे क्या पता चलेगा।" चरवाहे ने जवाब दिया, "अगर उसे न भी मा'लूम हो तो क्या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को भी ख़बर नहीं है ?" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और उस चरवाहे के मालिक को बुलवा कर उस की क़ीमत अदा की और उसे आज़ाद कर दिया। ﴿كيميائے سعادت،ف٢،ص٨٨٦﴾

www.dawateislami.net

﴾44﴿ ﴾चेहरे का रंग ज़र्द पड़ जाता.....﴿

ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब वुज़ू करते तो ख़ौफ़ के मारे आप के चेहरे का रंग ज़र्द (पीला) पड़ जाता। घर वाले दरयाफ़्त करते, "येह वुज़ू के वक़्त आप को क्या हो जाता है?" तो फ़रमाते : "तुम्हें मा'लूम है कि मैं किस के सामने खड़े होने का इरादा कर रहा हूं?"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٦﴾

﴾45﴿ ﴾पुल सिरात़ से गुज़रो.....﴿

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक कनीज़ आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ करने लगी : "आ़ली जाह! मैं ने ख़्वाब में अ़जीब मुआ़मला देखा।" आप के दरयाफ़्त करने पर वोह यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुई कि : "मैं ने देखा कि जहन्नम को भड़काया गया और उस पर पुल सिरात़ रख दिया गया फिर उमवी ख़ुलफ़ा को लाया गया। सब से पहले ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान को उस पुल सिरात़ से गुज़रने का हुक्म दिया गया, चुनान्चे, वोह पुल सिरात़ पर चलने लगा लेकिन अफ़्सोस! वोह थोड़ा सा चला कि पुल उलट गया और वोह जहन्नम में गिर गया।" ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त किया, "फिर क्या हुवा?" कनीज़ ने कहा : फिर उस के बेटे वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक को लाया गया, वोह भी इसी त़रह़ पुल सिरात़ पार करने लगा कि अचानक पुल सिरात़ फिर उलट गया, जिस की वजह से वोह दोज़ख़ में जा गिरा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुवाल किया कि, "इस के बा'द क्या हुवा?" उस ने अ़र्ज़ की, "इस के बा'द सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक को ह़ाज़िर किया गया, उसे भी हुक्म हुवा कि पुल सिरात़ से गुज़रो, उस ने भी चलना शुरूअ़ किया लेकिन यका यक वोह भी दोज़ख़ की गहराइयों में

www.dawateislami.net

उतर गया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "मज़ीद क्या हुवा ?" उस ने जवाब दिया : "या अमीरल मोमिनीन ! उन सब के बा'द आप को लाया गया....."

कनीज़ का येह जुम्ला सुनते ही सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ौफ़ ज़दा हो कर चीख़ मारी और ज़मीन पर गिर गए। कनीज़ ने जल्दी से कहा : "ऐ अमीरल मोमिनीन ! रह़मान عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने देखा कि आप ने सलामती के साथ पुल सिरात़ पार कर लिया।" लेकिन सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कनीज़ की बात न समझ पाए क्यूंकि आप पर ख़ौफ़ का ऐसा ग़लबा त़ारी था कि आप बेहोशी के आ़लम में भी इधर उधर हाथ पाउं मार रहे थे। ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٣١﴾

﴿46﴾ बेहोश हो कर गिर गए.....

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ ले गए तो उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइयें। आप ने फ़रमाया : "या अमीरल मोमिनीन ! याद रखिये कि आप पहले ख़लीफ़ा नहीं हैं, जो मर जाएंगे। (या'नी आप से पहले गुज़रने वाले खुलफ़ा को मौत ने आ लिया था।)" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और अ़र्ज़ करने लगे : "कुछ और भी फ़रमाइये।" तो आप ने कहा, "ऐ अमीरल मोमिनीन ! ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर आप तक आप के सारे आबाओ अजदाद फ़ौत हो चुके हैं।" येह सुन कर आप मज़ीद रोने लगे और अ़र्ज़ की, "मज़ीद कुछ बताइये।" आप ने फ़रमाया, "आप के और जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान कोई मन्ज़िल नहीं है। (या'नी दोज़ख़ में डाला जाएगा या जन्नत में दाख़िल किया जाएगा।) येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हो कर गिर पड़े।

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٣٩﴾

www.dawateislami.net

(47) बेशक मुझे दो जन्नतें अ़ता की गई....

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए मुबारक में एक नौजवान बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार व इ़बादत गुज़ार था। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस की इ़बादत पर तअ़ज्जुब किया करते थे। वोह नौजवान नमाज़े इ़शा मस्जिद में अदा करने के बा'द अपने बूढ़े बाप की ख़िदमत करने के लिये जाया करता था। रास्ते में एक ख़ूबरू औ़रत उसे अपनी त़रफ़ बुलाती और छेड़ती थी, लेकिन येह नौजवान उस पर तवज्जोह दिये बिग़ैर निगाहें झुकाए गुज़र जाया करता था। आख़िरे कार एक दिन वोह नौजवान शैत़ान के वरग़लाने और उस औ़रत के दा'वत देने पर बुराई के इरादे से उस की जानिब बढ़ा, लेकिन जब दरवाज़े पर पहुंचा तो उसे **अल्लाह** तआ़ला का येह फ़रमाने आ़लीशान याद आ गया,

''اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशयार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।''* (پ۹،الاعراف۲۰۱)

इस आयते पाक के याद आते ही उस के दिल पर **अल्लाह** तआ़ला का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुवा कि वोह बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया। जब येह बहुत देर तक घर न पहुंचा तो उस का बूढ़ा बाप उसे तलाश करता हुवा वहां पहुंचा और लोगों की मदद से उसे उठवा कर घर ले आया। होश आने पर बाप ने तमाम वाक़िआ़ दरयाफ़्त किया, नौजवान ने पूरा वाक़िआ़ बयान कर के जब इस आयते पाक का ज़िक्र किया, तो एक मरतबा फिर उस पर **अल्लाह** तआ़ला का शदीद ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा, उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस का दम निकल गया। रातों रात ही उस के ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम कर दिया गया।

www.dawateislami.net

सुब्ह़ जब येह वाक़िआ़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप उस के बाप के पास ता'ज़िय्यत के लिये तशरीफ़ ले गए। आप ने उस से फ़रमाया कि "हमें रात को ही इत्तिलाअ़ क्यूं नहीं दी, हम भी जनाज़े में शरीक हो जाते ?" उस ने अ़र्ज़ की : "अमीरल मोमिनीन ! आप के आराम का ख़याल करते हुवे मुनासिब मा'लूम न हुवा।" आप ने फ़रमाया कि "मुझे उस की क़ब्र पर ले चलो।" वहां पहुंच कर आप ने येह आयते मुबारका पढ़ी, وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ "***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और जो अपने रब के ह़ुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।* (پ۲۷، الرحمٰن ۴۶)

तो क़ब्र में से उस नौजवान ने बुलन्द आवाज़ के साथ पुकार कर कहा कि "या अमीरल मोमिनीन ! बेशक मेरे रब ने मुझे दो जन्नतें अ़त़ा फ़रमाई हैं।" ﴿شرح الصدور ص۲۱۳﴾

﴿48﴾ ﴿आंख निकाल दी.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के ज़मानए मुबारका में एक मरतबा क़ह़त पड़ गया तो लोगों ने आप की बारगाह में दरख़्वास्त की, कि "ह़ुज़ूर ! बारिश के लिये दुआ़ कर दीजिये।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे साथ पहाड़ पर चलो।" चुनान्चे, सब लोग आप के साथ चल पड़े। आप ने ए'लान फ़रमाया कि, "मेरे साथ कोई ऐसा शख़्स न आए जिस ने कोई गुनाह किया हो।" येह सुन कर सब लोग वापस हो लिये लेकिन सिर्फ़ एक आंख वाला शख़्स साथ साथ चलता रहा। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उस से पूछा : "क्या तुम ने मेरी बात नहीं सुनी ?"

www.dawateislami.net

उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! सुनी है।" फ़रमाने लगे : "क्या तुम बिल्कुल ही बे गुनाह हो ?" उस ने जवाब दिया, "हुज़ूर ! मुझे अपना कोई गुनाह तो याद नहीं लेकिन एक गुनाह का तज़किरा करता हूं और वोह गुनाह अब बाक़ी रहा या नहीं, इस का फ़ैसला आप ही फ़रमाइये।" आप ने पूछा : "वोह क्या ?" उस ने बताया : "एक दिन मैं ने रास्ते से गुज़रते हुवे किसी के मकान में एक आंख से झांका तो कोई खड़ा था, किसी के घर में इस त़रह़ झांकने का मुझे बहुत अफ़्सोस हुवा और मैं **ख़ौफ़े ख़ुदा** से लरज़ उठा। फिर मुझ पर नदामत ग़ालिब आई और मैं ने वोह आंख ही निकाल कर फेंक दी जिस से झांका था। अगर मेरा वोह अ़मल गुनाह था तो आप फ़रमा दीजिये, मैं वापस चला जाता हूं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस की बात सुन कर बहुत ख़ुश हुवे और फ़रमाया : "साथ चलो ! अब हम दुआ़ करते हैं।" फिर आप ने दुआ़ फ़रमाई कि, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा ख़ज़ाना कभी ख़त्म नहीं होने वाला और बुख़्ल तेरी सिफ़त नहीं, अपने फ़ज़्लो करम से हम पर पानी बरसा दे।" इतना कहना था कि फ़ौरन बारिश शुरूअ़ हो गई और येह दोनों ह़ज़रात बारिश में भीगते हुवे पहाड़ से वापस तशरीफ़ लाए। ﴿کتاب التوابین ،ص۸۰﴾

﴿49﴾ ﴿रोने वाला पथ्थर.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक पथ्थर के क़रीब से गुज़रे जिस के दोनों त़रफ़ से पानी बह रहा था। किसी को मा'लूम न था कि येह पानी कहां से आ रहा है और कहां जा रहा है ? ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पथ्थर से दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ पथ्थर ! येह पानी कहां से आ रहा है और

www.dawateislami.net

कहां जाएगा ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''जो पानी मेरी सीधी जानिब से आ रहा है वोह मेरी दाईं (सीधी) आंख के आंसू हैं और उलटी जानिब से आने वाला पानी मेरी बाईं (उलटी) आंख के आंसू हैं।'' आप عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा : ''तुम येह आंसू किस लिये बहा रहे हो ?'' पथ्थर ने जवाब दिया, ''अपने रब के ख़ौफ़ की वजह से कि कहीं वोह मुझे जहन्नम का ईंधन न बना दे।''

﴿شعب الایمان 'باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ 'ج۱'ص۵۲۸' رقم الحدیث ۹۳۳﴾

﴿50﴾ ﴿चट्टान हट गई.....﴾

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि ''गुज़श्ता ज़माने में तीन आदमी सफ़र में थे कि रात गुज़ारने के लिये उन्हें एक ग़ार का सहारा लेना पड़ा। जूंही वोह ग़ार में दाख़िल हुवे तो पहाड़ के ऊपर से एक चट्टान टूट कर ग़ार के मुंह पर आन गिरी, जिस से ग़ार का मुंह बन्द हो गया। उन्हों ने सोचा कि ''इस चट्टान से छुटकारा पाने का एक ही त़रीक़ा है कि हम अपने अपने नेक आ'माल का वसीला पेश कर के **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगें।''

उन में से एक शख़्स ने ख़िदमते वालिदैन को वसीला बना कर दुआ़ की तो चट्टान थोड़ी सी सरक गई लेकिन वोह अभी बाहर न निकल सकते थे।

दूसरे ने इस त़रह़ दुआ़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब थी मैं ने कई मरतबा उस से बुरी ख़्वाहिश का इज़हार किया मगर उस ने इन्कार कर दिया। यहां तक कि वोह क़ह़त़ साली में मुब्त़ला हुई और मदद ह़ासिल करने मेरे पास

www.dawateislami.net

आई। मैं ने उसे सौ दीनार इस शर्त पर दिये कि वोह मेरे साथ तन्हाई में जाए, लिहाज़ा वोह मजबूरन इस पर तय्यार हो गई। जब हम तन्हाई में पहुंचे और मैं ने अपनी ख़्वाहिश पूरी करना चाही तो उस ने कहा : "अल्लाह तआ़ला से डर और येह गुनाह मत कर।" येह सुन कर मैं उस गुनाह से रुक गया और वोह दीनार भी उसी को दे दिये। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर मेरा येह अ़मल तेरी रिज़ा के लिये था तो हमारी येह मुसीबत दूर कर दे।" चट्टान कुछ और सरक गई, मगर वोह अभी भी बाहर न निकल सकते थे।

तीसरे ने एक मज़दूर को उस की अमानत लौटा देने को वसीला बनाया और अ़र्ज़ की, "ऐ अल्लाह तआ़ला ! अगर मेरा येह अ़मल महज़ तेरी रिज़ाजोई के लिये था तो हमें इस परेशानी से नजात दिला दे।" चुनान्चे, चट्टान मुकम्मल तौर पर हट गई और वोह निकल कर चल पड़े।

﴿صحیح المسلم، باب قصة اصحاب الغار الثلاثة، ص ۱۱۵۵، رقم الحدیث ۲۴۴۳﴾(ملخصًا)

﴿51﴾ ﴿मुझे जला देना.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बनी इस्राईल में एक शख़्स था जिस ने ज़िन्दगी भर कभी कोई नेकी न की थी। उस ने अपने घर वालों को वसिय्यत की, कि : "जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना और मेरी आधी राख जंगल में उड़ा देना जब कि आधी दरया के सिपुर्द कर देना, रब तआ़ला की क़सम ! अगर अल्लाह तआ़ला ने मेरी गिरिफ़्त की तो वोह मुझे ऐसा अ़ज़ाब देगा कि पूरे जहान में से किसी को न दिया होगा।"

जब उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया तो उस की रिज़ा के मुताबिक़ घर वालों ने उस की वसिय्यत पूरी कर दी। अल्लाह तआ़ला ने दरया को

www.dawateislami.net

उस की राख जम्अ़ करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया तो उस ने अपने अन्दर मौजूद तमाम राख जम्अ़ कर दी। फिर जंगल को भी येही हुक्म दिया, उस ने भी ऐसा ही किया। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स से सुवाल किया कि : "बताओ ! तुम ने ऐसा क्यूं किया ?" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मैं ने येह सब कुछ फ़क़त तेरे **ख़ौफ़** की वजह से किया था।" येह सुन कर **अल्लाह** तआ़ला ने उस की बख़्शिश फ़रमा दी। ﴿شعب الایمان، جلد ۱، ص۱۹، رقم الحدیث ۱۰۳۷﴾

﴿52﴾ ﴿दुआ़ के वक़्त चेहरा ज़र्द हो जाता.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन वकील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ताबेईन में से किसी शख़्स को इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ शिद्दते ख़ुशूअ़ से नमाज़ पढ़ते हुवे नहीं देखा। दुआ़ मांगते वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से आप का चेहरा ज़र्द (पीला) हो जाता और कसरते इबादत की वजह से आप का बदन किसी सालख़ुर्दा मश्क की त़रह़ मुरझाया हुवा मा'लूम होता। एक मरतबा आप ने रात को नमाज़ में कुरआने करीम की येह आयते मुबारका तिलावत की :

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बल्कि उन का वा'दा क़ियामत पर है और क़ियामत निहायत कड़ी है और सख़्त कड़वी।* (پ۲۷، القمر ۴۶)

फिर बार बार इसी आयत को दोहराते रहे यहां तक कि मोअज़्ज़िन ने सुब्ह़ की अज़ान कह दी। ﴿تذکرۃ المحدثین، ص۵۷﴾

﴿53﴾ ﴿होशो ह़वास जाते रहे.....﴾

एक मरतबा किसी शख़्स ने इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने येह आयत तिलावत की :

www.dawateislami.net

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ٥ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ٥ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे और न उन्हें इजाज़त मिले कि उ़ज़्र करें ।* ﴿المرسلٰت ٣٥،٣٦﴾

इस आयत को सुनते ही इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे का रंग मुतग़य्यिर (तब्दील) हो गया और जिस्म पर लरज़ा त़ारी हो गया । ख़ौफ़े ख़ुदा की शिद्दत से आप के होशो ह़वास जाते रहे और वहीं सजदे में गिर गए । फिर जब होश आया तो कहने लगे,

اَللّٰھُمَّ اِنِّیٓ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ مَّقَامِ الْکَذَّابِیْنَ وَمِنْ اِعْرَاضِ الْجَاھِلِیْنَ ھَبْ لِیْ مِن رَّحْمَتِکَ وَجَلِّلْنِیْ بِسِتْرِکَ وَاعْفُ عَنِّیْ بِکَرَمِکَ وَلَاتکلنی اِلٰی غَیْرِکَ وَلَاتقنطنی مِنْ خَیْرِکَ

ऐ **अल्लाह** मैं कज़्ज़ाबों के मक़ाम और जाहिलों के ए'राज़ से तेरी पनाह मांगता हूं, मुझे अपनी रह़मत अ़त़ा फ़रमा दे, मेरे उ़यूब पर पर्दा डाल दे, मुझे अपने करम के सदके़ मुआ़फ़ फ़रमा दे, मुझे ग़ैर के ह़वाले न फ़रमा, मुझे अपनी रह़मत से मायूस न करना । ﴿تذکرۃ المحدثین بحوالہ مرقاۃ ج ١٠ ص ٢١﴾

﴾54﴿ ﴾ मुझे भूक ही नहीं लगती.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान है कि : "ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मुझे खाने पीने से रोक रहा है और मुझे भूक ही नहीं लगती ।" ﴿مکاشفۃ القلوب باب الخوف من الذنب، ص ١٩٧﴾

﴾55﴿ ﴾ आंखों की ख़ूबसूरती जाती रही......﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून वासित़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ाफ़िज़े ह़दीस थे । इन की आंखें निहायत ख़ूब सूरत थीं मगर येह दिन रात ख़ौफ़े इलाही से इस क़दर रोया करते थे कि मुस्तक़िल त़ौर पर आशूबे चश्म की शिकायत पैदा हो गई यहां तक कि आंखों की ख़ूब सूरती व रोशनी दोनों जाती रहीं । ﴿اولیائے رجال الحدیث ص ٢٦٣﴾

www.dawateislami.net

﴾56﴿ ﴾ रोना कैसे छोड़ दूं ?.......﴿

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन अ़ब्दुल मलिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत ही बा रो'ब शैख़ुल ह़दीस थे, लेकिन आप पर ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी का बड़ा ग़लबा था। आप दिन रात रोते रहते यहां तक कि आप की आंखों में हमेशा आशूबे चश्म जैसी सुर्ख़ी रहती थी। येह देख कर बा'ज़ लोगों ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! आप की आंखों का इलाज येही है कि आप रोना छोड़ दें।" तो आप ने फ़रमाया : "अगर येह आंखें **अल्लाह** के ख़ौफ़ से रोना छोड़ दें तो फिर इन में कौन सी भलाई बाक़ी रह जाएंगी ?" ﴾اولیائے رجال الحدیث ص۲۵۷﴿

﴾57﴿ ﴾ अब तौबा का वक़्त आ गया है.......﴿

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत नामवर मुह़द्दिस और मशहूर औलियाए किराम में से हैं। येह पहले ज़बरदस्त डाकू थे। एक मरतबा डाका डालने की ग़रज़ से किसी मकान की दीवार पर चढ़ रहे थे कि इत्तिफ़ाक़न उस वक़्त मालिके मकान क़ुरआने मजीद की तिलावत में मशग़ूल था। उस ने येह आयत पढ़ी : اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाए **अल्लाह** की याद (के लिये)।* (پ۲۷،الحدید۱۶)

जूंही येह आयत आप की समाअ़त से टकराई, गोया तासीरे रब्बानी का तीर बन कर दिल में पैवस्त हो गई और इस का इतना असर हुवा कि आप ख़ौफ़े ख़ुदा से कांपने लगे और बे इख़्तियार आप के मुंह से निकला : "क्यूं नहीं मेरे परवर दगार ! अब इस का वक़्त आ गया है।" चुनान्चे, आप रोते हुवे दीवार से उतर पड़े और रात को एक सुनसान और बे आबाद खन्डरनुमा मकान में जा कर बैठ गए। थोड़ी देर बा'द वहां एक क़ाफ़िला

www.dawateislami.net

पहुंचा तो शुरकाए क़ाफ़िला आपस में कहने लगे कि : "रात को सफ़र मत करो, यहां रुक जाओ कि फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ डाकू इसी अत़राफ़ में रहता है।" आप ने क़ाफ़िले वालों की बातें सुनीं तो और ज़ियादा रोने लगे कि : "अफ़्सोस ! मैं कितना गुनाहगार हूं कि मेरे ख़ौफ़ से उम्मते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ाफ़िले रात में सफ़र नहीं करते और घरों में औ़रतें मेरा नाम ले कर बच्चों को डराती हैं।" आप मुसलसल रोते रहे यहां तक कि सुब्ह़ हो गई और आप ने सच्ची तौबा कर के येह इरादा किया कि अब सारी ज़िन्दगी का'बतुल्लाह की मुजावरी और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत में गुज़ारूंगा। चुनान्चे, आप ने पहले इ़ल्मे ह़दीस पढ़ना शुरूअ़ किया और थोड़े ही अ़र्से में एक साह़िबे फ़ज़ीलत मुह़द्दिस हो गए और ह़दीस का दर्स देना भी शुरूअ़ कर दिया। ﴿اولیائے رجال الحدیث ص۲۰۶﴾

﴿58﴾ ﴿दिन रात रोते रहते....﴾

ह़ज़रते अ़ली बिन बक्कार बसरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बहुत बड़े मुह़द्दिस और ज़ोहदो तक़्वा से मुत्तसिफ़ बुज़ुर्ग थे। आप के दिल पर ख़ौफ़े ख़ुदा का इतना ग़लबा था कि दिन रात रोते रहते ह़त्ता कि आंखों की बीनाई जाती रही।

﴿اولیائے رجال الحدیث ص۱۹۶﴾

﴿59﴾ ﴿जहन्नम का नाम सुन कर बेहोश हो गए....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वहब फ़हरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक लाख अह़ादीस ज़बानी याद थीं। आप पर ख़ौफ़े इलाही का बड़ा ग़लबा था। एक दिन ह़म्माम में तशरीफ़ ले गए तो किसी ने येह आयत पढ़ दी,

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब वोह आग में बाहम झगड़ेंगे।* (پ۲۴، المؤمن ۴۷)

www.dawateislami.net

जहन्नम का नाम सुनते ही आप बेहोश हो कर ग़ुस्ल ख़ाने में गीर पड़े और बहुत देर के बाद आप को होश आया। इसी त़रह़ एक शागिर्द ने आप की किताब ''जामेअ़ इब्ने वहब'' में से क़ियामत का वाक़िआ़ पढ़ दिया तो आप ख़ौफ़ की वजह से बेहोश हो कर गिर पड़े और लोग आप को उठा कर घर ले आए। जब भी आप को होश आता तो बदन पर लर्ज़ा त़ारी हो जाता और फिर बेहोश हो जाते, इसी ह़ालत में आप का इन्तिक़ाल हो गया।

(اولیائے رجال الحدیث ص۱۹۱)

﴿60﴾ ﴿"लब्बैक" कैसे कहूं?.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली बिन हुसैन ज़ैनुल आ़बेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्मे ह़दीस में अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन व दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के वारिस हैं। आप बड़े ख़ुदातरस थे और आप का सीनए मुबारक ख़शिय्यते इलाही का सफ़ीना था। एक मरतबा आप ने ह़ज का एह़राम बांधा तो तलबिय्या (या'नी लब्बैक) नहीं पढ़ी। लोगों ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर ! आप लब्बैक क्यूं नहीं पढ़ते ?'' आबदीदा हो कर इरशाद फ़रमाया : ''मुझे डर लगता है कि मैं लब्बैक कहूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ''ला लब्बैक'' की आवाज़ न आ जाए, या'नी मैं तो येह कहूं कि ''ऐ मेरे मालिक ! मैं बार बार तेरे दरबार में ह़ाज़िर हूं।'' और उधर से येह आवाज़ न आ जाए, कि ''नहीं नहीं ! तेरी ह़ाज़िरी क़बूल नहीं।'' लोगों ने कहा : ''हुज़ूर ! फिर लब्बैक कहे बिग़ैर आप का एह़राम कैसे होगा ?'' येह सुन कर आप ने बुलन्द आवाज़ से لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ

www.dawateislami.net

पढ़ा लेकिन एक दम ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ कर ऊंट की पुश्त से ज़मीन पर गिर पड़े और बेहोश हो गए। जब होश में आते तो "**लब्बैक**" पढ़ते और फिर बेहोश हो जाते, इसी हालत में आप ने हज अदा फ़रमाया।

﴿اولیائے رجال الحدیث ص١٦٤﴾

﴿61﴾ ﴿भुनी हुई सिरी देख कर बेहोश हो गए...﴾

हज़रते सय्यिदुना ताऊस बिन कैसान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक अज़ीम मुहद्दिस और ताबेई थे। आप इल्मो अमल के ए'तिबार से अपने ज़माने के सरदार थे। आप पर ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी का बड़ा ग़लबा था और बहुत ख़ुदा तरस और रक़ीकुल क़ल्ब थे। जब किसी भड़कती हुई आग को देख लेते तो जहन्नम को याद कर के हवास बाख़्ता हो जाते। एक मरतबा किसी होटल वाले ने इन के सामने तन्नूर में से बकरी का सर भून कर निकाला तो आप उस को देख कर बेहोश हो गए। ﴿اولیائے رجال الحدیث ص١٥٦﴾

﴿62﴾ ﴿दर्द में कमी वाक़ेअ न हुई.....﴾

हज़रते सय्यिदुना अबू उस्मान इस्माईल साबूनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत बड़े वाइज़ और बा कमाल मुफ़स्सिर थे। एक दिन वा'ज़ के दौरान किसी ने इन के हाथ में एक किताब दी जिस में ख़ौफ़े इलाही से मुतअल्लिक़ मज़ामीन थे। आप ने उस किताब की चन्द सतरें मुतालआ फ़रमाईं और एक क़ारी से कहा कि येह आयत पढ़ो :

اَ فَاَمِنَ الَّذِیْنَ مَكَرُوا السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या जो लोग बुरे मक्र करते हैं, उस से नहीं डरते कि* ***अल्लाह*** *उन्हें ज़मीन में धंसा दे।* (پ١٤، النحل ٤٥)

www.dawateislami.net

फिर इसी क़िस्म की दूसरी आयाते वईद क़ारी से पढ़वाते रहे और हाज़िरीन को अ़ज़ाबे इलाही से डराते रहे। ख़ुद इन पर ऐसी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई कि ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ने और कांपने लगे और आप के पेट में ऐसा दर्द उठा कि बेचैन हो गए। कुछ लोग आप को उठा कर घर ले आए और त़बीबों ने बहुत इ़लाज किया मगर दर्द में कोई कमी वाक़ेअ़ न हुई। बिल आख़िर इसी ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हो गया।

﴿اولیائے رجال الحدیث ص۱۵۳﴾

﴿63﴾ ﴿फूट फूट कर रोते.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बिशर सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े नामवर मुह़द्दिस थे। आप बहुत ही सह़र बयान वाइ़ज़ भी थे। वा'ज़ के दौरान ख़ुद इन की येह कैफ़िय्यत होती थी कि ख़ौफ़े इलाही से कांपते और लरज़ते रहते और इस क़दर फूट फूट कर रोते जैसे कोई औ़रत अपने इक लौते बच्चे के मर जाने पर रोती है। कभी कभी तो शिद्दते गिर्या और बदन के लरज़ने से आप के आ'ज़ा के जोड़ अपनी जगह से हिल जाते थे। और आप के बयान का सुनने वालों पर ऐसा असर होता कि बा'ज़ लोग तड़प तड़प कर बेहोश हो जाते और बा'ज़ इन्तिक़ाल कर जाते। आप के ख़ौफ़े ख़ुदा का येह आ़लम था कि अगर किसी क़ब्र को देख लेते तो दो-दो, तीन-तीन दिन मबहूत व ख़ामोश रहते और खाना पीना छोड़ देते। ﴿اولیائے رجال الحدیث ص۱۵۱﴾

﴿64﴾ ﴿मुझे शर्म आती है.....﴾

ह़ज़रते शक़ीक़ बिन अबी सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ास शागिर्द हैं। आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का बड़ा ग़लबा था। जब ह़रमे का'बा में जाते तो कहते : "मैं किस त़रह़ का'बे का त़वाफ़ करूं ? हाए ! मुझे बड़ी शर्म आती है कि जो

www.dawateislami.net

क़दम गुनाह की त़रफ़ चल चुके हों, मैं उन गुनहगार क़दमों को ख़ुदा के मुक़द्दस घर के पास किस त़रह़ रखूं?" येह कह कर आप ज़ारो क़ित़ार रोने लगते। आप के सामने कोई **अल्लाह** तआ़ला के क़हरो जलाल का तज़किरा कर देता तो आप मुर्ग़े बिस्मिल की त़रह़ ज़मीन पर तड़पने लगते। एक मरतबा आप के सामने किसी ने कह दिया कि फ़ुलां आदमी बड़ा मुत्तक़ी है तो आप ने फ़रमाया : "ख़ामोश रहो ! तुम ने किसी मुत्तक़ी को कभी देखा भी है ? अरे नादान ! मुत्तक़ी कहलाने का ह़क़दार वोह शख़्स है कि अगर उस के सामने जहन्नम का ज़िक्र कर दिया जाए तो ख़ौफ़े इलाही के सबब उस की रूह़ परवाज़ कर जाए।" ﴿اولیائے رجال الحدیث ص۱۴۰﴾

(65) रूह़ परवाज़ कर गई.....

ह़ज़रते ज़ुरारा बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही आ़बिदो ज़ाहिद और ख़ौफ़े इलाही में डूबे हुवे आ़लिमे बा अ़मल थे। तिलावते क़ुरआन के वक़्त वईद व अ़ज़ाब की आयात पढ़ कर लरज़ा बर अन्दाम बल्कि कभी कभी ख़ौफ़े ख़ुदा से बेहोश हो जाते थे। एक दिन फ़ज्र की नमाज़ में जैसे ही आप ने येह आयत तिलावत की :

"فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوْرِ ۝ فَذٰلِکَ یَوْمَئِذٍ یَّوْمٌ عَسِیْرٌ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब सूर फूंका जाएगा तो वोह दिन कर्रा (या'नी सख़्त) दिन है।* (پ۲۹، المدثر ۸،۹)

तो नमाज़ की ह़ालत में ही आप पर ख़ौफ़े इलाही का इस क़दर ग़लबा हुवा कि लरज़ते कांपते हुवे ज़मीन पर गिर पड़े और आप की रूह़ परवाज़ कर गई। ﴿اولیائے رجال الحدیث ص۱۲۳﴾

www.dawateislami.net

﴾66﴿ ﴾बदन पर लरज़ा तारी हो जाता......﴿

हज़रते सय्यिदुना साबित बिन अस्लम बुनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ताबेई़ने बसरा के बड़े बा वक़ार और नामवर उ़-लमाए ह़दीस में से थे। आप पर ख़ौफ़े इलाही का बड़ा ग़लबा था। जब भी आप के सामने जहन्नम का तज़्किरा किया जाता तो ऐसे मुज़्त़रिब होते कि तड़पने लगते और बदन पर इतना लरज़ा त़ारी हो जाता कि जिस्म का कोई न कोई उ़ज़्व अलग हो जाता।

﴾اولیائے رجال الحدیث ص۹۱﴿

﴾67﴿ ﴾आंख की बीनाई जाती रही......﴿

हज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत जलीलुल क़द्र ताबेई़ हैं और इ़बादत व रियाज़त में इन का मक़ाम बहुत बुलन्द है। आप ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रातों को इस क़दर रोया करते थे कि आप की एक आंख की बीनाई रोने की वजह से जाती रही और इतने लाग़र हो गए कि बदन पर गोया हड्डी और खाल के इ़लावा कोई बोटी बाक़ी नहीं रह गई थी। ﴾اولیائے رجال الحدیث ص۳۷﴿

﴾68﴿ ﴾ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इन्तिक़ाल करने वाला....﴿

हज़रते मन्सूर बिन अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं कूफ़ा में रात के वक़्त एक गली से गुज़र रहा था कि अचानक एक दर्द भरी आवाज़ मेरी समाअ़त से टकराई, उस आवाज़ में इतना कर्ब था कि मेरे उठते हुवे क़दम रुक गए और मैं एक घर से आने वाली उस आवाज़ को ग़ौर से सुनने लगा।

मैं ने सुना कि **अल्लाह** तआ़ला का कोई बन्दा इन अल्फ़ाज़ में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात कर रहा था, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

तू ही मेरा मालिक है ! तू ही मेरा आक़ा है ! तेरे इस मिस्कीन बन्दे ने तेरी मुख़ालफ़त की बिना पर सियाह कारियों और बदकारियों का इर्तिकाब नहीं किया बल्कि नफ़्स की ख़्वाहिशात ने मुझे अन्धा कर दिया था और शैत़ान ने मुझे ग़लत़ राह पर डाल दिया था जिस की वजह से मैं गुनाहों की दलदल में फंस गया, ऐ **अल्लाह** ! अब तेरे ग़ज़ब और अ़ज़ाब से कौन मुझे बचाएगा ?''

(येह सुन कर) मैं ने बाहर खड़े खड़े येह आयते करीमा पढ़ी,

''یٰۤاَیُّهَاالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا یَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَیَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ0

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं, उस पर सख़्त करें (या'नी त़ाक़तवर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो* **अल्लाह** *का हुक्म नहीं टालते और जो इन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।* (پ۲۸، التحریم۶)

जब उस ने येह आयत सुनी तो उस के ग़म की शिद्दत में और इज़ाफ़ा हो गया और वोह शिद्दते कर्ब से चीख़ने लगा और मैं उसे इसी ह़ालत में छोड़ कर आगे बढ़ गया। दूसरे दिन सुब्ह़ के वक़्त मैं दोबारा उस घर के क़रीब से गुज़रा तो देखा कि एक मय्यित मौजूद है और लोग उस के कफ़न व दफ़्न के इन्तिज़ाम में मसरूफ़ हैं। मैं ने उन से दरयाफ़्त किया कि ''येह मरने वाला कौन था ?'' तो उन्हों ने जवाब दिया कि, ''मरने वाला एक नौजवान था जो सारी रात ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोता रहा और सह़री के वक़्त इन्तिक़ाल कर गया।'' ﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۵۲۰،رقم الحدیث ۹۳۷﴾

www.dawateislami.net

﴾69﴿ ﴾ कमर झुक जाने का सबब.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मन्क़ूल है कि आप की कमर जवानी ही में झुक गई थी। लोगों ने कई मरतबा इस की वजह जानने की कोशिश की लेकिन आप ने कोई जवाब नहीं दिया। आप का एक शागिर्द काफ़ी अ़र्से तक किसी मौक़अ़ की तलाश में रहा कि वोह आप से इस का सबब दरयाफ़्त कर सके। आख़िर एक दिन उस ने मौक़अ़ पा कर आप से इस बारे में पूछ ही लिया, आप ने पहले तो ह़स्बे साबिक़ कोई जवाब न दिया लेकिन फिर उस के मुसलसल इसरार पर फ़रमाया : "मेरे एक उस्ताज़ जिन का शुमार बड़े उ़-लमा में होता था और मैं ने उन से कई उ़लूमो फ़ुनून सीखे थे, जब उन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो मुझ से फ़रमाने लगे : "ऐ सुफ़्यान ! क्या तू जानता है कि मेरे साथ क्या मुआ़मला पेश आया ? मैं पचास साल तक मख़्लूक़े ख़ुदा को रब तआ़ला की इ़ताअ़त करने और गुनाहों से बचने की तल्क़ीन करता रहा, लेकिन अफ़्सोस ! आज जब मेरी ज़िन्दगी का चराग़ गुल होने को है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपनी बारगाह से येह फ़रमा कर निकाल दिया है कि तू मेरी बारगाह में आने की अहलिय्यत नहीं रखता।"

अपने उस्ताज़ की येह बात सुन कर बोझे इ़ब्रत से मेरी कमर टूट गई, जिस के टूटने की आवाज़ वहां मौजूद लोगों ने भी सुनी। मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू बहाता रहा, और नोबत यहां तक पहुंची कि मेरे पेशाब में भी ख़ून आने लगा और मैं बीमार हो गया। जब बीमारी शिद्दत इख़्तियार कर गई तो मैं एक नसरानी ह़कीम के पास गया। पहले पहल तो उसे मेरी बीमारी का पता न चल सका फिर उस ने ग़ौर से मेरे चेहरे का जाइज़ा लिया और मेरी नब्ज़ देखी और कुछ देर सोचने के बा'द कहने लगा : "मेरा ख़याल है कि इस वक़्त मुसलमानों में इस जैसा नौजवान कहीं न होगा कि इस का जिगर ख़ौफ़े इलाही की वजह से फट चुका है।" ﴾حکایات الصالحین ص ٤٦﴿

www.dawateislami.net

﴾70﴿ ﴾ आह ! मेरा क्या बनेगा ?.....﴿

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चालीस बरस तक नहीं हंसे। जब इन को बैठे हुवे देखा जाता तो यूं मा'लूम होता गोया एक क़ैदी हैं जिसे गर्दन उड़ाने के लिये लाया गया हो, और जब गुफ़्तगू फ़रमाते तो अन्दाज़ ऐसा होता गोया आख़िरत को आंखों से देख देख कर बता रहे हैं, और जब ख़ामोश रहते तो ऐसा महसूस होता गोया इन की आंखों में आग भड़क रही है। जब इन से इस क़दर ग़मगीन व ख़ौफ़ ज़दा रहने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : "मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि अगर **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे बा'ज़ ना पसन्दीदा आ'माल को देख कर मुझ पर ग़ज़ब फ़रमाया और येह फ़रमा दिया कि जाओ ! मैं तुम्हें नहीं बख़्शता। तो मेरा क्या बनेगा ?"

﴾احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٣١﴿

हर ख़ता तू दरगुज़र कर बे कसो मजबूर की
या इलाही عَزَّوَجَلَّ मग़फ़िरत कर बे कसो मजबूर की
नामए बदकार में हुस्ने अ़मल कोई नहीं
लाज रखना रोज़े महशर बे कसो मजबूर की

﴾71﴿ ﴾ ख़ून के आंसू.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़त्ह़ मौसिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो कि बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार थे, इन का मा'मूल था कि रोज़ाना रात को एक फ़ल्स (या'नी पुराने ज़माने का एक सिक्का) राहे ख़ुदा में ख़र्च किया करते थे। एक दिन आप अपने मुसल्ले पर बैठे ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब आंसू बहा रहे थे, कि आप का एक अ़ज़ीज़ शागिर्द ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। उस ने देखा कि आप ने अपना चेहरा हाथों में छुपा रखा है और आप की उंगलियां सुर्ख़ आंसूओं से तर हैं।

www.dawateislami.net

उस ने आप को रब तआ़ला का वासित़ा दे कर पूछा कि : "आप कब से ख़ून के आंसू रो रहे हैं ?" आप ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा न दिया होता तो मैं कभी न बताता, (फिर फ़रमाया :) सुनो ! मैं साठ साल से ख़ून के आंसू रो रहा हूं, मेरे बचपन ही में आंखों से आंसूओं के साथ साथ ख़ून भी निकल आता था।"

फिर जब आप का विसाल हो गया तो किसी ने आप को ख़्वाब में देखा और पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह तआ़ला ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया।" आप ने जवाब दिया : "मेरे रब ने मुझ से अपनी शान के लाइक़ सुलूक फ़रमाया, उस ने मुझे अ़र्श के साए में खड़ा कर के पूछा : "ऐ मेरे बन्दे ! तू इस क़दर क्यूं रोया करता था ?" तो मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ महज़ तेरे ख़ौफ़ और अपनी ख़त़ाओं पर नदामत के सबब ....." अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : "चालीस साल से रोज़ाना तेरा नामए आ'माल मेरे सामने पेश होता है लेकिन इस में कोई गुनाह नहीं होता।" ﴿حکایات الصالحین، ص ٤٧﴾

﴿72﴾ ﴿मिट्टी हो जाना पसन्द करूंगा.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह मुतर्रफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : "अगर कोई मुझे रब तआ़ला की त़रफ़ से येह इख़्तियार दे कि या तो मैं अपना दोज़ख़ी या जन्नती होना जान लूं, या फिर मिट्टी में मिल कर ख़ाक हो जाऊं तो मैं वहीं मिट्टी हो जाना पसन्द करूंगा।"

﴿شعب الایمان ج١، ص٥٢٠، رقم الحدیث ٩١٢﴾

www.dawateislami.net

﴾73﴿ ﴾ नेकियों का पलड़ा भारी है या गुनाहों का ?...﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा क़ब्रिस्तान के पास से गुज़र रहे थे कि आप ने देखा कि लोग एक मुर्दे को दफ़्न कर रहे हैं। येह देख कर आप भी उन के क़रीब जा कर खड़े हो गए और क़ब्र के अन्दर झांक कर देखने लगे। अचानक आप ने रोना शुरूअ़ कर दिया और इतना रोए कि ग़श खा कर ज़मीन पर गिर पड़े। लोग मुर्दे को दफ़्न करने के बा'द आप को चारपाई पर डाल कर घर ले आए।

कुछ देर बा'द ह़ालत संभली और आप होश में आए तो लोगों से फ़रमाया : "अगर मुझे येह ख़दशा न होता कि लोग मुझे पागल समझेंगे और गली के बच्चे मेरे पीछे शोर मचाएंगे तो मैं फटे पुराने कपड़े पहनता, सर में ख़ाक डालता और बस्ती बस्ती घूम कर लोगों से कहता : "ऐ लोगो जहन्नम की आग से बचो।" और लोग मेरी येह ह़ालत देखने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी न करते।"

फिर जब आप के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो अपने शागिर्दों को येह वसिय्यत फ़रमाई कि

"मैं ने तुम्हें जो कुछ सिखाया, उस का ह़क़ अदा करना, और जब मैं मर जाऊं तो मेरी पेशानी पर (बिग़ैर रोशनाई के) येह लिखवा देना : "येह मालिक बिन दीनार है जो अपने आक़ा का भागा हुवा ग़ुलाम है।" फिर मुझे क़ब्रिस्तान ले जाने के लिये चारपाई पर मत डालना बल्कि मेरी गर्दन में रस्सी डाल कर हाथ पाउं बांध कर इस त़रह़ ले जाना जैसे किसी भागे हुवे ग़ुलाम को बांध कर मुंह के बल घसीटते हुवे उस के आक़ा के पास ले जाया जाता है और क़ियामत के दिन जब मुझे क़ब्र से उठाया जाए तो तीन चीज़ों पर ग़ौर करना, पहली चीज़ कि उस दिन मेरा चेहरा सियाह होता है या सफ़ेद, दूसरी चीज़ कि जब आ'माल नामे तक़्सीम किये जा रहे हों तो मुझे नामए आ'माल दाएं

www.dawateislami.net

हाथ में मिलता है या बाएं में, तीसरी चीज़ येह कि जब मैं मीज़ाने अ़द्ल के पास खड़ा किया जाऊं तो मेरी नेकियों का पलड़ा भारी है या गुनाहों का ?''

येह कह कर आप ज़ारो क़ित़ार रोने लगे और काफ़ी देर आंसू बहाने के बा'द इरशाद फ़रमाया : ''काश ! मेरी मां ने मुझे न जना होता कि मुझे क़ियामत की हौलनाकियों और हलाकतों की ख़बर ही न होती और न ही मुझे इन का सामना करना पड़ता ।'' फिर जब रात का वक़्त हुवा तो आप की ह़ालत ग़ैर होने लगी, उसी वक़्त ग़ैब से आवाज़ आई कि ''मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ियामत की हौलनाकियों और दहशतों से अम्न पा गया ।'' आप के एक शागिर्द ने येह आवाज़ सुनी तो दौड़ कर आप के पास पहुंचा, उस ने देखा कि आप पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी थी और आप अंगुश्ते शहादत आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर के कलिमए त़य्यिब का विर्द कर रहे थे, आप ने आख़िरी मरतबा ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللہِ'' कहा और आप की रूह़ परवाज़ कर गई । ﴿حکایات الصالحین، ص ٤٨﴾

﴾74﴿ ﴾रोज़ाना का एक गुनाह भी हो तो ?.....﴿

पिछली उम्मतों में से एक बुज़ुर्ग जिन का नाम ज़ैद बिन समत (عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ) था, एक दिन अपने साथियों से फ़रमाने लगे : ''मेरे दोस्तो ! आज जब मैं ने अपनी उ़म्र का ह़िसाब लगाया तो मेरी उ़म्र साठ साल बनती है और इन सालों के दिन बनाए जाएं तो इक्कीस हज़ार छे सौ बनते हैं । मैं येह सोचता हूं कि अगर हर रोज़ मैं ने एक गुनाह भी किया हो तो क़ियामत के दिन मुझे निहायत मुश्किल का सामना करना पड़ेगा कि मैं तो किसी एक गुनाह का भी ह़िसाब न दे पाऊंगा ।'' येह कहने के बाद इन्हों ने सर से इ़मामा उतारा और ज़ारो क़ित़ार रोना शुरूअ़ कर दिया, यहां तक कि बेहोश हो गए । कुछ देर बा'द इन्हें इफ़ाक़ा हुवा तो फिर रोने लगे और इतनी शिद्दत से गिर्या व ज़ारी की, कि इन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई । ﴿حکایات الصالحین، ص ٤٩﴾

www.dawateislami.net

﴾75﴿ ﴾चालीस साल तक आस्मान की त़रफ़ न देखा....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन्हों ने ख़ौफ़े ख़ुदा की वजह से चालीस साल तक आस्मान की त़रफ़ नहीं देखा और न ही किसी ने इन्हें मुस्कुराते हुवे देखा, इन के बारे में मन्क़ूल है कि जब आप रोना शुरूअ़ करते तो तीन दिन और तीन रात मुसलसल रोते रहते। इसी त़रह़ जब कभी आस्मान पर बादल ज़ाहिर होते और बिजली कड़कती तो आप के दिल की धड़कन तेज़ हो जाती, बदन कांपना शुरूअ़ हो जाता, आप बेताब हो कर कभी बैठ जाया करते और कभी खड़े हो जाते और साथ ही रोते हुवे कहते : "शायद मेरी लग़्ज़िशों और गुनाहों की वजह से अहले ज़मीन को किसी मुसीबत में मुब्तला किया जाने वाला है, जब मैं मर जाऊंगा तो लोगों को भी सुकून ह़ासिल हो जाएगा।"

इस के इ़लावा आप रोज़ाना अपने नफ़्स को मुख़ात़ब कर के फ़रमाते : "ऐ नफ़्स ! तू अपनी ह़द में रह और याद रख तुझे क़ब्र में भी जाना है, पुल सिरात़ से भी गुज़रना है, दुश्मन (या'नी आंकड़े) तेरे इर्द गिर्द मौजूद होंगे जो तुझे दाएं बाएं खींचेंगे, उस वक़्त क़ाज़ी, रब तआ़ला की ज़ात होगी और जेल, जहन्नम होगी जब कि उस का दारोग़ा सय्यिदुना मालिक عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। उस दिन का क़ाज़ी ना इन्साफ़ी की त़रफ़ माइल नहीं होगा और न दारोग़ा कोई रिश्वत क़बूल करेगा (مَعَاذَاللّٰہ) और न ही जेल तोड़ना मुमकिन होगा कि तू वहां से फ़रार हो सके, क़ियामत के दिन तेरे लिये हलाकत ही हलाकत है। इस का भी इ़ल्म नहीं कि फ़िरिश्ते तुझे कहां ले जाएंगे, इ़ज़्ज़त व आराम के मक़ाम **जन्नत** में या ह़सरत और तंगी की जगह **जहन्नम** में ?....." इस दौरान आप की चश्माने मुबारक से आंसू भी बहते रहते।

www.dawateislami.net

जब आप का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को ख़्वाब में देखा और पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह तआ़ला ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ?" तो आप ने जवाबन इरशाद फ़रमाया कि "रब तआ़ला ने मुझे अबदी इ़ज़्ज़त अ़त़ा की है और बहुत सी ने'मतों से नवाज़ा है।" येह सुन कर ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : " आप दुन्या में तो बड़े ग़मज़दा और परेशान रहा करते थे और हर वक़्त रोते रहते थे, बताइये ! अब क्या ह़ाल है ?" तो आप ने जवाब दिया : "अब तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से बहुत ख़ुश हूं और मुस्कुराता रहता हूं, मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ नेक बन्दे ! तू इस क़दर गिर्या व ज़ारी क्यूं किया करता था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरे ख़ौफ़ की वजह से।" तो अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे बन्दे ! क्या तुझे इ़ल्म न था कि मैं बड़ा ग़फ़ूर और मेहरबान हूं।" (और मेरी बख़्शिश फ़रमा दी) ﴿حکایات الصالحین، ص ۵۰﴾

﴿76﴾ ﴿क़ियामत का इमतिह़ान.....﴾

मरवी है कि एक शख़्स का छोटा बच्चा उस के साथ बिस्तर पर सोया करता था। एक रात वोह बच्चा बहुत बेचैन हुवा और सोया नहीं। उस के बाप ने पूछा : "प्यारे बेटे ! क्या कहीं तक्लीफ़ है ?" तो बच्चे ने अ़र्ज़ की : "अब्बा जान ! नहीं, लेकिन कल जुमा'रात है जिस में पूरे हफ़्ते के दौरान पढ़ाए जाने वाले अस्बाक़ का इमतिह़ान होता है और मुझे येह ख़ौफ़ खाए जा रहा है कि अगर मैं ने सबक़ सह़ीह़ न सुनाया तो उस्ताज़ साह़िब मुझ से नाराज़ होंगे और सज़ा देंगे।" येह सुन कर उस शख़्स ने ज़ोर से चीख़ मारी और अपने सर पर मिट्टी डाल कर रोने लगा और कहने लगा : "मुझे इस बच्चे की

www.dawateislami.net

निस्बत ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा होना चाहिये कि कल क़ियामत के दिन मुझे दुन्या में किये गए गुनाहों का ह़िसाब अपने रब तआ़ला की बारगाह में देना है।" ﴿درۃ الناصحین ،المجلس الخامس والستون ،ص۲۹۵﴾

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया
ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह क्या हो गया ?
कुछ मेरे बचने की सूरत कीजिये
अब तो जो होना था मौला हो गया !

(ज़ौक़े ना'त)

﴾77﴿ ﴾ जन्नती हूर के तबस्सुम का नूर......﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के शागिर्दों ने आप के ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ, कसरते इबादत और फ़िक्रे आख़िरत को देख कर अ़र्ज़ की : "ऐ उस्ताज़े मोह़तरम ! आप इस से कम दरजे की कोशिश के ज़रीए़ भी अपनी मुराद पा लेंगे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ।" येह सुन कर आप ने फ़रमाया : "मैं कैसे ज़ियादा कोशिश न करूं जब कि मुझे मा'लूम हुवा है कि अहले जन्नत अपने मक़ाम और मनाज़िल में मौजूद होंगे कि अचानक उन पर नूर की एक तजल्ली पड़ेगी जिस से आठों जन्नतें जगमगा उठेगी। जन्नती गुमान करेंगे कि येह अल्लाह तआ़ला की ज़ात का नूर है और सजदे में गिर जाएंगे फिर उन्हें निदा की जाएगी : "ऐ लोगों ! अपने सर को उठाओ, येह वोह नहीं जिस का तुम्हें गुमान हुवा बल्कि येह जन्नती औ़रत के उस तबस्सुम का नूर है जो उस ने अपने शोहर के सामने किया है।" फिर ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह अश्आ़र पढ़े :

www.dawateislami.net

ماضر من كانت الفردوس مسكنه　　ماذا تحمل من بؤس و اقتار

تراه يمشى كئيبا خائفا وجلا　　الى المساجد يمشى بين اطمار

يانفس مالک من صبر على لهب　　قد حان ان تقبلى من بعد ادبار

या'नी

❁ मशक़्क़त व तंगी बरदाश्त करना उस के लिये नुक़्सान देह नहीं, जिस का मस्कन और जाए क़रार जन्नतुल फ़िरदौस है।

❁ ऐसा शख़्स दुन्या में ग़मज़दा, ख़ाइफ़ और मुआ़मलाते आख़िरत से डरता रहता है। आ़जिज़ी व मिस्कीनी का लिबास ज़ेबे तन किये अदाए नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ उस की आमदो रफ़्त जारी रहती है।

❁ ऐ नफ़्स ! तुझ में आतशे दोज़ख़ के शो'ले बरदाश्त करने की सकत नहीं है और बुरे आ'माल की वजह से क़रीब है कि तुझे ज़लीलो ख़्वार होने के बा'द वोह अ़ज़ाब बरदाश्त करना पड़े। ﴿منہاج العابدین، ص ۱۵۲﴾

﴿78﴾ ﴾ इज़हार किस से करूं ?.......﴿

हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ की निय्यत करते वक़्त बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करते : "ऐ मालिको मौला तेरी बारगाह में ह़ाज़िरी के लिये कौन से पाउं लाऊं, किन आंखों से क़िब्ले की जानिब नज़र करूं, ता'रीफ़ के वोह कौन से अल्फ़ाज़ हैं जिन से तेरी ह़म्द करूं ? लिहाज़ा ! मजबूरन ह़या को तर्क कर के तेरे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हो रहा हूं।" फिर आप नमाज़ की निय्यत बांध लेते। अकसर अल्लाह तआ़ला से येह भी अ़र्ज़ करते : "आज मुझे जिन मसाइब का सामना है, वोह तेरे सामने अ़र्ज़ कर देता हूं, लेकिन कल मैदाने मह़शर में मेरी बद आ'मालियों की

www.dawateislami.net

वजह से जो अज़िय्यत पहुंचेगी, उस का इज़हार किस से करूं ? लिहाज़ा ! ऐ रब्बल आ़लमीन ! मुझे अ़ज़ाब की नदामत से छुटकारा अ़ता फ़रमा दे ।''

﴿تذکرۃ الاولیاء ص۱۱۹﴾

﴿79﴾ ﴿मैं मुजरिमों में से हूं.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसव्वर बिन मह़ज़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शिद्दते ख़ौफ़ की वजह से कुरआने पाक में कुछ सुनने पर क़ादिर न थे, यहां तक कि इन के सामने एक ह़र्फ़ या कोई आयत पढ़ी जाती तो चीख़ मारते और बेहोश हो जाते, फिर कई दिन तक इन को होश न आता । एक दिन क़बीलए ख़शअ़म का एक शख़्स इन के सामने आया और उस ने येह आयत पढ़ी :

یَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِیْنَ اِلَی الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۝ وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِیْنَ اِلٰی جَهَنَّمَ وِرْدًا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस दिन हम परहेज़गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर, और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे ।*

﴿پ۱۶، مریم ۸۵، ۸۶﴾

येह सुन कर आप ने फ़रमाया : ''आह ! मैं मुजरिमों में से हूं और मुत्तक़ी लोगों में से नहीं हूं, ऐ क़ारी ! दोबारा पढ़ो ।'' उस ने फिर पढ़ा तो आप ने एक ना'रा मारा और आप की रूह़ क़फ़से उ़नसुरी से परवाज़ कर गई । ﴿احیاء العلوم ، ج ٤، ص ٢٢٦﴾

﴿80﴾ ﴿चार माह बीमार रहे.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बका (या'नी बहुत रोने वाले) (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के सामने येह आयत पढ़ी गई :

وَلَوْ تَرٰۤی اِذْ وُقِفُوْا عَلٰی رَبِّهِمْ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और कभी तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे ।* (پ۷، الانعام ۳۰)

www.dawateislami.net

तो येह आयत सुन कर उन की चीख़ निकल गई और वोह चार माह तक बीमार रहे ह़त्ता कि बसरा के अत़राफ़ के लोग आप की इ़यादत को आते रहे। ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٦﴾

﴿81﴾ सर पर हाथ रख कर पुकार उठे.....

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर रहा था कि मैं ने एक इ़बादत गुज़ार कनीज़ को देखा जो का'बए मुशर्रफ़ा के पर्दों से लटकी हुई थी और कह रही थी : "कितनी ही ख़्वाहिशात हैं जिन की लज़्ज़त चली गई और सज़ा बाक़ी है, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ क्या तेरे हां जहन्नम के सिवा कोई और अ़ज़ाब नहीं है ?" येह कह कर वोह मुसलसल रोती रही ह़त्ता कि फ़ज्र का वक़्त हो गया। जब मैं ने उस की येह ह़ालत देखी तो अपने सर पर हाथ रख कर चिल्ला उठा : "मालिक पर उस की मां रोए। (या'नी हमारा क्या बनेगा ?)" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٦﴾

﴿82﴾ तुझ से ह़या आती है.....

मन्क़ूल है कि यौमे अ़रफ़ा में लोग दुआ़ मांगने में मसरूफ़ थे और ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी गुमशुदा बच्चे की दिल जली मां की त़रह़ रो रहे थे। जब सूरज ग़ुरूब होने के क़रीब हुवा तो आप ने अपनी दाढ़ी पकड़ कर आस्मान की त़रफ़ देखा और कहा : "अगर तू मुझे बख़्श भी दे तो फिर भी मुझे तुझ से बहुत ह़या आती है।" फिर लोगों के हमराह वापस हो लिये।

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٦﴾

www.dawateislami.net

﴾83﴿ ﴾हंसते हुवे नहीं देखा.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक जवान के पास से गुज़रे जो लोगों के दरमियान बैठा हंसने में मश्ग़ूल था। आप ने फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! क्या तू पुल सिरात़ पार कर चुका है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" फ़रमाया : "क्या तुझे मा'लूम है कि तू जन्नत में जाएगा या जहन्नम में ?" उस ने कहा : "जी नहीं।" तो आप ने पूछा : फिर येह हंसी कैसी है ?" इस के बा'द उस नौजवान को हंसते हुवे नहीं देखा गया।

﴾احیاء العلوم ، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٧﴿

﴾84﴿ ﴾क्या जहन्नम से निकलने में कामयाब हो जाएंगे..﴿

ह़ज़रते इब्ने मैसरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब अपने बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते : काश ! मेरी मां मुझे न जनती।" उन की वालिदा ने एक मरतबा फ़रमाया : "ऐ मैसरा ! क्या **अल्लाह** तआ़ला ने तुझ से अच्छा सुलूकनहीं किया कि तुझे इस्लाम की दौलत अ़त़ा फ़रमाई ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! येह ठीक है लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने येह तो फ़रमाया है कि हम जहन्नम में जाएंगे (या'नी पुल सिरात़ से गुज़रेंगे) लेकिन येह नहीं फ़रमाया कि उस से निकलने में भी कामयाब हो जाएंगे।"

﴾احیاء العلوم ، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٨﴿

﴾85﴿ ﴾गुनाह याद आ गया.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम चन्द लोग एक मरतबा बाहर निकले। हम में बूढ़े भी थे और नौजवान भी जो फ़ज्र की नमाज़ इ़शा के वुज़ू से पढ़ते थे ह़त्ता कि त़वील क़ियाम की वजह से उन के पाउं सूज गए थे और आंखें अन्दर को धंस चुकी थीं, उन की जिल्द का

www.dawateislami.net

चमड़ा हड्डियों से मिल गया था और रगें बारीक तारों की मिस्ल मा'लूम होती थी उन की हालत ऐसी हो गई थी कि गोया उन की जिल्द तरबूज़ का छिलका हो और वोह क़ब्रों से निकल कर आ रहे हों। हमारे दरमियान येह गुफ़्तगू चल रही थी कि किस तरह **अल्लाह** तआ़ला ने इताअ़त गुज़ार लोगों को इ़ज़्ज़त बख़्शी और नाफ़रमान लोगों को ज़लील किया, कि इसी दौरान उन में से एक नौजवान बेहोश हो कर गिर गया और उस के दोस्त उस के गिर्द बैठ कर रोने लगे। सख़्त सर्दी के बा वुजूद उस के माथे पर पसीना आया हुवा था। पानी ला कर उस के चेहरे पर छिड़का गया तो उसे इफ़ाक़ा हुवा। जब उस से माजरा पूछा गया तो उस ने कहा कि "मुझे येह याद आ गया था कि मैं ने इस जगह **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी की थी !"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٩﴾

﴿86﴾ ﴿इन्तिक़ाल कर गए.....﴾

हज़रते सय्यिदुना ज़ुरारा बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ाते हुवे येह आयत पढ़ी :

فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوْرِ ۝ فَذٰلِکَ یَوْمَئِذٍ یَّوْمٌ عَسِیْرٌ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब सूर फूंका जाएगा तो वोह दिन कर्रा (सख़्त) दिन है।"* ﴿المدثر:٨،٩﴾ तो आप बेहोश हो कर गिर पड़े और इन्तिक़ाल कर गए। ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٩﴾

﴿87﴾ ﴿तेरे किस रुख़्सार को कीड़ों ने खाया होगा ?....﴾

हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़ातून को देखा जो अपने बच्चे की क़ब्र के सिरहाने रो रही थी और कह रही थी : "ऐ मेरे बेटे ! मा'लूम नहीं तेरे किस रुख़्सार को कीड़ों ने पहले खाया होगा ?" येह सुन कर हज़रते दावूद ताई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक चीख़ मारी और उसी जगह गिर गए।

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٢٩﴾

www.dawateislami.net

﴾88﴿ ﴿ जन्नत का दरवाज़ा खुलता है या दोज़ख़ का ?...﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना सरूकुल अजवअ़ ताबेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतनी लम्बी नमाज़ अदा फ़रमाते कि इन के पाउं सूज जाया करते थे और येह देख कर इन के घर वालों को इन पर तरस आता और वोह रोने लगते। एक दिन इन की वालिदा ने कहा : "मेरे बेटे : तू अपने कमज़ोर जिस्म का ख़याल क्यूं नहीं करता ? इस पर इतनी मशक़्क़त क्यूं लादता है ? तुझे इस पर ज़रा रह़्म नहीं आता ? कुछ देर के लिये आराम कर लिया करो, क्या अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम की आग सिर्फ़ तेरे लिये पैदा की है कि तेरे इ़लावा कोई उस में फेंका नहीं जाएगा ?" इन्हों ने जवाबन अ़र्ज़ की : "अम्मी जान ! इन्सान को हर ह़ाल में मुजाहदा करना चाहिये क्यूंकि क़ियामत के दिन दो ही बातें होंगी, या तो मुझे बख़्श दिया जाएगा या फिर मेरी पकड़ हो जाएगी, अगर मेरी मग़फ़िरत हो गई तो येह महज़ अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उस की रह़मत होगी और अगर मैं पकड़ा गया तो येह उस का अ़द्ल होगा, लिहाज़ा अब मैं आराम नहीं करूंगा और अपने नफ़्स को मारने की पूरी कोशिश करता रहूंगा।

जब इन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो इन्हों ने गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी। लोगों ने पूछा : "आप ने तो सारी उ़म्र मुजाहदों और रियाज़तों में गुज़ारी है, अब क्यूं रो रहे हैं ?" तो आप ने फ़रमाया : "मुझ से ज़ियादा किस को रोना चाहिये कि मैं सत्तर साल तक जिस दरवाज़े को ख़ट-खटाता रहा, आज उसे खोल दिया जाएगा लेकिन येह नहीं मा'लूम कि जन्नत का दरवाज़ा खुलता है या दोज़ख़ का....., काश ! मेरी मां ने मुझे जनम न दिया होता और मुझे येह मशक़्क़त न देखना पड़ती।"

﴿حکایات الصالحین، ص۳۶﴾

www.dawateislami.net

﴾89﴿ ﴾अपने रब तआ़ला को राज़ी कर लो....﴿

मरवी है कि ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मा'मूल था कि जब रात होती और सब लोग सो जाते तो अपने आप से मुख़ातब हो कर कहती : "ऐ राबिआ़ (हो सकता है कि) येह तेरी ज़िन्दगी की आख़िरी रात हो, हो सकता है कि तुझे कल का सूरज देखना नसीब न हो चुनान्चे, उठ और अपने रब तआ़ला की इबादत कर ले ताकि कल क़ियामत में तुझे नदामत का सामना न करना पड़े, हिम्मत कर, सोना मत, जाग कर अपने रब की इबादत कर.....।"

येह कहने के बा'द आप उठ खड़ी होतीं और सुब्ह़ तक नवाफ़िल अदा करती रहतीं। जब फ़ज्र की नमाज़ अदा कर लेतीं तो अपने आप को दोबारा मुख़ातब कर के फ़रमातीं : "ऐ मेरे नफ़्स ! तुम्हें मुबारक हो कि गुज़श्ता रात तूने बड़ी मशक़्क़त उठाई लेकिन याद रख कि येह दिन तेरी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन हो सकता है।" येह कह कर फिर इबादत में मश्ग़ूल हो जातीं और जब नींद का ग़लबा होता तो उठ कर घर में टहलना शुरूअ़ कर देतीं और साथ साथ ख़ुद से फ़रमाती जातीं : "राबिआ़ ! येह भी कोई नींद है, इस का क्या लुत्फ़ ? इसे छोड़ दो और क़ब्र में मज़े से लम्बी मुद्दत के लिये सोती रहना, आज तो तुझे ज़ियादा नींद नहीं आई लेकिन आने वाली रात में नींद ख़ूब आएगी, हिम्मत करो और अपने रब को राज़ी कर लो।"

इस त़रह़ करते करते आप ने पचास साल गुज़ार दिये कि आप न तो कभी बिस्तर पर दराज़ हुईं और न ही कभी तकये पर सर रखा यहां तक कि आप इन्तिक़ाल कर गईं। ﴾حکایات الصالحین ص ۳۹﴿

www.dawateislami.net

﴾90﴿ ﴾गारा बनाने वाला मज़दूर.....﴿

एक नेक शख़्स के घर की दीवार अचानक गिर गई। उसे बड़ी परेशानी लाहिक़ हुई और वोह उसे दोबारा बनवाने के लिये किसी मज़दूर की तलाश में घर से निकला और चौराहे पर जा पहुंचा। वहां उस ने मुख़्तलिफ़ मज़दूरों को देखा जो काम के इन्तिज़ार में बैठे थे। उन में एक नौजवान भी था जो सब से अलग थलग खड़ा था, उस के एक हाथ में थेला और दूसरे हाथ में तीशा था।

उस शख़्स का कहना है कि,

"मैं ने उस नौजवान से पूछा : "क्या तुम मज़दूरी करोगे?" नौजवान ने जवाब दिया : "हां ! मैं ने कहा : "गारे का काम करना होगा।" नौजवान कहने लगा : "ठीक है ! लेकिन मेरी तीन शर्तें हैं अगर तुम्हें मन्ज़ूर हों तो मैं काम करने के लिये तय्यार हूं, पहली शर्त येह है कि तुम मेरी मज़दूरी पूरी अदा करोगे, दूसरी शर्त येह है कि मुझ से मेरी ताक़त और सिह्हत के मुताबिक़ काम लोगे और तीसरी शर्त येह है कि नमाज़ के वक़्त मुझे नमाज़ अदा करने से नहीं रोकोगे।" मैं ने येह तीनों शर्तें क़बूल कर लीं और उसे साथ ले कर घर आ गया, जहां मैं ने उसे काम बताया और किसी ज़रूरी काम से बाहर चला गया। जब मैं शाम के वक़्त वापस आया तो देखा कि उस ने आम मज़दूरों से दो गुना काम किया था। मैं ने ब ख़ुशी उस की उजरत अदा की और वोह चला गया।

दूसरे दिन मैं उस नौजवान की तलाश में दोबारा उस चौराहे पर गया लेकिन वोह मुझे नज़र नहीं आया। मैं ने दूसरे मज़दूरों से उस के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि वोह हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन मज़दूरी करता है। येह सुन कर मैं समझ गया कि वोह आम मज़दूर नहीं बल्कि कोई बड़ा आदमी है। मैं ने उन से उस का पता मा'लूम किया और

www.dawateislami.net

उस जगह पहुंचा तो देखा कि वोह नौजवान ज़मीन पर लैटा हुवा था और उसे सख़्त बुख़ार था। मैं ने उस से कहा : "मेरे भाई ! तू यहां अजनबी है, तन्हा है और फिर बीमार भी है, अगर पसन्द करो तो मेरे साथ मेरे घर चलो और मुझे अपनी ख़िदमत का मौक़अ़ दो।" उस ने इन्कार कर दिया लेकिन मेरे मुसलसल इसरार पर मान गया लेकिन एक शर्त़ रखी कि वोह मुझ से खाने की कोई शै नहीं लेगा, मैं ने उस की येह शर्त़ मन्ज़ूर कर ली और उसे अपने घर ले आया।

वोह तीन दिन मेरे घर क़ियाम पज़ीर रहा लेकिन उस ने न तो किसी चीज़ का मुत़ालबा किया और न ही कोई चीज़ ले कर खाई। चौथे रोज़ उस के बुख़ार में शिद्दत आ गई तो उस ने मुझे अपने पास बुलाया और कहने लगा : "मेरे भाई ! लगता है कि अब मेरा आख़िरी वक़्त क़रीब आ गया है लिहाज़ा जब मैं मर जाऊं तो मेरी इस वसिय्यत पर अ़मल करना कि : "जब मेरी रूह़ जिस्म से निकल जाए तो मेरे गले में रस्सी डालना और घसीटते हुवे बाहर ले जाना और अपने घर के इर्द गिर्द चक्कर लगवाना और येह सदा देना कि लोगो ! देख लो अपने रब तआ़ला की नाफ़रमानी करने वालों का येह ह़श्र होता है।" शायद इस त़रह़ मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआ़फ़ कर दे। जब तुम मुझे ग़ुस्ल दे चुको तो मुझे इन्हीं कपड़ों में दफ़्न कर देना फिर बग़दाद में ख़लीफ़ा हारून रशीद के पास जाना और येह क़ुरआने मजीद और अंगूठी उन्हें देना और मेरा येह पैग़ाम भी देना कि : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ! कहीं ऐसा न हो कि ग़फ़्लत और नशे की ह़ालत में मौत आ जाए और बा'द में पछताना पड़े, लेकिन फिर इस से कुछ ह़ासिल न होगा।"

वोह नौजवान मुझे येह वसिय्यत करने के बा'द इन्तिक़ाल कर गया। मैं उस की मौत के बा'द काफ़ी देर तक आंसू बहाता रहा और गमज़दा रहा। फिर (न चाहते हुवे भी) मैं ने उस की वसिय्यत पूरी करने के

www.dawateislami.net

लिये एक रस्सी ली और उस की गर्दन में डालने का क़स्द किया तो कमरे के एक कोने से निदा आई कि : "इस के गले में रस्सी मत डालना, क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया से ऐसा सुलूक किया जाता है?" येह आवाज़ सुन कर मेरे बदन पर कपकपी त़ारी हो गई। येह सुनने के बा'द मैं ने उस के पाउं को बोसा दिया और उस के कफ़न व दफ़न का इन्तिज़ाम करने चला गया।

उस की तदफ़ीन से फ़ारिग़ होने के बा'द मैं उस का क़ुरआने पाक और अंगूठी ले कर ख़लीफ़ा के महल की जानिब रवाना हो गया। वहां जा कर मैं ने उस नौजवान का वाक़िआ एक काग़ज़ पर लिखा और महल के दारोग़ा से इस सिलसिले में बात करना चाही तो उस ने मुझे झिड़क दिया और अन्दर जाने की इजाज़त देने के बजाए अपने पास बिठा लिया। आख़िरे कार ! ख़लीफ़ा ने मुझे अपने दरबार में त़लब किया और कहने लगा : "क्या मैं इतना ज़ालिम हूं कि मुझ से बराहे रास्त बात करने की बजाए रुक़ए का सहारा लिया?" मैं ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह तआ़ला आप का इक़्बाल बुलन्द करे, मैं किसी ज़ुल्म की फ़रयाद ले कर नहीं आया बल्कि एक पैग़ाम ले कर ह़ाज़िर हुवा हूं।" ख़लीफ़ा ने उस पैग़ाम के बारे में दरयाफ़्त किया तो मैं ने वोह क़ुरआने मजीद और अंगूठी निकाल कर उस के सामने रख दी। ख़लीफ़ा ने उन चीज़ों को देखते ही कहा : "येह चीज़ें तुझे किस ने दी हैं?" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक गारा बनाने वाले मज़दूर ने.....।" ख़लीफ़ा ने इन अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराया, "गारा बनाने वाला? गारा बनाने वाला? गारा बनाने वाला.....?" और रो पड़ा। काफ़ी देर रोने के बा'द मुझ से पूछा : "वोह गारा बनाने वाला अब कहां है?" मैं ने जवाब दिया : "वोह मज़दूर फ़ौत हो चुका है।" येह सुन कर ख़लीफ़ा बेहोश हो कर गिर गया और अ़स्र तक बेहोश रहा। मैं इस दौरान ह़ैरानो परेशान वहीं मौजूद रहा। फिर जब ख़लीफ़ा को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो मुझ

www.dawateislami.net

से दरयाफ़्त किया : "उस की वफ़ात के वक़्त तुम उस के पास थे ?" मैं ने इसबात में सर हिला दिया तो कहने लगा : "उस ने तुझे कोई वसिय्यत भी की थी ?" मैं ने उसे नौजवान की वसिय्यत बताई और वोह पैग़ाम भी दे दिया जो उस नौजवान ने ख़लीफ़ा के लिये छोड़ा था !

जब ख़लीफ़ा ने येह सारी बातें सुनीं तो मज़ीद ग़मगीन हो गया और अपने सर से इमामा उतार दिया, अपने कपड़े चाक कर डाले और कहने लगा : "ऐ मुझे नसीहत करने वाले ! ऐ मेरे ज़ाहिदो पारसा ! ऐ मेरे शफ़ीक़ !....." इस तरह के बहुत से अल्क़ाबात ख़लीफ़ा ने उस मरने वाले नौजवान को दिये और मुसलसल आंसू भी बहाता रहा। येह सारा मुआमला देख कर मेरी हैरानी और परेशानी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया कि ख़लीफ़ा एक आम से मज़दूर के लिये इस क़दर ग़मज़दा क्यूं है ? जब रात हुई तो ख़लीफ़ा ने मुझ से उस की क़ब्र पर ले जाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो मैं उस के साथ हो लिया। ख़लीफ़ा चादर में मुंह छुपाए मेरे पीछे पीछे चलने लगा। जब हम क़ब्रिस्तान में पहुंचे तो मैं ने एक क़ब्र की तरफ़ इशारा कर के कहा : "आली जाह ! येह उस नौजवान की क़ब्र है।"

ख़लीफ़ा उस की क़ब्र से लिपट कर रोने लगा। फिर कुछ देर रोने के बा'द उस की क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो गया और मुझ से कहने लगा : "येह नौजवान मेरा बेटा था, मेरी आंखों की ठन्डक और मेरे जिगर का टुकड़ा था, एक दिन येह रक़्सो सुरूद की महफ़िल में गुम था कि मक्तब में किसी बच्चे ने येह आयते करीमा तिलावत की :

"اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाए* ***अल्लाह*** *की याद (के लिये)।* (پ۲۷،الحدید۱۶)

www.dawateislami.net

जब इस ने येह आयत सुनी तो अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से थर थर कांपने लगा और इस की आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई और येह पुकार पुकार कर कहने लगा : "क्यूं नहीं ? क्यूं नहीं ?" और येह कहते हुवे मह़ल के दरवाज़े से बाहर निकल गया । उस दिन से हमें इस के बारे में कोई ख़बर न मिली यहां तक कि आज तुम ने इस की वफ़ात की ख़बर दी ।"

﴿حکایات الصالحین،ص ٦٧﴾

﴾91﴿ ﴾मुझे अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी का ख़ौफ़ नहीं...﴿

ह़ज़रते अ़लक़मा बिन अस्वद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुना आ़मिर बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और इन्हिमाक के साथ नमाज़ अदा करने वाला कोई न पाया । अकसर ऐसा होता कि शैत़ाने मलऊ़न एक बहुत बड़े अज़्दहे की सूरत इख़्तियार कर के मस्जिद में घुस जाता और लोग उस के ख़ौफ़ से इधर उधर दौड़ने लगते बल्कि बा'ज़ तो मस्जिद ही से निकल भागते । लेकिन वोही सांप जब ह़ज़रते आ़मिर बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़मीज़ में दाख़िल होता और अपना मुंह गिरेबान से बाहर निकालता तो आप उस की मुत़लक़न परवाह न करते और इसी त़रह़ ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ नमाज़ अदा करने में मसरूफ़ रहते । एक दिन लोगों ने आप से पूछा : "ह़ुज़ूर ! क्या आप को इतने बड़े सांप से ख़ौफ़ नहीं आता ?" आप ने जवाब दिया : "मुझे अल्लाह के सिवा किसी से ख़ौफ़ नहीं आता ।" सच है कि जो अल्लाह तआ़ला से डरते हैं वोह और किसी से नहीं डरते और जो रब तआ़ला से नहीं डरता वोह हर एक से डरता है । ﴿حکایات الصالحین،ص ١٠٤﴾

﴾92﴿ ﴾अपने ख़ौफ़ के सबब बख़्श दिया....﴿

एक शख़्स किसी औ़रत पर फ़रेफ़्ता हो गया । जब वोह औ़रत किसी काम से क़ाफ़िले के साथ सफ़र पर रवाना हुई तो येह आदमी भी उस के पीछे पीछे चल दिया । जब जंगल में पहुंच कर सब लोग सो गए तो इस

www.dawateislami.net

आदमी ने उस औ़रत से अपना ह़ाले दिल बयान किया। औ़रत ने उस से पूछा : "क्या सब लोग सो गए हैं?" येह दिल ही दिल में बहुत ख़ुश हुवा कि शायद येह औ़रत भी मेरी त़रफ़ माइल हो गई है चुनान्चे, वोह उठा और क़ाफ़िले के गिर्द घूम कर जाइज़ा लिया तो सब लोग सो रहे थे। वापस आ कर उस ने औ़रत को बताया कि : "हां ! सब लोग सो गए हैं।" येह सुन कर वोह औ़रत कहने लगी : "**अल्लाह** तआ़ला के बारे में तुम क्या कहते हो, क्या वोह भी इस वक़्त सो रहा है?" मर्द ने जवाब दिया : "**अल्लाह** तआ़ला न सोता है न उसे नींद आती है और न उसे ऊंघ आती है।" औ़रत ने कहा : "जो न कभी सोया और न सोएगा, और वोह हमें भी देख रहा है अगर्चे लोग नहीं देख रहे तो हमें उस से ज़ियादा डरना चाहिये !" येह बात सुन कर उस आदमी ने रब तआ़ला के ख़ौफ़ के सबब उस औ़रत को छोड़ दिया और गुनाह के इरादे से बाज़ आ गया।

जब उस शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया?" तो उस ने जवाब दिया : "**अल्लाह** तआ़ला ने मुझे तर्के गुनाह और अपने ख़ौफ़ के सबब बख़्श दिया।" ﴿مکاشفة القلوب ص۱۱﴾

﴿93﴾ ﴿तमाम गुनाहों की मग़्फ़िरत हो गई...﴾

बनी इस्राईल में एक इ़याल दार शख़्स निहायत इ़बादत गुज़ार था। उस पर एक वक़्त ऐसा आया कि वोह अपने अहलो इ़याल समेत फ़ाक़े में मुब्तला हो गया। एक दिन उस ने मजबूर हो कर अपनी बीवी को बच्चों के लिये कुछ लाने के लिये बाहर भेजा। उस की बीवी एक ताजिर के दरवाज़े पर पहुंची और उस से सुवाल किया ताकि बच्चों को खाना खिलाए। उस ताजिर ने कहा : "ठीक है मैं तुम्हारी मदद करूंगा

www.dawateislami.net

लेकिन इस शर्त पर कि तुम अपने आप को मेरे ह़वाले कर दो।" येह जवाब सुन कर वोह औ़रत ख़ामोशी से घर वापस आ गई। घर पहुंच कर उस ने देखा कि बच्चे भूक की शिद्दत से चिल्ला रहे हैं और कह रहे हैं : "ऐ अम्मी जान ! हम भूक से मरे जा रहे हैं, हमें खाने को कुछ तो दीजिये !" बच्चों की येह ह़ालत देख कर वोह मजबूरन दोबारा उस ताजिर के पास गई और उसे अपनी मजबूरी बताई। उस ताजिर ने पूछा : "क्या तुम्हें मेरा मुत़ालबा मन्ज़ूर है ?" उस औ़रत ने (मजबूरन) कहा : "हां !"

जब वोह दोनों तन्हाई में पहुंचे और मर्द ने अपना मक़सद पूरा करना चाहा तो वोह औ़रत थर थर कांपने लगी, क़रीब था कि उस के जिस्म के जोड़ अलग हो जाएं। उस की येह ह़ालत देख कर ताजिर ने दरयाफ़्त किया : "येह तुझे क्या हुवा ?" औ़रत ने जवाब दिया : "मुझे अपने रब तआ़ला का ख़ौफ़ है।" येह सुन कर ताजिर ने कहा : "तुम फ़क़्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में भी **अल्लाह** तआ़ला से डरती हो, मुझे तो इस से भी ज़ियादा डरना चाहिये।" चुनान्चे, वोह गुनाह के इरादे से बाज़ आ गया और उस औ़रत की ज़रूरत पूरी कर दी। वोह औ़रत बहुत सारा माल ले कर अपने बच्चों के पास आई और वोह ख़ुश हो गए !

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी भेजी कि "फ़ुलां इब्ने फ़ुलां को बता दें कि मैं ने उस के तमाम गुनाह बख़्श दिये हैं।" ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام येह पैग़ाम ले कर उस आदमी के पास पहुंचे और उस से पूछा : "शायद तूने कोई ऐसी नेकी की है जो तुझे या तेरे रब को मा'लूम है।" उस शख़्स ने सारा वाक़िआ़ आप को बता दिया तो आप ने उसे बताया कि : "**अल्लाह** तआ़ला ने तेरे तमाम गुनाहों की मग़फ़िरत कर दी है।" ﴿مکاشفۃ القلوب ص۱۱﴾

www.dawateislami.net

﴾94﴿ अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िरी का ख़ौफ़...

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "एक फ़ाह़िशा औ़रत के बारे में कहा जाता था कि दुन्या का तिहाई ह़ुस्न उस के पास है। वोह अपना आप किसी को सोंपने का मुआ़वज़ा सौ दीनार लेती थी। एक मरतबा एक आ़बिद की निगाह उस पर पड़ गई, और वोह उस का क़ुर्ब पाने के लिये बेचैन हो कर सौ दीनार जम्अ़ करने में मश्ग़ूल हो गया। जब मत़्लूबा रक़म पूरी हो गई तो वोह उस के पास पहुंचा और कहा कि "तेरे ह़ुस्न ने मुझे दीवाना कर दिया है, मैं ने तुझे ह़ासिल करने के लिये अपने हाथ की मेह़नत से येह सौ दीनार जम्अ़ किये हैं।" उस फ़ाह़िशा ने कहा : "येह मेरे वकील को दे दो, ताकि वोह परख ले।" जब वकील ने दीनार परख लिये तो उस ने आ़बिद को अन्दर आने की इजाज़त दे दी।

जब वोह गुनाह के लिये फ़ाह़िशा के नज़्दीक बैठा, तो उस पर **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में पेशी का ख़ौफ़ ग़ालिब आ गया और वोह थर थर कांपने लगा और उस की शहवत जाती रही। उस ने फ़ाह़िशा से कहा : "मुझे छोड़ दे मैं वापस जाना चाहता हूं, और येह सौ दीनार भी तू ही रख ले।" औ़रत ने कहा : "येह क्या? मैं तुझे पसन्द आई, तूने इतनी मेह़नत से येह दीनार जम्अ़ किये और अब जब कि तेरी ख़्वाहिश पूरी होने में कोई रुकावट बाक़ी नहीं रही, तू वापस जाना चाहता है?" आ़बिद ने कहा : "मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा होने से डर गया हूं, इस लिये मेरा तमाम ऐ़श हवा हो गया है।"

वोह त़वाइफ़ येह बात सुन कर बहुत मुतअस्सिर हुई, चुनान्चे, उस ने कहा कि "अगर वाक़ेई येह बात है तो मेरा ख़ावन्द तेरे इलावा और कोई नहीं हो सकता।" आ़बिद ने कहा : "मुझे छोड़ दे मैं यहां से जाना चाहता हूं।" औ़रत ने कहा : "मैं तुझे सिर्फ़ इस शर्त़ पर जाने दूंगी कि तू मुझ से

www.dawateislami.net

शादी कर ले।'' आ़बिद ने कहा कि ''जब तक मैं यहां से निकल न जाऊं, येह मुमकिन नहीं।'' औ़रत ने कहा कि ''ठीक है ! लेकिन अगर मैं बा'द में तेरे पास आऊं तो क्या तू मुझ से शादी कर लेगा ?'' आ़बिद ने कहा : ''ठीक है।'' फिर उस आ़बिद ने मुंह छुपाया और अपने शहर को निकल खड़ा हुवा।

उस औ़रत ने भी तौबा की और उस आ़बिद के शहर में पहुंच गई, जब वोह पता मा'लूम करती हुई आ़बिद के सामने पहुंची तो उसे देख कर उस (आ़बिद) ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और उस का दम निकल गया। औ़रत ने लोगों से पूछा कि ''इस का कोई क़रीबी रिश्तेदार है ?'' बताया गया कि ''इस का एक भाई है जो बहुत ग़रीब है।'' औ़रत उस के भाई के पास पहुंची और उस से कहा कि 'मैं तेरे भाई की मह़ब्बत की बिना पर तुझ से शादी करना चाहती हूं।'' चुनान्चे, उन्हों ने शादी कर ली। फिर उस औ़रत के सात बेटे हुवे और सब के सब नेक व सालेह़ बने। ﴿كتاب التوابين ص٧٤﴾

﴾95﴿ ﴾उंगलियां जला डालीं.........﴿

बनी इस्राईल का एक आ़बिद अपने इ़बादत ख़ाने में इ़बादत किया करता था। गुमराहों का गुरौह एक त़वाइफ़ के पास पहुंचा और उस से कहा कि ''तुम किसी न किसी त़रह़ उस आ़बिद को बहका दो।'' चुनान्चे, वोह फ़ाह़िशा एक अन्धेरी रात में, जब कि बारिश बरस रही थी, उस आ़बिद के पास आई और उस को पुकारा। आ़बिद ने झांक कर देखा, तो औ़रत ने कहा कि ''ऐ अल्लाह के बन्दे मुझे अपने पास पनाह दे।'' लेकिन आ़बिद ने उस की परवाह न की और नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया। वोह त़वाइफ़ उसे बारिश और अन्धेरी रात याद दिला कर पनाह त़लब करती रही ह़त्ता की आ़बिद ने रह़म खा कर उसे अन्दर बुला लिया। वोह आ़बिद से कुछ फ़ासिले पर जा कर लैट गई और उसे अपनी त़रफ़ माइल करने की कोशिश शुरूअ़ कर दी। यहां तक कि आ़बिद का दिल भी उस की त़रफ़ माइल हो गया।

www.dawateislami.net

लेकिन उसी लम्हे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ ने उस के दिल में जोश मारा, आ़बिद ने ख़ुद को मुख़ातब कर के कहा : "वल्लाह ! ऐसा नहीं हो सकता यहां तक कि तू देख ले कि आग पर कितना सब्र कर सकता है।" फिर वोह चराग़ के पास गया और अपनी एक उंगली उस के शो'ले में रख दी, ह़त्ता कि वोह जल कर कोइला हो गई। फिर उस ने नमाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह होने की कोशिश की लेकिन उस के नफ़्स ने दोबारा फ़ाह़िशा की त़रफ़ बढ़ने का मश्वरा दिया। येह चराग़ के पास गया और अपनी दूसरी उंगली भी जला डाली, फिर उस का नफ़्स इसी त़रह़ ख़्वाहिश करता रहा और वोह अपनी उंगलियां जलाता रहा, ह़त्ता कि उस ने अपनी सारी उंगलियां जला डालीं, औ़रत येह सारा मन्ज़र देख रही थी, चुनान्चे, ख़ौफ़ व दहशत के बाइ़स उस ने एक चीख़ मारी और मर गई। ﴿ذم الہوٰی ص۱۹۹﴾

﴿96﴾ ﴿बादल साया फ़िग्न हो गया.....﴾

ह़ज़रते शैख़ अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह हुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि एक क़स्साब अपने पड़ोसी की लौंडी पर आ़शिक़ था। एक दिन वोह लौंडी किसी काम से दूसरे गाऊं को जा रही थी, क़स्साब ने मौक़अ़ ग़नीमत जान कर उस का पीछा किया और कुछ दूर जा कर उसे पकड़ लिया। तब कनीज़ ने कहा कि "ऐ नौजवान ! मेरा दिल भी तेरी त़रफ़ माइल तो है लेकिन मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरती हूं।" जब उस क़स्साब ने येह सुना तो बोला : "जब तू अल्लाह तआ़ला से डरती है तो क्या मैं उस ज़ाते पाक से न डरूं ?" येह कह कर उस ने तौबा कर ली और वहां से पलट पड़ा। रास्ते में प्यास के मारे दम लबों पर आ गया। इत्तिफ़ाक़न उस की मुलाक़ात एक शख़्स से हो गई जो कि किसी नबी का क़ासिद था। उस मर्दे क़ासिद ने पूछा : ऐ जवान ! क्या ह़ाल है ?" क़स्साब ने जवाब दिया : "प्यास से निढ़ाल हूं।" क़ासिद ने कहा कि "आओ हम दोनों मिल कर ख़ुदा से दुआ़ करें ताकि

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला अब्र के फ़िरिश्ते को भेज दे और वोह शहर पहुंचने तक हम पर अपना साया किये रखे।" नौजवान ने कहा कि "मैं ने तो ख़ुदा की कोई क़ाबिले ज़िक्र इबादत भी नहीं की है, मैं किस त़रह़ दुआ़ करूं ? तुम दुआ़ करो, मैं **आमीन** कहूंगा।" उस शख़्स ने दुआ़ की, बादल का एक टुकड़ा उन के सरों पर साया फ़िगन हो गया।

जब येह दोनों रास्ता त़ै करते हुवे एक दूसरे से जुदा हुवे तो वोह बादल क़स्साब के सर पर आ गया और क़ासिद धूप में हो गया। क़ासिद ने कहा : "ऐ जवान ! तू ने तो कहा था कि तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुछ भी इबादत नहीं की, फिर येह बादल तेरे सर पर किस त़रह़ साया फ़िगन हो गया ? तू मुझे अपना ह़ाल सुना।" नौजवान ने कहा : "और तो मुझे कुछ मा'लूम नहीं लेकिन एक कनीज़ से ख़ौफ़े ख़ुदा की बात सुन कर मैं ने तौबा ज़रूर की थी।" क़ासिद बोला, "तू ने सच कहा, **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर में जो मर्तबा व दरजा ताइब (तौबा करने वाले) का है वोह किसी दूसरे का नहीं है।" ﴿کتاب التوابین، ص۷۵﴾

﴿97﴾ ﴿मुझे अपने रब तआ़ला का ख़ौफ़ है....﴾

कूफ़ा में एक ख़ूब सूरत नौजवान बहुत ज़ियादा इबादत व रियाज़त किया करता था। "नख़्अ़" अ़लाक़े के कुछ लोग इस के पड़ोस में आ कर रहने लगे। एक दिन अचानक इस की निगाह उन की लड़की पर पड़ गई और येह दिलो दिमाग़ हार बैठा और वोह लड़की भी इस पर फ़रेफ़्ता हो गई। इस नौजवान ने लड़की के बाप को पैग़ामे निकाह़ भेजा तो उस ने बताया कि इस लड़की की मंगनी अपने चचाज़ाद के साथ हो चुकी है। इस इन्कार के बा वुजूद येह दोनों बेह़द बेचैन रहने लगे। आख़िरे कार लड़की ने उस नौजवान को किसी क़ासिद के ज़रीए येह पैग़ाम भिजवाया कि, "मुझे तुम्हारी

www.dawateislami.net

ह़ालत का अन्दाज़ा है और ख़ुद मेरी ह़ालत भी तुम से मुख़्तलिफ़ नहीं है, अब या तो तुम मेरे पास चले आओ या फिर मैं तुम्हारे पास आ जाऊं ?" उस नौजवान ने पैग़ाम लाने वाले को जवाब दिया कि, "येह दोनों बातें मुमकिन नहीं, क्यूंकि मुझे ख़ौफ़ है कि मैं अपने रब की नाफ़रमानी कर के बड़ी घबराहट (या'नी क़ियामत) के दिन अ़ज़ाब में मुब्तला न हो जाऊं और मैं उस आग से डरता हूं जिस के शो'ले कभी ठन्डे नहीं पड़ते।" जब क़ासिद ने जा कर येह सारी बात उस लड़की को बताई तो वोह कहने लगी : "इतनी शिद्दत से चाहने के बावुजूद वोह **अल्लाह** तआ़ला से डरता है और वोह डरने का ह़क़दार भी है और बन्दे इस मुआ़मले में बराबर हैं।" फिर वोह लड़की भी दुन्या से कनारा कश हो कर इ़बादत में मश्ग़ूल हो गई यहां तक कि उस का इन्तिक़ाल हो गया। ﴿كتاب التوابين، ص٢٦٧﴾

﴾98﴿ ﴾बोसीदा हड्डियों की नसीह़त.........﴿

एक शख़्स जिसे दीनार "अ़य्यार" कहा जाता था, उस की मां उसे बुरी ह़रकतों से मन्अ़ करती लेकिन वोह बाज़ न आता था। एक दिन उस का गुज़र एक क़ब्रिस्तान से हुवा जहां बहुत सी बोसीदा हड्डियां बिखरी पड़ी थीं। उस ने आगे बढ़ कर एक हड्डी उठाई तो वोह उस के हाथ में बिखर गई। येह देख कर वोह सोच में पड़ गया और ख़ुद से कहने लगा : "तेरी हलाकत हो ! एक दिन तू भी इन में शामिल हो जाएगा और तेरी हड्डियां भी इसी त़रह़ बोसीदा हो जाएंगी जब कि जिस्म मिट्टी में मिल जाएगा, इस के बा वुजूद तू गुनाहों में मश्ग़ूल है ?" इस के बा'द उस ने तौबा की और कहने लगा, "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं ख़ुद को तेरी बारगाह में पेश करता हूं, मुझ पर रह़्म कर और मुझे क़बूल फ़रमा ले।"

www.dawateislami.net

फिर वोह नौजवान ज़र्द चेहरे और शिकस्ता दिल के साथ अपनी मां के पास पहुंचा और कहने लगा : "अम्मी जान ! भागा हुवा ग़ुलाम जब पकड़ा जाए तो उस के साथ क्या सुलूक किया जाता है ?" मां ने जवाब दिया कि, "उसे खुरदुरा लिबास और सूखी रोटी दी जाती है नीज़ उस के हाथ पाउं बांध दिये जाते हैं ।" उस ने अ़र्ज़ की, "आप मेरे साथ वोही सुलूक करें जो भागे हुवे ग़ुलाम के साथ किया जाता है, शायद कि मेरी इस ज़िल्लत को देख कर मेरा मालिक मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे ।" उस की मां ने उस की येह ख़्वाहिश पूरी कर दी । जब रात होती तो येह रोता और आहो ज़ारी शुरूअ़ कर देता और कहता : "ऐ दीनार ! तू हलाक हो जाए ! क्या तुझे अपने आप पर क़ाबू नहीं है ? तू किस त़रह़ अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब से बच सकेगा ?" यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती । एक रात उस की मां ने कहा : "बेटा ! अपने आप पर तरस खाओ और इतनी मशक़्क़त मत उठाओ ।" उस ने जवाब दिया, मुझे इसी ह़ाल पर रहने दें, थोड़ी सी मशक़्क़त के बा'द शायद मुझे त़वील आराम नसीब हो जाए, अम्मी जान ! मेरी नाफ़रमानियों की एक त़वील फ़ेहरिस्त रब तआ़ला के सामने मौजूद है और मैं नहीं जानता कि मुझे मक़ामे रह़मत में जाने का ह़ुक्म होगा या वादिये हलाकत में डाल दिया जाऊंगा ? मुझे उस तक्लीफ़ का ख़ौफ़ है जिस के बा'द कोई राह़त नहीं मिलेगी, मुझे ऐसी सज़ा का डर है जिस के बा'द भी मुआ़फ़ी नहीं मिलेगी ।" मां ने येह सुन कर कहा : "अच्छा ! थोड़ा सा तो आराम कर लो ।" वोह कहने लगा, "मैं कैसे आराम कर सकता हूं ? क्या आप मेरी मग़्फ़िरत की ज़मानत देती हैं ? कौन मेरी बख़्शिश की ज़मानत देगा ? मुझे मेरे ह़ाल पर छोड़ दीजिये ! ऐसा न हो कि कल लोग जन्नत की जानिब जा रहे हों और मैं जहन्नम की त़रफ़.....।"

www.dawateislami.net

एक मरतबा उस की मां उस के क़रीब से गुज़री तो उस ने येह आयत पढ़ी :

فَوَرَبِّكَ لَنَسْئَلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे, जो कुछ वोह करते थे।* (پ۱۴، الحجر ۹۲،۹۳)

और इस पर ग़ौर करने लगा, यहां तक कि सांप की त़रह़ लौटने लगा, बिल आख़िर बेहोश हो गया। उस की मां ने उसे पुकारा लेकिन कोई जवाब न मिला। वोह कहने लगी : "मेरी आंखों की ठन्डक ! अब कहां मुलाक़ात होगी ?" नौजवान ने कमज़ोर सी आवाज़ में जवाब दिया : "अगर मैं क़ियामत के दिन आप को न मिल सकूं तो दरोग़ए जहन्नम से पूछ लेना।" फिर उस ने एक चीख़ मारी और उस की रूह़ परवाज़ कर गई। ﴿کتاب التوابین، ص۲۵۶﴾

﴿99﴾ ﴿मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया...﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मह़फ़िल में वा'ज़ फ़रमा रहे थे। उन्हों ने अपने सामने बैठने वाले एक नौजवान को कहा : "कोई आयत पढ़ो।" तो उस ने येह आयत पढ़ दी,

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इन्हें डराओ उस नज़दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाऐंगे ग़म में भरे। और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए।*

(پ۲۴، المؤمن ۱۸)

येह आयत सुन कर आप ने फ़रमाया : "कोई कैसे ज़ालिम का दोस्त या मददगार हो सकता है ? क्यूंकि वोह तो **अल्लाह** तआ़ला की गिरिफ़्त में होगा। बेशक तुम सरकशी करने वाले गुनहगारों को देखोगे कि उन्हें ज़न्जीरों में जकड़ कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जा रहा होगा और

www.dawateislami.net

वोह बरहना पाउं होंगे, इन के जिस्म बोझल, चेहरे सियाह और आंखें ख़ौफ़ से नीली होंगी।" वोह पुकार कर कहेंगे, "हम बरबाद हो गए ! हमें क्यूं जकड़ा गया है ? हमें कहां ले जाया जा रहा है और हमारे साथ क्या सुलूक किया जाएगा ?" फ़िरिश्ते उन्हें आग के कोड़ों से हांकेंगे, कभी वोह मुंह के बल गिरेंगे और कभी उन्हें घसीट कर ले जाया जाएगा। जब रो रो कर उन के आंसू ख़ुश्क हो जाएंगे तो ख़ून के आंसू रोना शुरूअ़ कर देंगे, उन के दिल दहल जाएंगे और हैरान व परेशान होंगे। अगर कोई उन्हें देख ले तो उन पर निगाह न जमा सकेगा, न दिल को संभाल सकेगा और येह हौलनाक मन्ज़र देखने वाले के बदन पर लरज़ा त़ारी हो जाएगा।"

येह कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत रोए और आह भर कर कहने लगे : "अफ़्सोस ! कैसा ख़ौफ़नाक मन्ज़र होगा।" येह कह कर फिर रोने लगे और इन को रोता देख कर लोग भी रोने लगे। इतने में एक नौजवान खड़ा हो गया और कहने लगा : "हुज़ूर ! क्या येह सारा मन्ज़र बरोज़े क़ियामत होगा ?" आप ने जवाब दिया : "हां ! और येह मन्ज़र ज़ियादा त़वील नहीं होगा क्यूंकि जब उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो उन की आवाज़ें आना बन्द हो जाएंगी।" येह सुन कर नौजवान ने एक चीख़ मारी और कहा : "अफ़्सोस ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार दी, अफ़्सोस ! मैं कोताहियों का शिकार रहा, अफ़्सोस ! मैं अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में सुस्ती करता रहा, आह ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी ज़ाएअ़ कर दी।" और रोने लगा। कुछ देर बा'द वोह कहने लगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ मैं अपने गुनाहों से तौबा करने के लिये तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं, मुझे तेरे सिवा किसी से ग़रज़ नहीं, मुझ में जो बुराइयां हैं इन्हें मुआ़फ़ फ़रमा कर मुझे क़बूल कर ले, मेरे गुनाह मुआ़फ़ कर दे, मुझ समेत तमाम ह़ाज़िरीन पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमा और हमें

www.dawateislami.net

अपनी सख़ावत से माला माल कर दे, या अरहमर्राहिमीन ! मैं ने गुनाहों की गठड़ी तेरे सामने रख दी है और सिद्क़े दिल से तेरे सामने हाज़िर हूं, अगर तू मुझे क़बूल नहीं करेगा तो मैं हलाक हो जाऊंगा।" इतना कह कर वोह नौजवान ग़श खा कर गिरा और बेहोश हो गया। और चन्द दिन बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ार कर इन्तिक़ाल कर गया।

उस के जनाज़े में कसीर लोग शामिल हुवे और रो रो कर उस के लिये दुआएं की गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अकसर उस का ज़िक्र अपने वा'ज़ में किया करते। एक दिन किसी ने उस नौजवान को ख़्वाब में देखा तो पूछा : "तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला हुवा ?" तो उस ने जवाब दिया : मुझे ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की महफ़िल से बरकतें मिलीं और मुझे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।" ﴿کتاب التوابین ، ص۲۵۱﴾

﴿100﴾ ﴿अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है !.....﴾

एक शख़्स किसी शामी औ़रत के पीछे लग गया और एक मक़ाम पर उसे ख़न्जर के बलबूते पर **यर्ग़माल** बना लिया। जो कोई उस औ़रत को बचाने के लिये आगे बढ़ता, वोह उसे ज़ख़्मी कर देता। वोह औ़रत मुसलसल मदद के लिये पुकार रही थी। इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से गुज़रे तो उस शख़्स को कन्धा मारते हुवे आगे निकल गए। वोह शख़्स पसीने से शराबोर हो कर ज़मीन पर गिर गया और वोह औ़रत उस के चुंगल से आज़ाद हो कर एक त़रफ़ को चल दी। उस के इर्द गिर्द जम्अ़ होने वाले लोगों ने उस से पूछा, "तुझे क्या हुवा ?" उस ने कहा : "मैं नहीं जानता ! लेकिन जब वोह बुज़ुर्ग गुज़रने लगे तो मुझे कन्धा मार कर कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देख रहा है !" उन की येह बात सुन कर मैं हैबत ज़दा हो गया, न जाने वोह कौन थे ?" लोगों ने उसे

www.dawateislami.net

बताया “येह ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।” तो उस ने कहा : “आह मेरी बद नसीबी ! मैं आज के बा'द उन से निगाह नहीं मिला पाऊंगा।” फिर उस शख़्स को बुख़ार आ गया और सातवें दिन उस का इन्तिक़ाल हो गया। ﴿کتاب التوابین، ص۲۱۳﴾

﴾101﴿ ﴾ मैं किस गिनती में आता हूं ?......﴿

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : “आप चूंकि अहले बैत में से हैं, इस लिये मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइयें।” लेकिन वोह ख़ामोश रहे। जब आप ने दोबारा अ़र्ज़ की, कि : “अहले बैत होने के ए'तिबार से **अल्लाह** तआ़ला ने आप को जो फ़ज़ीलत बख़्शी है, इस लिह़ाज़ से नसीह़त करना आप के लिये ज़रूरी है।” येह सुन कर इमाम जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : “मुझे तो खुद येह ख़ौफ़ लाह़िक़ है कि कहीं क़ियामत के दिन मेरे जद्दे आ'ला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा हाथ पकड़ कर येह न पूछ लें कि तू ने ख़ुद मेरी पैरवी क्यूं नहीं की ? क्यूंकि नजात का तअ़ल्लुक़ नसब से नहीं आ'माले सालेह़ा पर मौक़ूफ़ है।” येह सुन कर ह़ज़रते दावूद त़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत इ़ब्रत हुई कि जब अहले बैत के ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का येह आ़लम है तो मैं किस गिनती में आता हूं ?”

﴿تذکرۃ الاولیاء، ج ۱ص ۲۰﴾

﴾102﴿ ﴾ नींद कैसे आ सकती है ?.......﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़र्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़म्र भर शब बेदार रहे। जब कभी लोग आप से आराम करने के लिये इसरार करते तो फ़रमाते : “जिस के लिये जहन्नम भड़काई जा रही हो और बिहिश्त को आरास्ता किया जा रहा हो, लेकिन उस को इ़ल्म न हो कि इन दोनों में उस का ठिकाना कहां है, उस को नींद कैसे आ सकती है ?” ﴿تذکرۃ الاولیاء، ج ۱ص ۲۰﴾

www.dawateislami.net

﴾103﴿ ﴾मेरे पास कोई जवाब न होगा.....﴿

ह़ज़रते यह़या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी मुनाजात इस त़रह़ शुरूअ़ करते :

"ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर्चे मैं बहुत गुनाहगार हूं फिर भी तुझ से मग़फ़िरत की उम्मीद रखता हूं क्यूंकि मैं सरतापा मा'सिय्यत और तू ग़फ़्फ़ार (मुआ़फ़करने वाला) है,..... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने फ़िरऔ़न के दा'वए ख़ुदाई के बा वुजूद ह़ज़रते मूसा व हारून (علیھما السلام) को नर्मी का हुक्म दिया था, लिहाज़ा ! जब तू "اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى (मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं। النازعات:۲۴)" कहने वाले पर करम फ़रमा सकता है तो उन पर तेरे लुत़्फ़ो करम का अन्दाज़ा कौन कर सकता है जो "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰى (पाकी बयान करता हूं मैं अपने ऊंचे रब की)" कहते हैं,.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे पास इस कम्बल के सिवा कुछ नहीं लेकिन अगर येह भी कोई त़लब करे तो मैं तेरी ख़ात़िर देने के लिये तय्यार हूं,.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा ही इरशाद है कि नेकी करने वालों को नेकी की वजह से बेहतर सिला दिया जाता है, मैं तुझ पर ईमान रखता हूं जिस से अफ़्ज़ल दुन्या में कोई नेकी नहीं है, लिहाज़ा ! इस के सिले में मुझे अपने दीदार से नवाज़ दे,....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चूंकि तू गुनाहों को बख़्शने वाला है और मैं गुनाहगार हूं, इस लिये तुझ से बख़्शिश का सुवाली हूं,....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ग़फ़्फ़ारी और अपनी कमज़ोरी की बिना पर मा'सिय्यत का इर्तिकाब कर बैठता हूं, इस लिये अपनी ग़फ़्फ़ारी या मेरी कमज़ोरी के पेशे नज़र मुझे बख़्श दे,....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब मैदाने मह़शर में मुझ से पूछा जाएगा कि दुन्या से क्या लाया ? तो मेरे पास कोई जवाब न होगा ।" ﴾تذکرۃ الاولیاء﴿

www.dawateislami.net

﴾104﴿ ﴾ दम तोड़ देने वाला मदनी मुन्ना.....﴿

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वर्राक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मदनी मुन्ने कुरआने पाक की तिलावत करते हुवे जब इस आयत पर पहुंचे,.....

اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *अगर कुफ़्र करो उस दिन से जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा।* (المزمل:۱۷)

तो ख़ौफ़े इलाही का इस क़दर ग़लबा हुवा कि दम तोड़ दिया।

﴿تذکرۃ الاولیاء،ج۲،ص۸۷﴾

﴾105﴿ ﴾ आप इसे मार डालेंगे.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब येह इ़ल्म होता कि इन का बेटा भी इन के पीछे नमाज़ पढ़ रहा है तो ख़ौफ़ व ग़म की आयात तिलावत न करते। एक मरतबा इन्हों ने समझा कि वोह इन के पीछे नहीं है और येह आयत पढ़ी ''قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *कहेंगे ऐ हमारे रब ! हम पर हमारी बदबख़्ती ग़ालिब आई और हम गुमराह लोग थे।''* (پ۱۸،المؤمنون۱۰۶)

तो इन का बेटा येह आयत सुन कर बेहोश हो कर गिर गया। जब आप को इस का अन्दाज़ा हुवा तो तिलावत मुख़्तसर कर दी। जब उन की मां को येह सारी बात मा'लूम हुई तो उन्हों ने आ कर अपने बेटे के चेहरे पर पानी छिड़का और उसे होश में लाईं। उन्हों ने ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : इस त़रह़ तो आप इसे मार डालेंगे.....!'' एक मरतबा फिर ऐसा ही इत्तिफ़ाक़ हुवा कि आप ने येह आयत तिलावत की : وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और उन्हें* ***अल्लाह*** *की त़रफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी।* (پ۲۴،الزمر۴۷)

www.dawateislami.net

येह आयत सुन कर वोह फिर बेहोश हो कर गिर गया। जब उसे होश में लाने की कोशिश की गई तो वोह दम तोड़ चुका था !

﴿کتاب التوابین، ص۲۰۹﴾

﴿106﴾ ﴿ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ क्यूं नहीं ?.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन ह़र्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले पहल बहुत मालदार शख़्स थे और इसी के बलबूते पर बादशाह के वज़ीर भी बन गए और लोगों पर ज़ुल्मो सितम ढाना शुरूअ़ कर दिया। एक दिन आप ने किसी को येह आयत पढ़ते हुवे सुना, اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं* ***अल्लाह*** *की याद (के लिये)।* (پ۲۷، الحدید ۱۶)

येह सुन कर आप ने एक चीख़ मारी और कहा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ क्यूं नहीं ?" आप बारबार येही कहते जाते और रोते जाते फिर अपनी सुवारी से उतर कर अपने कपड़े उतारे और दरयाए दिजला में छुप गए। एक शख़्स जो आप के ह़ालात से वाक़िफ़ था, दरयाए दिजला के क़रीब से गुज़रा तो आप को पानी में खड़े हुवे पाया। चुनान्चे, उस ने आप को एक क़मीज़ और तहबन्द भिजवाया। आप ने उन कपड़ों से अपना बदन ढांपा और पानी से बाहर निकल आए। लोगों से ज़ुल्मन लिया गया माल वापस कर दिया और बच रहने वाला माल सदक़ा कर दिया। इस के बा'द आप तह़सीले इल्म और इबादत में मश्ग़ूल हो गए ह़त्ता कि इन्तिक़ाल कर गए। ﴿کتاب التوابین، ص۱۶۳﴾

www.dawateislami.net

﴾107﴿ ﴾मेरी उम्मीदों को मत तोड़ना.....﴿

उमवी ख़लीफ़ा हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक को कूफ़ा की एक बुढ़िया की नौजवान कनीज़ के बारे में बताया गया जो निहायत ह़सीन, ज़हीन, अदब आश्ना होने के साथ साथ शे'रो शाइ़री से भी दिलचस्पी रखती थी। उस ने येह अवसाफ़ सुन कर हुक्म दिया कि वालिये कूफ़ा को ख़त़ लिखो कि "उस कनीज़ को उस की मालिकन से ख़रीद कर मेरे पास भेज दे।" एक ख़ादिम येह ख़त़ ले कर कूफ़ा रवाना हो गया। जब वाली को येह हुक्म नामा मिला तो उस ने बुढ़िया के पास एक आदमी भेज कर उस कनीज़ को दो लाख दिरहम और पांच सो मिसक़ाल खजूरों की सालाना पैदावार के ह़ामिल खजूरों के बाग के बदले ख़रीद लिया और उसे हिशाम की ख़िदमत में रवाना कर दिया। हिशाम ने उस के रहने के लिये अलग इन्तिज़ाम किया जहां ज़र्क़ बर्क़ लिबास, क़ीमती ज़ेवरात और आ'ला बिछौने मौजूद थे। एक दिन वोह ख़ुश्बू से महके हुवे कमरे में निहायत ख़ुशगवार मूड़ में उस के साथ बातों में मगन था कि उसे चीख़ों की आवाज़ सुनाई दी। उस ने आवाज़ की जानिब निगाहें दौड़ाईं तो उसे एक जनाज़ा नज़र आया जिस के पीछे औ़रतें चिल्ला रही थीं और एक औ़रत कह रही थी, "मेरे बाप को कन्धों पर सुवार कर के मुर्दों के पास ले जाया जा रहा है, अ़न क़रीब इसे वीरान क़ब्रिस्तान में तन्हा दफ़्न कर दिया जाएगा। ऐ अब्बा जान ! क्या आप का शुमार उन लोगों में हुवा है जो अपना जनाज़ा उठाने वालों से कहते हैं : "ज़रा जल्दी ले चलो।"...या... आप को उन लोगों में शामिल किया गया है जो येह कहते हैं : "मुझे वापस ले चलो ! मुझे कहां ले जा रहे हो ?" उस की येह बात सुन कर हिशाम की आंखें भर आईं और वोह अपनी लज़्ज़त को भूल कर कहने लगा, "मौत नसीह़त के लिये काफ़ी है।" उस कनीज़ ने भी कहा : "इस औ़रत ने मेरा दिल

www.dawateislami.net

चीर कर रख दिया है !" हिशाम ने कहा : "हां ! कुछ ऐसी ही बात है।" फिर उस ने ख़ादिम को आवाज़ दी और बालाख़ाने से नीचे उतर गया जब कि वोह कनीज़ वहीं बैठी बैठी सो गई।

उस ने ख़्वाब में देखा कि, "एक शख़्स उस से कह रहा है, "आज तुम अपने हुस्न से दूसरों को आज़माइश में डालती हो और अपनी अदाओं से दूसरों को ग़ाफ़िल कर देती हो। उस दिन जब सूर फूंका जाएगा जब क़ब्रें शक़ होंगी और लोग इन से बाहर निकलेंगे और उन्हें अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा....तो क्या होगा ?" वोह कनीज़ घबराहट के आ़लम में बेदार हुई और पानी पी कर अपना ह़ल्क़ तर किया। फिर पानी मंगवा कर ग़ुस्ल किया और ज़र्क़ बर्क़ लिबास और ज़ेवरात की बजाए ऊनी कपड़े पहने, एक लाठी हाथ में थामी और हिशाम के दरबार में पहुंच गई। जब हिशाम इस को न पहचान सका तो उस ने कहा : "मैं तुम्हारी वोही पसन्दीदा कनीज़ हूं जिसे एक नासेह़ की नसीह़त ने झन्झोड़ डाला है और मैं तुम्हारे पास इस लिये आई हूं कि तुम मुझ से अपनी ख़्वाहिश पूरी कर चुके हो लिहाज़ा ! अब मुझे ग़ुलामी से आज़ाद कर दो।" हिशाम ने कहा : "मैं ने **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये तुझे आज़ाद किया, अब तुम कहां जाने का इरादा रखती हो ?" उस ने जवाब दिया, "मैं का'बतुल्लाह की त़रफ़ जाऊंगी।" हिशाम ने कहा : "बहुत ख़ूब ! अब तेरी राह में कोई रुकावट नहीं।"

कनीज़ वहां से मक्का शरीफ़ पहुंची और वहीं मुक़ीम हो गई। वोह सूत कात कर गुज़र बसर करती और जब शाम हो जाती तो त़वाफ़ करती, इस के बा'द ह़तीम में दाख़िल हो कर अ़र्ज़ करती "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ तू ही मेरा सहारा है, मेरी उम्मीदों को मत तोड़ना, मुझे मक़ामे अम्न अ़त़ा फ़रमाना और अपनी रह़मतें मुझ पर छमा छम बरसाना।" येह कनीज़ इसी

www.dawateislami.net

त़रह़ शबो रोज़ रियाज़त व इ़बादत में मसरूफ़ रही ह़त्ता कि इस मेह़नत व मशक़्क़त और धूप की तमाज़त ने इस की जिल्द की रंगत को तब्दील कर दिया और नमाज़ में त़वील क़ियाम की वजह से इस का बदन कमज़ोर व नह़ीफ़ हो गया, ज़ियादा रोने के सबब इस की आंखें ख़राब हो गईं और सूत कातने की वजह से इस की उंगलियों में ज़ख़्म हो गए। बिल आख़िर एक दिन इसी ह़ालत में इस का इन्तिक़ाल हो गया। ﴿کتاب التوابین، ص۱۵۱﴾

﴿108﴾ ﴿मेरा क्या बनेगा ?.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मरतबा ग़ुस्ल फ़रमाने के लिये किसी ह़म्माम में गए। ह़म्माम के मालिक ने आप को रोका और कहने लगा : "अगर दिरहम नहीं दोगे तो अन्दर दाख़िल नहीं होने दूंगा।" उस की येह बात सुन कर आप ने रोना शुरूअ़ कर दिया। वोह आप को रोता देख कर परेशान हो गया और अ़र्ज़ करने लगा : "अगर आप के पास दिरहम नहीं हैं तो कोई बात नहीं, आप यूंही ग़ुस्ल फ़रमा लीजिये।" इस पर आप ने फ़रमाया कि : "मैं तुम्हारे रोकने की वजह से नहीं रोया बल्कि मुझे तो इस बात ने रुला दिया कि आज दिरहम न होने की वजह से मुझे उस ह़म्माम में जाने से रोक दिया गया है जिस में नेक व बद सभी नहाते हैं तो अगर कल नेकियां न होने के सबब मुझे उस जन्नत से रोक लिया गया जो सिर्फ़ नेकों का मक़ाम है तो मेरा क्या बनेगा।"

﴿رسالہ: میں سدھرنا چاہتا ہوں، ص۱۶﴾

﴿109﴾ ﴿फ़ना हो जाने वाली को तरजीह़ न दो...﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बिशार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ सह़रा में मह़्वे सफ़र था कि अचानक हमें एक क़ब्र नज़र आई। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए

www.dawateislami.net

और क़ब्र वाले के लिये दुआए मग़फ़िरत की, फिर रोने लगे। मैं ने अ़र्ज़ की : "येह क़ब्र किस की है?" तो जवाब दिया : "येह क़ब्र ह़मीद बिन इब्राहीम (عَلَيْهِ الرَّحْمَة) की है जो पहले हमारे शहरों के अमीरों में से थे और दुन्या की मह़ब्बत में ग़र्क़ थे, अल्लाह तआ़ला ने इन्हें बचा लिया।" इतना कहने के बा'द फ़रमाया : "मुझे पता चला कि येह एक दिन अपनी ममलुकत की वुस्अ़त और दुन्यावी मालो दौलत की कसरत से बहुत ख़ुश थे, इसी दौरान जब येह सोए तो ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स जिस के हाथ में एक किताब थी, इन के सिरहाने आन खड़ा हुवा। ह़मीद ने उस शख़्स से किताब ले कर उसे खोला तो उस में जली हुरूफ़ से लिखा था : "फ़ना हो जाने वाली को बाक़ी रह जाने वाली पर तरजीह़ न दे और अपनी ममलुकत, हुकूमत, बादशाहत, ख़ुद्दाम, ग़ुलाम और लज़्ज़ात व ख़्वाहिशात में खो कर ग़ाफ़िल मत हो जा, बेशक जिस में तू मगन है उस की कोई ह़क़ीक़त नहीं, बज़ाहिर जो तेरी मिल्किय्यत है वोह ह़क़ीक़तन हलाकत है, जो फ़र्ह़ व सुरूर है वोह ह़क़ीक़त में लह़्वो ग़ुरूर है, जो आज है उस का कल कुछ पता नहीं, अल्लाह तआ़ला की बारगाह में जल्दी ह़ाज़िर हो जाओ क्यूंकि उस का फ़रमान है,

وَسَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं, परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है।* (پ۴، ال عمران۱۳۳) जब येह नींद से बेदार हुवे तो बे इख़्तियार इन के मुंह से निकला : "येह अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से तम्बीह और नसीह़त है।" फिर किसी को कुछ बताए बिग़ैर येह अपने मुल्क से निकल आए और इन पहाड़ों में आन बसे। जब मुझे इन का वाक़िआ़ मा'लूम हुवा तो मैं ने इन्हें तलाश किया और इन से इस बारे में

www.dawateislami.net

दरयाफ़्त किया तो इन्हों ने येह वाक़िआ़ मुझे सुनाया, फिर मैं ने भी इन्हें अपना वाक़िआ़ सुनाया। मैं बराबर इन से मुलाक़ात के लिये आता रहा, यहां तक कि इन का इन्तिक़ाल हो गया और यहीं इन को दफ़्न कर दिया गया। ﴿کتاب التوابین، ص۱۵۲﴾

﴿110﴾ ﴿पाउं अन्दर दाख़िल नहीं किया.....﴾

बनी इस्राईल में एक बुज़ुर्ग رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्सए दराज़ से अपने हुजरे में मसरूफ़े इ़बादत थे। एक मरतबा एक औ़रत इन के दरवाज़े पर आन खड़ी हुई और इन की निगाह उस औ़रत पर पड़ी तो शैत़ान ने इन्हें बहका दिया। चुनान्चे, आप उस औ़रत की त़रफ़ बढ़े लेकिन जैसे ही अपना एक पाउं हुजरे से बाहर निकाला, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ आप पर ग़ालिब आया और कहने लगे : "नहीं ! मुझे येह काम नहीं करना चाहिये।" फिर आप के दिल में ख़याल आया कि "येह पाउं जो दरवाज़े से बाहर **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानी के लिये निकला है, दोबारा मेरे हुजरे में दाख़िल नहीं होगा।" चुनान्चे, आप वहीं बैठ गए और उस क़दम को कमरे के अन्दर न ले गए, यहां तक कि वोह पाउं गरमी और सरदी के असरात से गल सड़ कर आप के जिस्म से अलग हो गया। ﴿کتاب التوابین، ص۷۹﴾

﴿111﴾ ﴿ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी शीराज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "मस्जिदुल ह़राम में कुछ लोग का'बतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब इ़बादत में मसरूफ़ थे। अचानक उन्हों ने एक शख़्स को देखा कि दीवारे का'बा से लिपट कर ज़ारो क़ित़ार रो रहा है और उस के लबों पर येह दुआ़ जारी है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर मेरे आ'माल तेरी बारगाह के लाइक़ नहीं हैं तो बरोज़े क़ियामत मुझे अन्धा उठाना।"

www.dawateislami.net

लोगों को येह अ़जीबो ग़रीब दुआ़ सुन कर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा, चुनान्चे, उन्हों ने दुआ़ मांगने वाले से इस्तिफ़सार किया : "ऐ शैख़ ! हम तो क़ियामत में आ़फ़िय्यत के त़लब गार हैं और आप अन्धा उठाए जाने की दुआ़ फ़रमा रहे हैं ! इस में क्या राज़ है ?" उस शख़्स ने रोते हुवे जवाब दिया ! "मेरा मत़लब येह है कि अगर मेरे आ'माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह के लाइक़ नहीं तो मैं क़ियामत में इस लिये अन्धा उठाया जाना पसन्द करता हूं कि मुझे लोगों के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े।" वोह सब लोग इस आ़रिफ़ाना जवाब को सुन कर बेह़द मुतअस्सिर हुवे लेकिन अपने मुख़ात़ब को पहचानते न थे, इस लिये पूछा : "ऐ **शैख़** ! आप हैं कौन ?" उस ने जवाब दिया : "मैं **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** हूं।" ﴿فیضان سنت بحوالہ گلستانِ سعدی ص۷۳۳﴾

﴿112﴾ जिस के हुक्म से रोज़ा रखा है.....

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रोज़ा कुशाई की तक़रीब का ह़ाल बयान करते हुवे मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "रमज़ानुल मुबारक का मुक़द्दस महीना है और हुज़ूरे पुरनूर के पहले रोज़ा कुशाई की तक़रीब है, काशानए अक़्दस में जहां इफ़्तार का और बहुत क़िस्म का सामान है। एक मह़फ़ूज़ कमरे में फ़ीरीनी के पियाले भी जमाने के लिये चुने हुवे थे। आफ़्ताब निस्फ़ुन्नहार पर है, ठीक शिद्दत की गर्मी का वक़्त है कि हुज़ूर के वालिदे माजिद आप को उसी कमरे में ले जाते हैं और दरवाज़े के पट बन्द कर के एक पियाला उठा कर देते हैं कि, "इसे खा लो।"

www.dawateislami.net

आप अ़र्ज़ करते हैं : "मेरा तो रोज़ा है कैसे खाऊं ?" इरशाद होता है "बच्चों का रोज़ा ऐसा ही होता है, लो खा लो, मैं ने दरवाज़ा बन्द कर दिया है, कोई देखने वाला भी नहीं है !" आप अ़र्ज़ करते हैं : "जिस के हुक्म से रोज़ा रखा है, वोह तो देख रहा है !" येह सुनते ही हुज़ूर के वालिदे माजिद की चश्माने मुबारक से अश्कों का तार बन्ध गया और कमरा खोल कर बाहर ले आए। ﴿حیات اعلیٰ حضرت ص ۸۷﴾

﴿113﴾ ﴿बेहोशी में दुआ.....﴾

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی को सालहा साल से कसरते पेशाब का आ़रज़ा (मरज़) लाह़िक़ था। बिल आख़िर दिसम्बर **2002** ई. में डॉक्टरों ने ऑपरेशन तजवीज़ किया जिस के लिये आप ही के मुत़ालबे पर नमाज़े इ़शा के बा'द का वक़्त त़ै किया गया ताकि आप की कोई नमाज़ क़ज़ा न होने पाए। ऑपरेशन हो जाने के बा'द नीम बेहोशी के आ़लम में दर्द से कराहने या चिल्लाने की बजाए आप ने वक़्तन फ़ वक़्तन जिन कलिमात की बार बार तकरार की वोह येह थे,.....

सब लोग गवाह हो जाओ मैं मुसलमान हूं,..... या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं मुसलमान हूं, मैं तेरा ह़क़ीर बन्दा हूं,.....या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं आप का अदना ग़ुलाम हूं,....اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ग़ौसुल आ'ज़म (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) का ग़ुलाम हूं,.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे गुनाहों को बख़्श दे,..... ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा,....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे मां बाप की मग़फ़िरत फ़रमा,....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई बहनों की मग़फ़िरत फ़रमा,.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे तमाम मुरीदों की मग़फ़िरत फ़रमा,.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (मजलिसे शूरा के मर्ह़ूम निगरान) ह़ाजी मुश्ताक़

www.dawateislami.net

की मग्फ़िरत फ़रमा,.......ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम दा'वते इस्लामी वालों और वालियों की मग्फ़िरत फ़रमा,.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (अपने) महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग्फ़िरत फ़रमा। ....

(**मुलख़्ख़सन :** माख़ूज़ अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ओपरेशन की ईमान अफ़रोज़ झलकियां, स. 3)

《114》《 मुझे अपने रब तआ़ला का डर है.....》

बाबुल इस्लाम **सिन्ध** सत्ह़ पर 2, 3, 4, मुहर्रमुल ह़राम 1426 हि. को होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाले बयान के दौरान शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तौबा की शराइत़ की वज़ाह़त करते हुवे वहां मौजूद लाखों इस्लामी भाइयों और टेलीफ़ोन वग़ैरा के ज़रीए़ सुनने वाली इस्लामी बहनों से इरशाद फ़रमाया : "तौबा की एक शर्त़ येह भी है कि जिस की ह़क़ तलफ़ी की हो या अज़िय्यत पहुंचाई हो उस से मुआ़फ़ी मांगी जाए, (फिर बत़ौरे आ़जिज़ी इरशाद फ़रमाया) जिस के तअ़ल्लुक़ात जितने ज़ियादा होते हैं उतना ही दूसरों की दिल आज़ारी हो जाने का एह़तिमाल ज़ियादा होता है, और मेरे तअ़ल्लुक़ात यक़ीनन आप सब से ज़ियादा हैं, लिहाज़ा मेरी दरख़्वास्त है कि मेरी त़रफ़ से अगर आप को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो, कोई ह़क़ तलफ़ हो गया हो, कभी डांट दिया हो, मुलाक़ात न करने पर आप नाराज़ हो गए हों, तो हाथ जोड़ कर दरख़्वास्त है कि मुझे मुआ़फ़ कर दीजिये, मुझे आप से नहीं अपने रब तआ़ला से डर लगता है, कह दीजिये : "जा मुआ़फ़ किया।"

और फिर इस का इक़रार करने वालों को दुआ़ देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुआ़फ़ कर दिया, **अल्लाह** तआ़ला उसे जल्द मदीना दिखाए, जो केसिट में सुनें, या इन्टरनेट या फ़ोन के ज़रीए़ सुन रहे हों, वोह भी मुआ़फ़ कर दें।" (मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

﴾115﴿ ﴾ईमान की शम्अ़ सदा रोशन रहे.....﴿

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1424 हि. में मर्कज़ी मजलिसे शूरा व दीगर मजालिस के अराकीन और दूसरे इस्लामी भाइयों के नाम लिखे गए एक खुले ख़त में तह़रीर फ़रमाया :.....

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही عَزَّوَجَلَّ
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही عَزَّوَجَلَّ
मेरे दिल से दुन्या की उल्फ़त मिटा दे
बना आ़शिक़े मुस्त़फ़ा ﷺ *या इलाही* عَزَّوَجَلَّ

मैं अपनी क़ियाम गाह के मक्तब में मग़मूम व मलूल क़लम संभाले आप ह़ज़रात की बारगाहों में तह़रीरन दस्तक दे रहा हूं। आज कल यहां तूफ़ानी हवाएं चल रही हैं कि जो दिलों को ख़ौफ़ज़दा कर देती हैं, हाए हाए ! बुढ़ापा आंखें फाड़े पीछा किये चला आ रहा है और मौत का पैग़ाम सुना रहा है, मगर नफ़्से अम्मारा है कि सरकशी में बढ़ता ही चला जा रहा है, कहीं हवा का कोई तेज़ व तुन्द झोंका मेरी ज़िन्दगी के चराग़ को गुल न कर दे, ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दगी का चराग़ तो यक़ीनन बुझ कर रहेगा, मेरे ईमान की शम्अ़ सदा रोशन रहे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे गुनाहों के दलदल से निकाल दे, करम...करम....करम..

(**माख़ूज़ अज़ :** ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 1)

www.dawateislami.net

﴾116﴿ फूट फूट कर रोने लगे.....

सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया, मुल्तान शरीफ़ में सि. 2004 ई. में मुन्अ़क़िद होने वाले दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे सालाना बैनल अक़्वामी इजतिमाअ़ में "अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर" के मौज़ूअ़ पर रिक़्क़त अंगेज़ बयान करते हुवे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जब ईमान की ह़िफ़ाज़त से मुतअ़ल्लिक़ तरग़ीब देते हुवे येह वाक़िआ़ सुनाया कि

"ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह मुअज़्ज़िन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) फ़रमाते हैं कि मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि मैं ने एक शख़्स को देखा कि वोह ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तकरार कर रहा है : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दुन्या से मुसलमान ही रुख़्सत करना।" मैं ने उस से पूछा कि इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : "मेरे दो भाई थे। मेरा बड़ा भाई एक अ़र्से तक मस्जिद में बिला मुआ़वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने क़ुरआने पाक मांगा, हम ने उसे दिया ताकि वोह इस से बरकतें ह़ासिल करे, मगर क़ुरआन शरीफ़ हाथ में ले कर वोह कहने लगा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं क़ुरआन के तमाम ए'तिक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता हूं और नस्रानी (या'नी ईसाई) मज़हब इख़्तियार करता हूं।" चुनान्चे, वोह कुफ़्र की ह़ालत में मर गया। फिर दूसरे भाई ने तीस बरस तक मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह अज़ान दी, मगर वोह भी आख़िरी वक़्त में नस्रानी हो कर मरा। लिहाज़ा ! मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्र मन्द हूं और हर वक़्त ख़ातिमा बिल ख़ैर की दुआ़ मांगता रहता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह

www.dawateislami.net

मुअज़्ज़िन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उस से पूछा कि तुम्हारे दोनों भाई आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे जिस के सबब उन का ख़ातिमा बुरा हुवा ? उस ने बताया : "वोह ग़ैर औरतों में दिल चस्पी लेते थे और अम्रदों (या'नी बेरीश लड़कों) से दोस्ती करते थे।"

तो येह वाक़िआ सुनाने के बा'द ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ग़लबे की वजह से अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) अपने आसूओं पर क़ाबू न रख सके और फूट फूट कर रोने लगे और काफ़ी देर तक रोते रहे और बयान जारी न रख सके।

मुसलमां हैं अ़त्तार तेरी अ़ता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(117) दीवार से लिपट कर रोने लगे....

माहे ज़ुल हिज्जा सि. **1423** हि. में ईदुल अज़्हा के मौक़अ़ पर बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की त़रफ़ से ऊंट और गाए की क़ुरबानी दी गई। क़ुरबानी का इन्तिज़ाम "दा'वते इस्लामी" के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) के बाहर किया गया था। वक़्ते अ़स्र से कुछ देर क़ब्ल क़ुरबानी के वक़्त आप भी वहीं तशरीफ़ ले आए। जब उस ऊंट को नह़र और गाए को ज़ब्ह़ किया गया तो देखने वालों ने देखा कि यकायक आप के चेहरे पर उदासी त़ारी हो गई और आप बेह़द ग़मगीन नज़र आने लगे। क़ुरबानी हो जाने के बा'द आप मेह़राब के पीछे

www.dawateislami.net

वाक़िअ़ अपने कमरे की त़रफ़ रवाना हो गए और कमरे में पहुंचने के बा'द दीवार से लिपट कर ज़ारो क़ित़ार रोने लगे। इतने में मुअज़्ज़िन इस्लामी भाई ने अज़ाने अ़स्र दी और आप नमाज़ पढ़ाने के लिये मस्जिद में आ गए। नमाज़े अ़स्र अदा करने के बा'द (अपने ही कलाम में से) चन्द अश्आ़र पढ़ने का इशारा फ़रमाया। जब इस्लामी भाई ने इन अश्आ़र को पढ़ना शुरूअ़ किया तो आप फूट फूट कर रोने लगे। आप को रोता देख कर वहां पर मौजूद इस्लामी भाई भी रोने लगे और पूरी फ़ज़ा सोगवार हो गई आप मुसलसल रोते रहे यहां तक कि नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया। उन अश्आ़र में चन्द येह हैं,.....

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का सब ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता
आ के न फंसा होता मैं बत़ौरे इन्सां काश !
काश ! मैं मदीने का ऊंट बन गया होता
ऊंट बन गया होता और ईदे क़ुरबां में
काश ! दस्ते आक़ा ﷺ से मैं नह़र हुवा होता
काश ! मैं मदीने का कोई दुम्बा होता या
सींग वाला चितकुब्रा मेंढा बन गया होता
आह ! कसरते इ़स्यां, हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

(वसाइले बख़्शिश, **अज़ :** अमीरे अहले सुन्नत, स.128)

www.dawateislami.net

मोहतरम इस्लामी भाइयो ! येह तमाम वाक़िआ़त उन नुफ़ूसे कुदसिय्या के थे, जिन में बा'ज़ वोह हैं जो मर्तबए नबुव्वत पर फ़ाइज़ हैं और बा'ज़ वोह हैं जिन के सरों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी विलायत का ताज रखा। येह वोही पाकीज़ा लोग हैं जिन का ज़िक्र करते ही हमारी ज़बान पर बे इख़्तियार या तो صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या عَلَيْهِ السَّلَام या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه या مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی जैसे अल्फ़ाज़ जारी हो जाते हैं और हमारी निगाहें फ़र्ते अदब से झुक जाती हैं और दिल ता'ज़ीम की ख़ातिर फ़र्शे राह बन जाता है। मक़ामे ग़ौर है कि जब इन बुज़ुर्ग व बरतर हस्तियों के ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का येह आ़लम है तो हम जैसे पापी व गुनहगारों को रब तआ़ला عَزَّوَجَلَّ की बेनियाज़ी, नाराज़ी, गिरिफ़्त और उस के अ़ज़ाब से कितना ज़ियादा डरना चाहिये ! इस का अन्दाज़ा कोई भी ज़ी फ़हम ब आसानी लगा सकता है।

﴾5﴿ ख़ुद एह़तिसाबी की आ़दत अपनाने की कोशिश करते हुवे "फ़िक्रे मदीना" करना :

ज़िक्र कर्दा दीगर उमूर अपनाने के साथ साथ अपनी ज़ात का मुह़ासबा करने की आ़दत अपना लेने से भी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ह़ुसूल की मन्ज़िल पर पहुंचना क़दरे आसान हो जाता है, और इस आ़दत को अपनाने के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने की तरकीब बना लेना बेह़द मुफ़ीद साबित होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

फ़िक्रे मदीना का आसान सा मत़लब येह है कि, "इन्सान उख़रवी ए'तिबार से अपने मा'मूलाते ज़िन्दगी का मुह़ासबा करे, फिर जो काम उस की आख़िरत के लिये नुक़्सान देह साबित हो सकते हों, उन्हें दुरुस्त करने की कोशिश में लग जाए और जो उमूर उख़रवी ए'तिबार से नफ़्अ़ बख़्श नज़र आएं, उन में बेहतरी के लिये इक़्दामात करे," फ़िक्रे मदीना की

www.dawateislami.net

बरकत से इन्सान के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ बेदार होता है, जिस की वजह से नेक आ'माल की ज़बरदस्त रग़बत पैदा होती है नीज़ गुनाहों से वह़शत मह़सूस होती है और साबिक़ा ज़िन्दगी में हो जाने वाले गुनाहों पर तौबा की तौफ़ीक़ भी ह़ासिल हो जाती है । ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें फ़िक्रे मदीना की तरग़ीब देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि "पांच से क़ब्ल, पांच को ग़नीमत जानो ।

﴿1﴾ जवानी को बुढ़ापे से पहले । ﴿2﴾ सिह़्ह़त को बीमारी से पहले । ﴿3﴾ मालदारी को तंगदस्ती से पहले । ﴿4﴾ ज़िन्दगी को मौत से पहले.....और.....﴿5﴾ फ़राग़त को मसरूफ़िय्यत से पहले ।"

﴿المنبہات علی الاستعداد لیوم المعاد ، ص ۵۸﴾

और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि :"ऐ लोगो ! अपने आ'माल का ह़िसाब कर लो, इस से पहले की क़ियामत आ जाए और तुम से इन का ह़िसाब लिया जाए ।"

﴿حلیۃ الاولیاء، ج۱، ص۵۶﴾

जब कि ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि "दुन्या की फ़िक्र दिल में अन्धेरा जब कि आख़िरत की फ़िक्र रोशनी व नूर पैदा करती है ।" ﴿المنبہات علی الاستعداد لیوم المعاد ، ص ٤﴾

और ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "करीम, कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी नहीं करता और ह़कीम (या'नी साह़िबे अ़क़्ल) कभी दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ नहीं देता ।" ﴿ایضاً﴾

मोह़तरम इस्लामी भाइयो ! फ़िक्रे मदीना की बरकात से कामिल तौ़र पर मुस्तफ़ीद होने के लिये हमें चाहिये कि रोज़ाना सोने से पहले घर वग़ैरा के किसी कमरे में तन्हा...या...ऐसी जगह जहां पर मुकम्मल ख़ामोशी हो, आंखें बन्द कर के सर झुकाए कम अज़ कम बारह मिनट फ़िक्रे मदीना

www.dawateislami.net

करने की आ़दत बनाएं, और फिर मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करें (जिस की तफ़्सील आगे आ रही है) । इस के त़रीक़ए कार की वज़ाह़त के लिये फ़िक्रे मदीना की चन्द मिसालें तवज्जोह से मुलाह़ज़ा फ़रमाइये,

﴾1﴿ कभी तो इस त़रह़ अपने रोज़ मर्रा के मा'मूलात का मुह़ासबा कीजिये कि

"कल सुब्ह़ नींद से बेदार होने के बा'द से अब तक मैं अपनी ज़िन्दगी के कितने घन्टे गुज़ार चुका हूं ?.....जिस अन्दाज़ से मैं ने येह वक़्त गुज़ारा, इस दौरान जो अफ़्आ़ल मुझ से सरज़द हुवे, क्या ज़िन्दगी बसर करने का मेरा येह अन्दाज़, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़दीक पसन्दीदा है....या.....नापसन्दीदा ?..... अफ़्सोस ! मेरा तर्ज़े ज़िन्दगी तो नापसन्दीदा ही शुमार होगा क्यूंकि अय्यामे गुज़श्ता की त़रह़ मैं ने सब से पहला काम तो येह किया था कि नींद को अ़ज़ीज़ रखते हुवे नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा कर दी.....,फिर दिन चढ़े बेदार होने के बा'द सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी और नूरानी सुन्नते मुबारका एक मुठ्ठी दाढ़ी शरीफ़ रखने को तर्क कर देने का सिलसिला क़ाइम रखते हुवे इसे मुंड या काट कर (مَعَاذَاللّٰه) गन्दी नाली तक में बहा देने से दरैग़ नहीं किया..., फिर कपड़े वग़ैरा तब्दील करने के दौरान टेप रेकोर्डर या केबल वग़ैरा पर गाने सुनने का भी सिलसिला रहा....., ना महरम औ़रतों मसलन भाभी वग़ैरा से छेड़ छाड़ भी जारी रही....., नाश्ते में ताख़ीर की वजह से वालिदा के सामने गुस्ताख़ाना अन्दाज़े गुफ़्तगू इख़्तियार कर के इन का दिल भी तो दुखाया था...., अब्बा जान ने कोई काम कहा तो ह़स्बे मा'मूल उन्हें टक्का सा जवाब दे दिया था....., फिर अपने दफ़्तर जाने के लिये जो लिबास मैं ने पहन रखा था वोह भी तो ख़िलाफ़े सुन्नत था....., जब घर से रवाना हुवा तो चलते चलते अपने पड़ोसियों की रंग शुदा साफ़

www.dawateislami.net

सुथरी दीवार पर पान की पीक फेंक कर उसे दाग़दार कर डाला था...., बस में कन्डेकटर वग़ैरा से ख़्वाह मख़्वाह उलझ कर दो चार गालियां भी तो बकी थीं....., और बस में बैठी बेपर्दा ख़वातीन को मुसलसल घूरा भी तो था....., फिर दौराने मुलाज़मत अपनी डयूटी पूरी करने की बजाए इधर उधर की बातों में वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया...., अपने दफ़्तरी साथियों को नागवार गुज़रने के यक़ीन के बावुजूद इन की अश्या इन की इजाज़त के बिग़ैर भी इस्ति'माल कर डालीं....., ज़ोहर की नमाज़ का त़वील वक़्त मैं ने अपने दोस्तों से ''गप शप'' करते हुवे गुज़ार दिया, इसी त़रह़ अ़स्र व मग़रिब की नमाज़ें भी मैं ने दीगर मसरूफ़िय्यात की नज़्र कर दीं....., वापसी पर रश की बिना पर दूसरों को धक्के देते हुवे घर वापसी के लिये बस में सुवार हो गया और बस स्टॉप से घर आते हुवे कोई ग़रीब मुझ से अन्जाने में टकरा गया था तो मैं ने उस का क़ुसूर न होने के बा वुजूद उसे गिरेबान से पकड़ कर पीट डाला था....., घर पहुंच कर मैं ने ''शदीद थकावट'' की वजह से इ़शा की नमाज़ भी न पढ़ी....., और रात का खाना खाने के बा'द ''फ़्रेश (Fresh)'' होने के लिये आवारा दोस्तों की मह़फ़िल में जा बैठा, फ़ोह़्श कलामी, गाली गलोच, ताश का खेल इस मह़फ़िल की ''नुमायां ख़ुसूसिय्यात'' थीं, इस दौरान किसी की बेटी, किसी की बहन के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात का तबादला भी हम तमाम दोस्तों का ''पसन्दीदा मश्ग़ला'' था....., जब रात गए घर लौटा तो सब घर वाले सो चुके थे, लिहाज़ा मैं ज़ेह्नी सुकून के ह़ुसूल के लिये केबल पर फ़िल्मे देखने में मश्ग़ूल हो गया जिस में सेक्स अपील (Sex Apeal) मनाज़िर की कसरत थी....., यहां तक कि नींद से आंखे बन्द होने लगी, और मैं सोने के लिये बिस्तर पर चला गया....., यूं मैं ने कल का सारा वक़्त अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी में गुज़ार दिया.....।

www.dawateislami.net

इस मक़ाम पर पहुंच कर आंखें खोल कर अपने आप से यूं मुख़ातिब हों कि : "ऐ नादान ! तू कब तक इसी मन्हूस तर्ज़े ज़िन्दगी को अपनाए रखेगा ?..... क्या रोज़ाना यूंही तेरे नामए आ'माल में गुनाहों की ता'दाद बढ़ती रहेगी ?..... क्या तुझे नेकियों की बिल्कुल ह़ाजत नहीं ?..... क्या तुझ में इतनी हिम्मत व त़ाक़त है कि दोज़ख़ के अ़ज़ाबात बरदाश्त कर सके ?.... क्या तू जन्नत से महरूमी का दुख बरदाश्त कर पाएगा ?.....याद रख अगर अब भी तू ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार न हुवा तो मौत के झटके बिल आख़िर तुझे झन्झोड़ कर उठा देंगे। लेकिन अफ़्सोस ! उस वक़्त बहुत देर हो चुकी होगी, पछताने के सिवा तू कुछ न कर सकेगा। अभी तू ज़िन्दा है, इस लिये इस वक़्त को ग़नीमत जान और संभल जा और अपनी इस मुख़्तसर ज़िन्दगी को ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और उस के ह़बीब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में बसर कर ले।"

﴿2﴾ और कभी इस त़रह़ तसव्वुर कीजिये, कि

"मेरी मौत का वक़्त आन पहुंचा और मुझ पर ग़शी त़ारी हो चुकी है, रिश्तेदार वग़ैरा बेबसी के आ़लम में मुझे मौत के मुंह में जाता हुवा देख रहे हैं। नज़्अ़ की नाक़ाबिले बयान तकालीफ़ का सामना है, ज़बान की क़ुव्वते गोयाई रुख़्सत हो चुकी, मुझे सख़्त प्यास महसूस हो रही है। इसी असना में किसी ने सिरहाने सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, रिश्तेदारों की सूरतें मदहम होती नज़र आ रही हैं। अब गले से ख़रख़राहट की आवाज़ें आने लगीं और रूह़ ने ज़िस्म का साथ छोड़ दिया।

मेरी मौत वाक़ेअ़ हो जाने के बा'द अ़ज़ीज़ो अक़ारिब पर गिर्या त़ारी हो गया। बीवी बच्चे, बहन भाई, मां बाप वग़ैरा सभी शिद्दते ग़म से आंसू बहा रहे हैं और कुछ लोग मेरे घर वालों को दिलासा दे रहे हैं। इन में से

www.dawateislami.net

किसी ने आगे बढ़ कर मेरी बे नूर आंखें बन्द कर दीं और पाउं के दोनों अंगूठे और दोनों जबड़ों को कपड़े की पट्टी से बान्ध दिया। फिर कुछ लोग क़ब्र की तय्यारी के लिये और कुछ कफ़न व तख़्ताए ग़ुस्ल लाने के लिये रवाना हो गए। ग़ुस्ल का इन्तिज़ाम होने पर मुझे तख़्ताए ग़ुस्ल पर लिटा कर ग़ुस्ल दिया गया और सफ़ेद कफ़न पहना कर आख़िरी दीदार के लिये घर वालों के सामने लिटा दिया गया। मेरे चाहने वालों ने आख़िरी मरतबा मुझे देखा कि येह चेहरा अब दुन्या में दोबारा हमें दिखाई न देगा। पूरे घर की फ़ज़ा पर अ़जीब सोगवारी छाई हुई है, दरो दीवार पर उदासी त़ारी है।

बिल आख़िर ! मेरी चारपाई को कन्धों पर उठा लिया गया, और मैं ने एक ह़सरत भरी नज़र अपने घर पर डाली कि येह वोही घर है, जहां मेरी पैदाइश हुई, मेरा बचपन गुज़रा, यहीं मैं ने जवानी की बहारें देखीं....., अपने कमरे की त़रफ़ देखा जहां अब कोई दूसरा बसेरा करेगा...., अपने इस्ति'माल की चीज़ों की त़रफ़ देखा जिन्हें अब कोई और इस्ति'माल करेगा....., अपने हाथों से लगाए हुवे पोदों की जानिब देखा जिन की निगहबानी अब कोई दूसरा करेगा। लोग मेरा जनाज़ा अपने कन्धों पर उठाए जनाज़ा गाह की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ हो गए। मैं ने इन्तिहाई ह़सरत के साथ आख़िरी मरतबा अपने मां बाप, बीवी बच्चों, भाई बहनों, दीगर रिश्तेदारों, दोस्तों और मह़ल्ले वालों की त़रफ़ देखा, उन गलियों, उन रास्तों को देखा जिन से गुज़र कर कभी मैं अपने काम काज या स्कूल वग़ैरा के लिये जाया करता था।

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो !

चले आओ मेरे पीछे तुम्हारा राहनुमा मैं हूं

www.dawateislami.net

जनाज़ा गाह पहुंच कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई, इस के बा'द मेरी चारपाई का रुख़ क़ब्रों की जानिब कर दिया गया, जहां मुझे त़वील अ़र्से के लिये किसी तारीक क़ब्र में तन्हा छोड़ दिया जाएगा....., येह वोही क़ब्रिस्तान है कि जहां दिन के उजाले में तन्हा आने के तसव्वुर ही से मेरा कलेजा कांपता था। येह वोही क़ब्र है जिस के बारे में कहा गया कि जन्नत का एक बाग़ है या दोज़ख़ का एक गढ़ा। और येह कि क़ब्र आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल है, अगर साहिबे क़ब्र ने इस से नजात पा ली तो बा'द (या'नी क़ियामत) का मुआ़मला आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है।

वहां पहले से दफ़्न मुर्दों ने येह कह कर मेरे रंजो ग़म में इज़ाफ़ा कर दिया कि, ऐ दुन्या से आने वाले ! क्या तू ने हम से नसीह़त ह़ासिल न की ? क्या तू ने न देखा कि "हमारे आ'माल कैसे ख़त्म हुवे और तुझे तो अ़मल करने की मोहलत मिली थी, लेकिन अफ़्सोस ! कि तू ने वक़्त ज़ाएअ़ कर दिया।" क़ब्र की इस पुकार ने मुझे दहशत ज़दा कर दिया कि "ऐ (अपनी ज़िन्दगी में) ज़मीन पर इतरा कर चलने वाले ! क्या तू ने मरने वालों से इ़ब्रत ह़ासिल न की ? क्या तू ने न देखा कि किस त़रह़ तेरे रिश्तेदारों को लोग उठा कर क़ब्रों तक ले गए ?... येह तो वोही जगह है कि जहां दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते सर से पाउं तक बाल लटकाए, आंखों से शो'ले निकालते हुवे इन्तिहाई सख़्त लहजे में मुझ से तीन सुवाल करेंगे : مَنْ رَّبُّکَ (तेरा रब कौन है?) और مَادِیْنُکَ (तेरा दीन क्या है?) इस के बा'द किसी की नूरानी सूरत दिखा कर पूछेंगे, مَاکُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُل (तू इस हस्ती के बारे में क्या कहा करता था ?) येह सोच कर मेरा दिल डूबा जा रहा है कि गुनाहों की नुहूसत के सबब मेरी क़ब्र कहीं दोज़ख़ का गढ़ा न बना दी जाए। ऐ काश ! मैं ने ज़िन्दगी में नेकियां कमाई होतीं, अफ़्सोस ! मैं ने गुनाहों से परहेज़ किया होता, आह ! अब मेरा क्या बनेगा ?"

www.dawateislami.net

इस के बा'द आंखें खोल दें और अपने आप से मुख़ातब हो कर येह कहिये कि "अभी मैं ज़िन्दा हूं, अभी मेरी सांसें चल रही हैं, इन ह़सरत आमेज़ लम्ह़ात के आने से पहले पहले मैं अपनी क़ब्र को जन्नत का बाग़ बनाने की जिद्दो जहद में लग जाऊंगा, ख़ूब नेकियां करूंगा, गुनाहों से किनारा कशी इख़्तियार करूंगा ताकि कल मुझे पछताना न पड़े।"

﴾3﴿ कभी इस त़रह़ तसव्वुर करें कि

"मैं ने क़ब्र में एक त़वील अ़र्सा गुज़ारने के बा'द अरबों खरबों मुर्दों की त़रह़ वहां से निकल कर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िरी के लिये मैदाने मह़शर की त़रफ़ बढ़ना शुरूअ़ कर दिया है। सिर्फ़ मुझे ही नहीं बल्कि हर एक को पसीनों पर पसीने आ रहे हैं जिस की बदबू से दिमाग़ फटा जा रहा है...., सूरज निहायत कम फ़ासिले पर है और आग बरसा रहा है लेकिन उस की तपश से बचने के लिये कोई साया भी मयस्सर नहीं.., गर्मी और प्यास से बुरा ह़ाल है....., हुजूम की कसरत की वजह से धक्के लग रहे हैं.... जब कि अन्दरूनी कैफ़िय्यत येह है कि ज़िन्दगी भर की जाने वाली **अल्लाह** तआ़ला की नाफ़रमानियों का सोच कर दिल डूबा जा रहा है....., इन के नतीजे में मिलने वाली हौलनाक सज़ाओं के तसव्वुर से ही कलेजा कांप रहा है...., दिल भी बे चैनी का शिकार है कि येह तो वोही इमतिह़ान गाह है जिस के बारे में कहा गया था कि इन्सान उस वक़्त तक क़दम न हटा सकेगा जब तक इन पांच सुवालात के जवाबात न दे ले (1) तुम ने ज़िन्दगी कैसे बसर की ? (2)जवानी किस त़रह़ गुज़ारी ? (3) माल कहां से कमाया ? और ...(4) कहां कहां ख़र्च किया ? (5) अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ कहां तक अ़मल किया ?

www.dawateislami.net

अब उ़म्र भर की कमाई का ह़िसाब देने का वक़्त आन पहुंचा लेकिन अफ़्सोस ! मुझे अपने दामन में सिवाए गुनाहों के कुछ दिखाई नहीं दे रहा.... शिद्दत की बे बसी के आ़लम में इमदाद त़लब निगाहें इधर उधर दौड़ा रहा हूं लेकिन कोई सहारा दिखाई नहीं दे रहा....., पछतावे का एह़सास भी सता रहा है कि **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में पेश करने के लिये मेरे पास कुछ भी तो नहीं.....! क्यूंकि शरीअ़त ने जो करने का हुक्म दिया वोह मैं ने किया नहीं मसलन मुझे रोज़ाना पांच वक़्त मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का हुक्म मिला लेकिन अफ़्सोस ! मैं नींद, मसरूफ़िय्यत, थकन, दोस्तों की मह़फ़िल वग़ैरा के सबब उन को क़ज़ा कर देता रहा...., मुझे रमज़ानुल मुबारक के महीने में रोज़ा रखने का कहा गया लेकिन अफ़्सोस मैं मा'मूली बीमारी और मुख़्तलिफ़ ह़ीलों बहानों से रोज़ा रखने की सआ़दत से मह़रूम होता रहा...., मुझे मख़्सूस शराइ़त के पूरा होने पर ज़कात व ह़ज की अदाएगी का हुक्म हुवा लेकिन अफ़्सोस ! मैं माल की मह़ब्बत की वजह से ज़कात व ह़ज की अदाएगी से कतराता रहा,....और....जिस जिस गुनाह से बचने की तल्क़ीन की गई थी, मैं उन्हीं गुनाहों में मुलव्विस होता रहा मसलन : मुझे किसी मुसलमान को बिला इजाज़ते शरई तक्लीफ़ देने से रोका गया लेकिन आह ! मैं मुसलमानों पर ज़ुल्म ढाता रहा...., वालिदैन को सताने से मन्अ़ किया गया लेकिन आह ! मैं ने वालिदैन की नाफ़रमानी कर के उन को सताना अपनी आ़दत बना लिया था...., किसी नामह़रम औ़रत को ब शहवत या बिला शहवत दोनों सूरतों में देखने से रोका गया लेकिन आह ! मैं ने अपनी निगाहों की ह़िफ़ाज़त न की....., झूट, ग़ीबत चुग़ली, फ़ोह़्श कलामी और गाली गलोच से अपनी ज़बान पाक रखने का कहा गया लेकिन आह ! मैं अपनी ज़बान

www.dawateislami.net

को क़ाबू में न रख सका....., मुझे ग़ीबत, फ़ोह्श कलामी वग़ैरा सुनने से रोका गया लेकिन मैं अपनी समाअ़त पाक़ीज़ा न रख सका....., दिल को बुग़्ज़, ह़सद, तकब्बुर, बद गुमानी, शुमातत, नाजाइज़ लालच व ग़ुस्सा वग़ैरा से ख़ाली रखने का इरशाद हुवा लेकिन आह ! मैं अपने दिल को इन ग़लाज़तों से न बचा सका.....।

आह ! सद आह ! येह दोनों ह़ुक्म तोड़ने के बा'द मैं किस मुंह से उस क़ह्हार व जब्बार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अपने आ'माले ज़िन्दगी का ह़िसाब दूंगा ?..... और फिर ऐसी ख़त़रनाक सूरते ह़ाल कि ख़ुद मेरे आ'ज़ाए जिस्मानी मसलन हाथ, पाउं, आंख, कान, ज़बान वग़ैरा मेरे ख़िलाफ़ गवाही देने के लिये बिल्कुल तय्यार हैं.....। दूसरी त़रफ़ अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में नेक आ'माल इख़्तियार करने वालों को मिलने वाले इन्आ़मात देख कर अपने करतूतों पर शदीद अफ़्सोस हो रहा है, कि वोह इत़ाअ़त गुज़ार बन्दे तो सीधे हाथ में नामए आ'माल ले कर शादां व फ़रह़ां जन्नत की त़रफ़ बढ़े चले जा रहे हैं लेकिन ना मा'लूम मेरा अन्जाम क्या होगा ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे जहन्नम में जाने का ह़ुक्म सुना कर उलटे हाथ में आ'माल नामा थमा दिया जाए, और सारे अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की नज़रों के सामने मुझे मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाए, हाए मेरी हलाकत, हाए मेरी रुस्वाई.....(وَالْعِيَاذُبِاللّٰه)

यहां पहुंच कर अपनी आंखें खोल दीजिये और अपने आप से मुख़ात़ब हो कर यूं कहिये कि "घबराओ मत ! अभी येह वक़्त नहीं आया, अभी मैं तो दुन्या में हूं....., इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानो और अपनी आख़िरत संवारने की कोशिश में मसरूफ़ हो जाओ ।" फिर पुख़्ता इरादा कीजिये कि, "मैं अपने रब तआ़ला का इत़ाअ़त गुज़ार बन्दा बनने के लिये उस के अह़कामात पर अभी और इसी वक़्त अ़मल शुरूअ़ कर दूंगा ताकि कल मैदाने मह़शर में मुझे पछताना न पड़े !"

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो !

फ़िक्रे मदीना के दौरान हो सके तो रोने की कोशिश कीजिये और अगर रोना न आए तो रोने जैसी सूरत बना लीजिये कि येह रोना हमें रब तआ़ला की नाराज़ी से बचा कर उस की रिज़ा तक पहुंचाएगा, बत़ौरे तरग़ीब इन रिवायात को मुलाह़ज़ा फ़रमाएं.....

﴾हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा....﴿

रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से रोता है, वोह हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा ह़त्ता कि दूध (जानवर के) थन में वापस आ जाए।

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۴۹۰،رقم الحدیث ۸۰۰﴿

﴾बख़्शिश का परवाना .....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से रोए, वोह उस की बख़्शिश फ़रमा देगा।"

﴾کنز العمال ، ج۳،ص۶۳،رقم الحدیث ۵۹۰۹﴿

﴾नजात क्या है ?.....﴿

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नजात क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो, तुम्हारा घर तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत बाहर न जाओ) और अपनी ख़त़ाओं पर आंसू बहाओ।"

﴾شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۴۹۲،رقم الحدیث ۸۰۵﴿

www.dawateislami.net

बिला हिसाब जन्नत में.....

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप की उम्मत में से कोई बिला हिसाब भी जन्नत में जाएगा ?" तो फ़रमाया : "हां ! वोह शख़्स जो अपने गुनाहों को याद कर के रोए।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٠٠﴾

आग न छुएगी.....

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दो आंखों को आग न छुएगी, एक वोह जो रात के अन्धेरे में रब عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और दूसरी वोह जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा देने के लिये जागे।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج١، ص٤٧٨، رقم الحدیث ٧٩٦﴾

पसन्दीदा क़त्रा.....

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला को उस क़त्रे से बढ़ कर कोई क़त्रा पसन्द नहीं जो (आंख से) उस के ख़ौफ़ से बहे या ख़ून का वोह क़त्रा जो उस की राह में बहाया जाता है।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٠٠﴾

मदनी ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ.....

मदनी ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस त़रह़ दुआ मांगते : اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ عَیْنَیْنِ ھَطَّالَتَیْنِ تُشْفِیَانِ بِذُرُوْفِ الدَّمْعِ قَبْلَ اَنْ تَصِیْرَ الدُّمُوْعُ دَمًا وَالْاَضْرَاسُ جمرًا ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे ऐसी दो आंखें अ़त़ा फ़रमा जो कसरत से आंसू बहाती हों और आंसू गिरने से तस्कीन दें, इस से पहले कि आंसू, ख़ून बन जाएं और दाढ़ें अंगारों में बदल जाएं। ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٠٠﴾

www.dawateislami.net

फ़िरिश्तों की दुआ.....

एक मरतबा सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा दिया तो हाज़िरीन में से एक शख़्स रो पड़ा। येह देख कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर आज की इस महफ़िल में तुम में से हर एक पर पहाड़ के बराबर भी गुनाह होते तो इस शख़्स की आहो बुका के सदक़े मुआफ़ कर दिये जाते, क्यूंकि मलाइका भी रो रो कर दुआ कर रहे हैं : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गिर्या व ज़ारी करने वालों की शफ़ाअ़त न रोने वालों के हक़ में क़बूल फ़रमा।"

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۴۹۴،رقم الحدیث ۸۱۰﴾

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से रोने वाला.....

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब येह आयत नाज़िल हुई :

"اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِیْثِ تَعْجَبُوْنَ0 وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या इस बात से तुम तअ़ज्जुब करते हो, और हंसते हो और रोते नहीं।* (پ۲۷،النجم۵۹،۶۰)

तो अस्हाबे सुफ़्फ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم इस क़दर रोए कि उन के रुख़्सार आंसूओं से तर हो गए। उन्हें रोता देख कर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोने लगे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बहते हुवे आंसू देख कर वोह और भी ज़ियादा रोने लगे। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह शख़्स जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा जो **अल्लाह** तआ़ला के डर से रोया हो।"

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۴۸۹،رقم الحدیث ۷۹۸﴾

www.dawateislami.net

दोनों रोने लगे.....

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام एक मरतबा कहीं खो गए। तीन दिन के बा'द आप उन की तलाश में निकले तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام ने एक क़ब्र खोद रखी है और उस में खड़े हो कर रो रहे हैं। आप ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! मैं तुम्हें तीन दिन से ढूंड रहा हूं और तुम यहां क़ब्र में खड़े आंसू बहा रहे हो ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि : "अब्बा जान ! क्या आप ने मुझे नहीं बताया कि जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान एक ख़ुश्क वादी है जिसे रोने वालों के आंसू ही भर सकते हैं ?" तो आप ने फ़रमाया : "ज़रूर ज़रूर ! मेरे बेटे।" और ख़ुद भी उन के साथ मिल कर रोने लगे।

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۴۹۴،رقم الحدیث ۸۰۹﴾

रोने जैसी सूरत बना ले.....

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया : "जो शख़्स रो सकता हो तो रोए और अगर रोना न आता हो तो रोने जैसी सूरत बना ले।"

﴿احیاء العلوم ، کتاب الخوف والرجاء ج ۴، ص ۲۰۱﴾

आंसू न पौंछो.....

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा ने फ़रमाया : "जब तुम में से किसी को रोना आए तो वोह आंसूओं को कपड़े से साफ़ न करे बल्कि रुख़्सारों पर बह जाने दे कि वोह इसी ह़ालत में रब तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर होगा।"

﴿شعب الایمان ،باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ ،ج۱،ص۴۹۴،رقم الحدیث ۸۰۸﴾

www.dawateislami.net

आग न छूएगी.......

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ख़ौफ़े ख़ुदा से आंसू बहाना मुझे इस से भी ज़ियादा महबूब है कि मैं अपने वज़्न के बराबर सोना सदक़ा करूं इस लिये कि जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के डर से रोए और उस के आंसूओं का एक क़तरा भी ज़मीन पर गिर जाए तो आग उस को न छूएगी।" ﴿درۃ الناصحین، المجلس الخامس والستون، ص۲۹۳﴾

आंसूओं को दाढ़ी से साफ़ करते........

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब रोते तो आंसू को अपने चेहरे और दाढ़ी से साफ़ करते और फ़रमाते कि मुझे मा'लूम हुवा है कि आग उस जगह को न छूएगी जहां आंसू गिरे हों।

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٠١﴾

रोना न आए तो......

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "रोया करो ! अगर रोना न आए तो रोने की कोशिश करो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर तुम में से किसी को इ़ल्म होता तो वोह इस क़दर चीख़ता कि उस की आवाज़ टूट जाती और इस त़रह़ नमाज़ पढ़ता कि उस की पीठ टूट जाती।"

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٣٠﴾

उस उम्मत को अ़ज़ाब नहीं होता.......

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जो आंखें आंसूओं से डबडबाएंगी, उस चेहरे पर क़ियामत के दिन ग़ुबार और ज़िल्लत नहीं चढ़ेगी, अगर उस के आंसू जारी हो जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला उन आंसूओं के पहले क़त़रे के साथ आग के कई समन्दर बुझा देता

www.dawateislami.net

है, और जिस उम्मत में से कोई शख़्स (ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से) रोता है, उस उम्मत को अ़ज़ाब नहीं होता।" ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ٢٠١﴾

﴿एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से बेहतर..﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ से एक आंसू का बहना मेरे नज़दीक एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से बेहतर है।"

﴿شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالیٰ، ج١، ص٥٠٢، رقم الحدیث ٨٤٢﴾

﴿एक क़त़रे की वजह से जहन्नम से आज़ादी...﴾

मरवी है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को बारगाहे ख़ुदावन्दी में लाया जाएगा और उसे उस का आ'माल नामा दिया जाएगा तो वोह उस में कसीर गुनाह पाएगा। फिर अ़र्ज़ करेगा : "या इलाही मैं ने तो येह गुनाह किये ही नहीं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "मेरे पास इस के मज़बूत़ गवाह हैं।" वोह बन्दा अपने दाएं बाएं मुड़ कर देखेगा लेकिन किसी गवाह को मौजूद न पाएगा और कहेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ वोह गवाह कहां हैं ?" तो **अल्लाह** तआ़ला उस के आ'ज़ा को गवाही देने का हुक्म देगा। कान कहेंगे : "हां ! हम ने (ह़राम) सुना और हम इस पर गवाह हैं।" आंखें कहेंगी : "हां हम ने (ह़राम) देखा।" ज़बान कहेंगी : "हां ! मैं ने (ह़राम) बोला था।" इसी त़रह़ हाथ और पाउं कहेंगे : "हां ! हम (ह़राम की त़रफ़) बढ़े थे।" शर्मगाह पुकारेगी : "हां ! मैं ने ज़िना किया था।"

वोह बन्दा येह सब सुन कर ह़ैरान रह जाएगा। फिर जब **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जहन्नम में जाने का हुक्म फ़रमा देगा तो उस शख़्स की सीधी आंख का एक बाल, रब तआ़ला से कुछ अ़र्ज़ करने की इजाज़त

www.dawateislami.net

तलब करेगा और इजाज़त मिलने पर अ़र्ज़ करेगा : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क्या तू ने नहीं फ़रमाया था कि मेरा जो बन्दा अपनी आंख के किसी बाल को मेरे ख़ौफ़ में बहाए जाने वाले आंसूओं में तर करेगा, मैं उस की बख़्शिश फ़रमा दूंगा ?" **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा : "क्यूं नहीं !" तो वोह बाल अ़र्ज़ करेगा : "मैं गवाही देता हूं कि तेरा येह गुनहगार बन्दा तेरे ख़ौफ़ से रोया था, जिस से मैं भीग गया था।" येह सुन कर **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे को जन्नत में जाने का हुक्म फ़रमा देगा। एक मुनादी पुकार कर कहेगा : "**सुनो ! फ़ुलां बिन फ़ुलां अपनी आंख के एक बाल की वजह से जहन्नम से नजात पा गया।**"

﴿درة الناصحين، المجلس الخامس والستون، ص٢٩٤﴾

﴾ अश्कों का प्याला...... ﴿

मन्क़ूल है कि बरोज़े क़ियामत जहन्नम से पहाड़ के बराबर आग निकलेगी और उम्मते मुस्त़फ़ा की त़रफ़ बढ़ेगी तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे रोकने की कोशिश करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को बुलाएंगे कि "ऐ जिब्राईल इस आग को रोक लो, येह मेरी उम्मत को जलाने पर तुली हुई है।" ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام एक प्याले में थोड़ा सा पानी लाएंगे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कर के अ़र्ज़ करेंगे : "इस पानी को इस आग पर डाल दीजिये।" चुनान्चे, सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पानी को आग पर उंडेल देंगे, जिस से वोह आग फ़ौरन बुझ जाएगी। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त करेंगे : "ऐ जिब्राईल ! येह कैसा पानी था जिस से आग फ़ौरन बुझ गई ?" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे कि : "येह आप के उन

www.dawateislami.net

उम्मतियों के आंसूओं का पानी है जो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब तन्हाई में रोया करते थे, मुझे रब तआ़ला ने इस पानी को जम्अ़ कर के मह़फ़ूज़ रखने का हुक्म फ़रमाया था ताकि आज के दिन आप की उम्मत की त़रफ़ बढ़ने वाली इस आग को बुझाया जा सके।"

﴿درۃ الناصحین،المجلس الخامس والستون،ص۲۹۵﴾

जहन्नम के किस कोने में डालेगा.......

मरवी है कि एक गुनहगार फ़ासिक़ शख़्स बसरा के गिर्दो नवाह़ में किसी जगह फ़ौत हो गया। उस की बीवी को कोई भी ऐसा शख़्स न मिला जो उस का जनाज़ा उठाए ह़त्ता कि पड़ोसियों में से भी कोई शख़्स आगे न बढ़ा क्यूंकि वोह शख़्स बड़ा फ़ासिक़ था। चुनान्चे, उस औ़रत ने दो मज़दूर उजरत पर लिये जो उसे जनाज़ा गाह तक ले गए मगर किसी ने भी उस का जनाज़ा न पढ़ा। फिर वोह उसे दफ़्न करने की ग़रज़ से सह़रा की त़रफ़ रवाना हुवे। उस सह़रा के क़रीब एक पहाड़ था जिस पर बड़े आ़बिदो ज़ाहिद बुज़ुर्ग रहते थे। उस औ़रत ने देखा कि वोह यूं खड़े हैं जैसे उसी जनाज़े का इन्तिज़ार कर रहे हों। उस बुज़ुर्ग ने उस शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो येह ख़बर पूरे शहर में फेल गई कि वोह बुज़ुर्ग फ़ुलां का जनाज़ा पढ़ेंगे।

लोग येह सुन कर उस जगह इकठ्ठे हो गए और बुज़ुर्ग के हमराह नमाज़े जनाज़ा अदा की। लोगों ने बुज़ुर्ग के उस शख़्स का जनाज़ा पढ़ने पर बड़ी ह़ैरत का इज़्हार किया तो उन्हों ने बताया : "मुझे ख़्वाब में हुक्म दिया गया था कि उस जगह जाओ जहां तुम्हें एक जनाज़ा मिलेगा जिस के साथ एक औ़रत होगी, उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो कि वोह मग़फ़िरत याफ़्ता है।" येह सुन कर लोगों की ह़ैरानी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया। फिर उस बुज़ुर्ग ने उस

www.dawateislami.net

शख़्स की बीवी से उस के किरदार वग़ैरा के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस ने कहा कि येह दिन भर बदमस्ती करने और शराब ख़ोरी में मश्हूर था। बुज़ुर्ग ने दोबारा कहा : "याद करो ! क्या तुम ने कभी इस में कोई भलाई की बात देखी ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! तीन बातें हैं :

﴿**पहली**﴾ : येह कि जब सुब्ह़ के वक़्त इस का नशा उतरता तो येह अपने कपड़े तब्दील करता और वुज़ू कर के सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ता और फिर से फ़िस्क़ो फ़ुजूर में खो जाता,

﴿**दूसरी**﴾ : येह कि येह हमेशा अपने घर में एक या दो यतीम बच्चों को रखता और अपने बच्चों से बढ़ कर उन का ख़याल रखता था

﴿**तीसरी**﴾ : जब रात गए येह नशे से कुछ देर के लिये होश में आता तो रोने लगता और कहा करता : "ऐ मेरे रब ! तूने मुझ ख़बीस को जहन्नम के किस कोने में डालने का इरादा फ़रमाया है ?" येह सुन कर वोह बुज़ुर्ग वापस हो लिये कि उ़क़्दा (राज़) खुल चुका था। ﴿مکاشفۃ القلوب، ص۳۱۵﴾

﴿हूर के चेहरे का नूर.....﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं अपनी इ़बादत गाह में खड़ा अपने वज़ाइफ़ मुकम्मल कर रहा था कि मुझ पर नींद का ग़लबा त़ारी हुवा चुनान्चे, मैं बैठ गया और बैठे बैठे मेरी आंख लग गई। मैं ने ख़्वाब में एक निहायत ही ख़ूब सूरत हूर को देखा जिस के रुख़्सारों से नूर की किरनें फूट रही थीं। मैं उस हुस्नो जमाल को देख कर दंग रह गया, इतने में उस ने मुझे अपने पाउं से हलकी सी ठोकर लगाई और कहने लगी "बड़े अफ़्सोस की बात है ! मैं जन्नत में तेरे लिये बनी संवरी बैठी हूं और तुम सो रहे हो ?" येह सुन कर मैं ने उसी वक़्त नज़्र मान ली कि अब कभी नहीं सोऊंगा।

www.dawateislami.net

मेरी येह ह़ालत देख कर ह़ूर मुस्कुरा दी जिस से मेरा सारा कमरा नूर से जगमगा उठा और मैं बड़ी ह़ैरानी से इस फैले हुवे नूर को देखने लगा। उस ने मेरी ह़ैरत को भांप लिया और कहने लगी : "जानते हो कि मेरा चेहरा इतना रोशन क्यूं है?" मैं ने कहा : "नहीं।" वोह कहने लगी कि, तुम्हें याद होगा कि एक मतरबा सख़्त सर्दियों की रात थी, तुम ने उठ कर वुज़ू किया, इस के बा'द नमाज़ अदा करना शुरूअ़ की थी और फिर **अल्लाह** तआ़ला के ख़ौफ़ की वजह से तुम्हारी आंखों से आंसू बह निकले थे, उसी वक़्त रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मुझे हुक्म दिया गया कि फ़िरदौसे बरीं से सीनए ज़मीन पर उतर कर तुम्हारे उन आंसूओं को अपने दामन में समेट लूं। फिर मैं ने तुम्हारे आंसूओं का एक क़त़रा अपने चेहरे पर मल लिया था, मेरे चेहरे की येह चमक तुम्हारे उन्हीं आंसूओं की वजह से है।"

﴿حکایات الصالحین، ص ۲۹﴾

﴿हंसते हुवे जन्नत में.....﴾

किसी बुज़ुर्ग का क़ौल है : "जो हंसते हुवे गुनाह करेगा तो रब तआ़ला उसे इस ह़ाल में जहन्नम में डालेगा कि वोह रो रहा होगा और जो रोते हुवे नेकी करेगा, तो **अल्लाह** तआ़ला उसे इस ह़ाल में जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा कि वोह हंस रहा होगा।"

(المنبہات علی الاستعداد لیوم المعاد، ص ۵)

मेरे अश्क बहते रहें काश ! हर दम
तेरे ख़ौफ़ से ! या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ या इलाही عَزَّوَجَلَّ

प्यारे इस्लामी भाइयो !

लेकिन येह ज़ेह्न में रहे कि जहां ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ सफ़रे आख़िरत की कामयाबी के लिये अहम्मिय्यत रखता है वहीं रह़मते इलाही की बरसात

www.dawateislami.net

की उम्मीद रखना भी नवीदे कामरानी है। बल्कि यूं समझिये कि इन्सान गोया एक ऐसा परन्दा है जिसे सफ़रे आख़िरत कामयाब बनाने के लिये **ख़ौफ़े ख़ुदा** और **रह़मते इलाही** की उम्मीद के दो परों की ज़रूरत है। रह़मते ख़ुदावन्दी किस त़रह़ अपने उम्मीदवार को आग़ोश में लेती है, इस का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल रिवायात से लगाइये.....

﴾मैं रह़मते ख़ुदावन्दी का उम्मीद वार हूं.....﴿

एक मरतबा सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी शख़्स को नज़्अ़ के आ़लम में देख कर उस से दरयाफ़्त फ़रमाया कि "तू ख़ुद को किस ह़ाल में पाता है?" उस ने अ़र्ज़ की, कि: "मैं गुनाहों से डरता हूं और रह़मते ख़ुदावन्दी का उम्मीद वार भी हूं।" तब ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: "ऐसे वक़्त में जिस शख़्स के दिल में येह दो बातें जम्अ़ होती हैं, रब तआ़ला उसे डर से नजात देता है और उस की उम्मीद बर लाता है।' ﴾شعب الایمان، جلد۲، ص٤، رقم الحدیث ۱۰۰۱﴿

﴾ज़मीन भर रह़मत.....﴿

ह़दीसे क़ुदसी है कि **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि "अगर मेरा बन्दा आस्मान भर के गुनाह कर बैठे, फिर मुझ से बख़्शिश चाहे और उम्मीदे मग़्फ़िरत रखे तो मैं उस को बख़्श दूंगा और अगर बन्दा ज़मीन भर के गुनाह करे तो भी मैं उस के वासित़े ज़मीन भर रह़मत रखता हूं।" ﴾کیمیائے سعادت، ج۲، باب فضیلة الرجاء، ص۸۱۳﴿

﴾रह़मत, ग़ज़ब पर सबक़त ले गई.....﴿

रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि रब तआ़ला का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है कि "मेरी रह़मत, मेरे ग़ज़ब पर सबक़त ले गई।" ﴾شعب الایمان، ج۱، ص۱۵، رقم الحدیث ۱۰۲۸﴿

www.dawateislami.net

रह़मते इलाही की मिसाल.....

मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ह़क़ तआ़ला अपने बन्दों पर इस से कहीं ज़ियादा मेहरबान है, जितना कि एक मां अपने बच्चे पर शफ़्क़त करती है।''

﴿مسلم، باب فی سعة رحمة الله، ص ١١٦٠، رقم الحديث ٢٧٦٤﴾

हंसने वाला आ'राबी.....

एक आ'राबी ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की, कि : ''क़ियामत के दिन बन्दों के आ'माल का ह़िसाब कौन करेगा ?'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !'' उस ने अ़र्ज़ की : 'क्या वोह ख़ुद ही ह़िसाब फ़रमाएगा ?'' जवाब दिया ''हां।'' येह सुन कर वोह आ'राबी हंसने लगा। आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वजह दरयाफ़्त की तो अ़र्ज़ करने लगा कि, ''मैं इस लिये हंस रहा हूं कि करीम जब ग़ालिब होता है तो वोह बन्दे की तक़सीर मुआ़फ़ फ़रमा ही देता है और ह़िसाब आसानी से लेता है।'' रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''आ'राबी ने सच कहा, रब्बे करीम से ज़ियादा कोई करीम नहीं है, येह आ'राबी बहुत बड़ा फ़क़ीह और दानिश मन्द है।''

﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء ج ٤، ص ١٨٣﴾

बरोज़े क़ियामत रब तआ़ला की रह़मत...

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि, ''अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन इस क़दर बख़्शिश फ़रमाएगा जिस का किसी के दिल में तसव्वुर भी न होगा, यहां तक कि इब्लीस भी इस का मुन्तज़िर होगा कि शायद मुझे बख़्श दिया जाए !''

﴿کیمیائے سعادت، ج ٢، باب فضیلة الرجاء، ص ٨١٥﴾

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सौ (100) रह़मतें.....

नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआ़ला की सौ रह़मतें हैं, निनानवे रह़मतें उस ने क़ियामत के लिये रखी हैं और दुन्या में फ़क़त् एक रह़मत ज़ाहिर फ़रमाई है। सारी मख़्लूक़ के दिल इसी एक रह़मत के बाइ़स रह़ीम हैं। मां की शफ़्क़त व मह़ब्बत अपने बच्चे पर और जानवरों की अपने बच्चे पर ममता, इसी रह़मत के बाइ़स है। क़ियामत के दिन उन निनानवे रह़मतों के साथ इस एक रह़मत को जम्अ़ कर के मख़्लूक़ पर तक़्सीम किया जाएगा, और हर रह़मत आस्मान व ज़मीन के त़बक़ात के बराबर होगी। और उस रोज़ सिवाए अज़्ली बदबख़्त के और कोई तबाह न होगा।"

﴿کنز العمال، ج ٤، صفحه ١١٨﴾

जन्नतियों की सफ़ों में.....

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि रह़मते कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बताया "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला बरोज़े क़ियामत मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाएगा..... : "ऐ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) क्या बात है मैं फुलां बिन फुलां को जहन्नमियों की सफ़ों में देख रहा हूं?" तो मैं अ़र्ज़ करूंगा : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ हम ने इस के नामए आ'माल में कोई ऐसी नेकी न पाई जो आज के दिन इस के काम आ सके।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "इस ने दुन्या में मुझे "या ह़न्नान या मन्नान, कह कर पुकारा था, क्या मेरे इ़लावा भी कोई ह़न्नान व मन्नान है?" येह कहने के बा'द उस शख़्स को जन्नतियों की सफ़ों में शामिल फ़रमा देगा।

﴿الدر المنثور، ج٧، ص٢٠٦﴾

www.dawateislami.net

बड़े गुनाह नज़र नहीं आ रहे ?.....

सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "मैं जन्नतियों में से आख़िरी दाख़िल होने वाले जन्नती और दोज़ख़ियों में से निकलने वाले आख़िरी शख़्स को जानता हूं कि येह वोह शख़्स होगा जिसे क़ियामत के दिन लाया जाएगा और कहा जाएगा कि "इस पर इस के छोटे गुनाह पेश करो और बड़े गुनाह छुपाए रखो।" चुनान्चे, उस के छोटे गुनाह पेश किये जाएंगे और कहा जाएगा कि तुने फुलां दिन फुलां गुनाह और फुलां दिन फुलां गुनाह किये ? वोह इन्कार करने की हिम्मत न कर सकेगा और कहेगा : हां ! उस वक़्त वोह अपने बड़े गुनाहों से डर रहा होगा कि कहीं ऐसा न हो कि वोह भी पेश कर दिये जाएं । जब उसे बताया जाएगा कि तेरे लिये हर गुनाह के बदले में नेकी है, तो वोह कहेगा कि "मैं ने तो और बड़े बड़े गुनाह भी तो किये हैं ! वोह यहां नज़र नहीं आ रहे है ?" ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुस्कुराहट के बाइस दाढ़ें चमक गईं ।

﴿مشكوة المصابيح ، باب الحوض والشفاعة ، ص٤١٦، رقم الحديث ٥٥٨٧﴾

मैं तुझ पर ज़ुल्म नहीं करूंगा.....

सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन मेरी उम्मत में से एक शख़्स को लाया जाएगा और उस के निनानवे आ'माल नामे साथ होंगे, जिन में से हर एक ह़द्दे निगाह तक त़वील होगा। उस शख़्स को उस के सारे गुनाह बताए जाएंगे और **अल्लाह** तआ़ला उस से पूछेगा : "क्या तुम इन में से किसी तक़सीर का इन्कार कर सकते हो ? कहीं फ़िरिश्तों ने इस के लिखने में तुम पर ज़ुल्म तो नहीं किया ?" वोह

www.dawateislami.net

शख़्स जवाब देगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ ! नहीं" फिर रब्बुल आ़लमीन दरयाफ़्त फ़रमाएगा : "क्या तेरे पास कोई उ़ज़्र है ?" वोह अ़र्ज़ करेगा : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! नहीं।" और वोह समझेगा कि अब तो मुझे दोज़ख़ में जाना पड़ेगा। तब रब तआ़ला फ़रमाएगा : "ऐ बन्दे ! तेरी एक नेकी मेरे पास है, मैं तुझ पर ज़ुल्म नहीं करूंगा।" फिर एक रुक़्आ़ लाया जाएगा जिस पर اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ लिखा होगा। उसे देख कर वोह शख़्स हैरान हो कर पूछेगा : "या रब عَزَّوَجَلَّ येह रुक़्आ़ उन बड़े बड़े दफ़ातिरे गुनाह के क्यूं कर हम पल्ला हो सकता है ?" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : "मैं तुझ पर ज़ुल्म नहीं करूंगा।" फिर गुनाहों पर मुश्तमिल उन तमाम आ'माल नामों को एक पलड़े में रखा जाएगा जब कि उस रुक़्अ़ को दूसरे पलड़े में रखा जाएगा तो रुक़्अ़ वाला पलड़ा उन तमाम पर भारी हो जाएगा। ﴿کیمیائے سعادت، ج۲، باب فضیلۃ الرجاء، ص۸۱۵﴾

﴿महब्बत का अ़जब अन्दाज़.....﴾

मरवी है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़हदे मसऊ़द में किसी जंग में क़ैद हो जाने वालों में एक बच्चा भी शामिल था। सख़्त गर्मी के दिन थे कि क़ैदियों के एक ख़ैमे से किसी औ़रत की निगाह उस बच्चे पर पड़ी और वोह दौड़ती हुई आई। ख़ैमे के दूसरे लोग भी उस के पीछे दौड़े। उस औ़रत ने दौड़ कर उस बच्चे को उठा लिया और अपने सीने से लगा कर अपना साया उस पर डाला ताकि वोह धूप से महफ़ूज़ रह सके। लोग औ़रत की महब्बत का येह अ़जीब अन्दाज़ देख कर हैरान रह गए और रोने लगे। जब येह वाक़िआ़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया गया तो आप उस औ़रत की शफ़्क़त और उन लोगों की गिर्या व ज़ारी से शाद हो कर फ़रमाने लगे : "क्या तुम्हें इस औ़रत की शफ़्क़त पर तअ़ज्जुब है ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" येह

www.dawateislami.net

सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला इस से कहीं ज़ियादा तुम से महब्बत फ़रमाता है जितना कि इस औ़रत को बच्चे से महब्बत है।" तमाम मुसलमान येह ख़ुश ख़बरी सुन कर शादां व फ़रहां वापस लौटे। ﴿کیمیائے سعادت، ج۲، باب فضیلۃ الرجاء، ص۸۱۶﴾

﴿जन्नत में जाने का हुक्म.....﴾

ह़ज़रते सईद इब्ने हिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि दो शख़्सों को जहन्नम से बाहर लाया जाएगा। ह़क़ तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा : "जो अ़ज़ाब तुम ने देखा वोह तुम्हारे ही अ़मलों के सबब से था, मैं अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता हूं।" फिर उन को दोबारा जहन्नम में डाले जाने का हुक्म दे दिया जाएगा। उन में से एक शख़्स ज़न्जीरें पड़ी होने के बा वुजूद, जल्दी जल्दी, दोज़ख़ की त़रफ़ जाएगा और कहता जाएगा कि : "मैं नाफ़रमानी (गुनाहों) के बोझ से इतना डर गया हूं कि अब इस हुक्म को पूरा करने में कोताही नहीं कर सकता।"

और दूसरा कहेगा कि : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं नेक गुमान रखता था और मुझे उम्मीद थी कि एक मरतबा दोज़ख़ से निकालने के बा'द दोबारा दोज़ख़ में डालना, तेरी रह़मत गवारा न करेगी।" तब **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत जोश में आएगी और उन दोनों को जन्नत में जाने का हुक्म दे दिया जाएगा। ﴿ترمذی، کتاب صفۃ جہنم، جلد۴، ص۲۶۹﴾

﴿साहिबज़ादे को नसीह़त.....﴾

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने साहिबज़ादे से फ़रमाया : "ऐ बेटे ! **अल्लाह** तआ़ला से ऐसा ख़ौफ़ रखो कि तुम्हें गुमान होने लगे कि अगर तुम तमाम अहले ज़मीन की नेकियां उस की बारगाह में पेश करो तो वोह इन्हें क़बूल न करे और

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला से ऐसी उम्मीद रखो कि तुम समझो कि अगर सब अहले ज़मीन की बुराइयां ले कर उस की बारगाह में जाओगे तो भी तुम्हें बख़्श देगा। ﴿احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ج ۴، ص ۲۰۲﴾

﴿एक शख़्स के सिवा.....﴾

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर आवाज़ दी जाए कि एक शख़्स के सिवा सब जहन्नम में चले जाएं तो मुझे उम्मीद है कि वोह (जहन्नम में न जाने वाला) शख़्स मैं होऊंगा और अगर ए'लान किया जाए कि एक आदमी के इ़लावा सब जन्नत में दाख़िल हो जाएं तो मुझे **ख़ौफ़** है कि कहीं वोह (जन्नत में दाख़िले से महरूम रह जाने वाला) मैं न होऊं।"

﴿حلیۃ الاولیاء، ذکر الصحابۃ من المہاجرین، ج ۱، ص ۸۵﴾

﴿रास्ते का कांटा हटाने ने बख़्शिश करा दी..﴾

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन ज़क्की رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मरज़ुल मौत में मुब्तला हुवे तो रोने लगे और इतना बेक़रार हुवे, जैसे कोई मां अपने बच्चे की मौत पर बेक़रार होती है। लोगों ने पूछा : "ह़ज़रत ! आप क्यूं रो रहे हैं ? जब कि आप ने तो बड़ी पाकीज़ा और परहेज़गारी की ज़िन्दगी बसर की है और अस्सी बरस अपने रब तआ़ला की इ़बादत व बन्दगी की है।"

आप ने फ़रमाया : "मैं अपने गुनाहों की नुहूसत पर आंसू बहा रहा हूं, जिन की वजह से मैं अपने रब तआ़ला की रह़मत से दूर हूं।" येह फ़रमा कर आप दोबारा रोने लगे। फिर कुछ देर बा'द अपने बेटे से मुख़ातब हो कर फ़रमाया : "मेरे बेटे ! मेरा चेहरा क़िब्ले की त़रफ़ फेर दो और जब मेरी पेशानी से क़त़रे नुमूदार होने लगें और मेरी आंखों से आंसू बह निकलें तो मेरी मदद करना और कलिमा शरीफ़ पढ़ना, शायद मुझे कुछ इफ़ाक़ा हो जाए। और मेरे मरने के बा'द जब मुझे दफ़्न करो और मेरी क़ब्र पर मिट्टी

www.dawateislami.net

डाल चुको तो वहां से रवाना होने में जल्दी न करना बल्कि मेरी तुरबत के सिरहाने खड़े हो कर "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ना कि इस से मुझे मुन्कर नकीर के सुवालों का जवाब देने में आसानी हो सकती है, इस के बा'द हाथ उठा कर येह दुआ करना : "ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ येह तेरा बन्दा है, इस ने जो गुनाह किये सो किये, अगर तू इसे अ़ज़ाब दे तो येह इसी का ह़क़दार है और अगर तू इसे मुआ़फ़ कर दे तो येह तेरे शायाने शान है।" फिर मुझे अल वदाअ़ कहते हुवे वापस पलट आना।"

आप के इन्तिक़ाल के बा'द बेटे ने आप की वसिय्यत पर ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ अ़मल किया। फिर उस ने दूसरी रात ख़्वाब में आप को देखा तो पूछा, "अब्बा जान ! क्या ह़ाल है ?" आप ने जवाब दिया : "मेरे बेटे ! मुआ़मला तो इतना मुश्किल और सख़्त था कि तू तसव्वुर भी नहीं कर सकता, जब मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़िसाब के लिये खड़ा हुवा तो उस ने फ़रमाया : "मेरे बन्दे ! बताओ, मेरे लिये क्या ले कर आए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ साठ ह़ज लाया हूं।" जवाब मिला : "मुझे इन में से एक भी क़बूल नहीं।" येह सुन कर मुझ पर लरज़ा त़ारी हो गया। **अल्लाह** तआ़ला ने फिर पूछा : "बताओ और क्या लाए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक हज़ार दिरहम का सदक़ा व ख़ैरात।" इरशाद फ़रमाया : "इन में से एक दिरहम भी मुझे क़बूल नहीं।" मैं ने कहा : "या इलाही عَزَّوَجَلَّ फिर तो मैं हलाक हो गया और अब मेरे लिये तबाही व बरबादी है।" तो रब तआ़ला ने फ़रमाया : "क्या तुझे याद है कि एक मरतबा तू अपने घर से बाहर कहीं जा रहा था कि रास्ते में तूने एक कांटा देखा और लोगों को अज़िय्यत से मह़फ़ूज़ रखने की **निय्यत** से वोह कांटा रास्ते से हटा दिया था, मैं ने तेरा वोही अ़मल क़बूल कर लिया और इस की वजह से तेरी बख़्शिश कर दी।" ﴿حکایات الصالحین، ص ۵۱﴾

www.dawateislami.net

﴾6﴿ ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करना जो इस सिफ़्ते अ़ज़ीमा से मुत्तसिफ़ हों :

अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ रखने वाले नेक लोगों की सोह़बत में बैठना भी इन्सान के दिल में ख़ौफ़े इलाही बेदार करने में मददगार साबित होता है । प्यारे आक़ा, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रफ़ इशारा करते हुवे इरशाद फ़रमाया : अच्छे और बुरे मुसाह़िब की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से नागवार बू आएगी ।" ﴿صحیح المسلم"ص۱۱۱٦،رقم الحدیث ۲٦۲۸﴾

वाक़ेई ! हर सोह़बत अपना असर रखती है, मिसाल के त़ौर पर अगर आप को कभी किसी मय्यित वाले घर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो वहां की फ़ज़ा पर छाई हुई उदासी देख कर कुछ देर के लिये आप भी ग़मगीन हो जाएंगे और अगर किसी शादी पर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा हो तो ख़ुशियों भरा माह़ोल आप को भी कुछ देर के लिये मसरूर कर देगा । बिल्कुल इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स ग़फ़्लत का शिकार हो कर गुनाहों पर दिलैर हो जाने वाले लोगों की सोह़बत में बैठेगा, तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द उन्ही की मानिन्द हो जाएगा और अगर कोई शख़्स ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जिन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मा'मूर हों, उन की आंखें अल्लाह तआ़ला के डर से रोएं तो यक़ीनी त़ौर पर येही कैफ़िय्यात उस शख़्स के दिल में भी सरायत कर जाएंगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

रहा येह सुवाल कि फ़ी ज़माना ऐसी सोह़बतें कहा मिल सकती है तो आप से गुज़ारिश है कि इस सुवाल का जवाब ह़ासिल करने के लिये आप इन गुज़ारिशात पर अ़मल फ़रमाए,

www.dawateislami.net

अपने शहर में जुमा'रात के दिन होने वाले **दा'वत इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करें। (इस्लामी बहनें अपने अपने शहर में इतवार के दिन दोपहर के वक़्त होने वाले इस्लामी बहनों के इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाएं) जहां पर होने वाली तिलावते कुरआन, इस्लाही बयानात, इजतिमाई तौ़र पर की जाने वाली फ़िक्रे मदीना और **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र, रो रो कर मांगी जाने वाली दुआ़एं, सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया जाने वाला दुरूदो सलाम, फिर सुन्नतें सीखने और दुआ़एं याद करवाने के ह़ल्क़ें वग़ैरा येह सब कुछ आप के दिलो दिमाग़ में इन्क़िलाब बरपा कर देगा। इस के इ़लावा इजतिमाअ़ में आप को इस पुर फ़ितन दौर में भी हज़ारों ऐसे इस्लामी भाई मिलेंगे जो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर हैं। इन की ह़या से झुकी हुई निगाहें, सुन्नत के मुत़ाबिक़ बदन पर सफ़ेद लिबास और सर पर ज़ुल्फ़ें नीज़ गुम्बदे ख़ज़रा की याद दिला देने वाला सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा, चेहरे पर शरीअ़त के मुत़ाबिक़ एक मुट्ठी दाढ़ी, बक़दरे ज़रूरत गुफ़्तगू का बा अदब अन्दाज़, ख़ुश अख़्लाक़ी का नुमायां वस्फ़ और किरदार की पाकीज़गी आप को येह सोचने पर मजबूर कर देगी कि मुझे सफ़रे आख़िरत की कामयाबी के लिये ऐसा ही मदनी माह़ोल दरकार है। क़वी गुमान है कि इन ही में से कोई आगे बढ़ कर आप से मुलाक़ात करे, जिस के नतीजे में आप दा'वते इस्लामी के माह़ोल की इफ़ादिय्यत के मज़ीद क़ाइल हो जाएं और आप भी येह मदनी मक़्सद ले कर घर लौटें कि,

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस मदनी मक़्सद को आप ने इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से अपनाया था उस मक़्सद को पूरा करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है कि अपनी इस्लाह़ के लिये अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, आ़लिमे बा अ़मल, यादगारे अस्लाफ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये[1] **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला आप को मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से ब आसानी हदिय्यतन मिल जाएगा, इस का बग़ौर मुत़ालआ़ करने के बा'द आप इस नतीजे पर पहुंचेंगे कि येह दर अस्ल ख़ुद एह़तिसाबी का एक जामेअ़ और ख़ुदकार निज़ाम है जिस को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से बतदरीज दूर हो जाती हैं और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है। मदनी इन्आ़मात के सिलसिले में दरकार वज़ाह़त के लिये **''जन्नत के त़लब गारों के लिये मदनी गुलदस्ता''** नामी किताब भी मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल फ़रमा लें। इन इन्आ़मात पर अ़मल करने के साथ साथ रोज़ाना इस रिसाले को पुर कीजिये (येह भी एक मदनी इन्आ़म है) और हर मदनी माह (या'नी क़मरी महीने) के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने अ़लाक़े के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के सिलसिले में दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िलों में शिर्कत भी बेह़द ज़रूरी है। अपनी रोज़ मर्रा की दुन्यावी मसरूफ़िय्यात तर्क कर के अपने घर वालों और फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल

---

1 ..... इस्लामी भाइयों के लिये **72** मदनी इन्आ़मात, इस्लामी बहनों के लिये **63** मदनी इन्आ़मात, स्कूल, कॉलेज और जामिआ़त के त़लबा के लिये **92**, त़ालिबात के लिये **83**, और मद्रसतुल मदीना के मदनी मुन्नों के लिये **40**, हैं। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

कर देने वाले दोस्तों की सोह़बत छोड़ कर जब हम इन क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे तो इन क़ाफ़िलों में सफ़र के दौरान हमें अपने तर्ज़े ज़िन्दगी पर दियानत दाराना ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश दिल में पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इर्तिकाब पर नदामत महसूस होगी, इन गुनाहों की मिलने वाली सज़ाओं का तसव्वुर कर के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, दूसरी त़रफ़ अपनी नातुवानी व बेकसी का एह़सास दामन गीर होगा और अगर दिल ज़िन्दा हुवा तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक कर रुख़्सारों पर बहने लगेंगे।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन मदनी क़ाफ़िलों में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह ज़बान से दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी दुन्या की मह़ब्बत से डूबा हुवा दिल आख़िरत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, अग़्यार की वज़्अ़ क़त़्अ़ पर इतराने वाला जिस्म अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का आईनादार बन जाएगा, ग़ैरों के त़रीक़ों को छोड़ कर अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ के नक़्शे क़दम पर चलने की तड़प नसीब होगी, यूरोपी ममालिक की रंगीनियों को देखने की ख़्वाहिश दम तोड़ देगी और मक्कतुल मुकर्रमा व मदीनतुल मुनव्वरा के मुक़द्दस सफ़र की तमन्ना नसीब होगी, वक़्त की दौलत को मह़ज़ दुन्या कमाने के लिये सर्फ़ करने की बजाए अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये ख़िदमते दीन में सर्फ़ करने का शुऊ़र नसीब होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें अपना ख़ौफ़ और अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़श्क़ अ़त़ा फ़रमाए और इसे हमारे लिये ज़रीअ़ए नजात बनाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

﴿۱﴾ القرآن الحکیم مطبوعۃ دارالعلوم امجدیہ کراچی .....
﴿۲﴾ تفسیر الدر المنثور مطبوعۃ داراحیاء التراث العربی .....
﴿۳﴾ صحیح البخاری مطبوعۃ دار احیاء التراث العربی بیروت.....
﴿۴﴾ صحیح مسلم مطبوعۃ داراحیاء التراث العربی بیروت
﴿۵﴾ جامع الترمذی مطبوعۃ دار الفکر بیروت .....
﴿۶﴾ سنن ابن ماجہ مطبوعۃ دارالمعرفۃ بیروت .....
﴿۷﴾ مشکوۃ المصابیح مطبوعۃ دارالفکر بیروت .....
﴿۸﴾ کنز العمال مطبوعۃ دارالکتب العلمیۃ بیروت .....
﴿۹﴾ شعب الایمان مطبوعۃ دارالکتب العلمیۃ بیروت .....
﴿۱۰﴾ اسد الغابۃ مطبوعۃ داراحیاء التراث العربی بیروت.....
﴿۱۱﴾ حلیۃ الاولیاء مطبوعۃ داراحیاء التراث العربی بیروت .....
﴿۱۲﴾ فتاوی رضویہ مطبوعہ مکتبہ رضویہ کراچی .....
﴿۱۳﴾ احیاء العلوم مطبوعۃ دار صادر بیروت .....
﴿۱۴﴾ کیمیائے سعادت مطبوعہ انتشارات تہران .....
﴿۱۵﴾ منہاج العابدین مطبوعۃ مکتبۃ ابن القیم دمشق.....
﴿۱۶﴾ مکاشفۃ القلوب دارالکتب العلمیۃ بیروت.....
﴿۱۷﴾ درۃ الناصحین مطبوعۃ دارالفکر بیروت.....
﴿۱۸﴾ المنبہات علی الاستعداد مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور.....

www.dawateislami.net

﴿۱۹﴾ کتاب التوابین مطبوعۃ دارالکتب العلمیۃ بیروت.....

﴿۲۰﴾ ذم الھوٰی مطبوعۃ دارالکتب العلمیۃ بیروت.....

﴿۲۱﴾ تذکرۃ الاولیاء مطبوعہ انتشارات تھران .....

﴿۲۲﴾ شرح الصدور مطبوعۃ مرکز اھل السنۃ برکات رضا ھند

﴿۲۳﴾ تذکرۃ المحدثین مطبوعہ فرید بک اسٹال لاھور .....

﴿۲۴﴾ اولیائے رجال الحدیث مطبوعہ ضیاء الدین پبلی کیشنز کراچی

﴿۲۵﴾ حکایات الصالحین مترجم مطبوعہ ضیاء القرآن لاھور

﴿۲۶﴾ حیات اعلیٰ حضرت رضی اللہ عنہ مطبوعہ مکتبۂ نبویہ لاھور

﴿۲۷﴾ فیضان سنت مطبوعہ مکتبۃ المدینہ کراچی .....

﴿۲۸﴾ "میں سدھرنا چاھتا ھوں" مطبوعہ مکتبۃ المدینہ کراچی

﴿۲۹﴾ "قفل مدینہ" مطبوعہ مکتبۃ المدینہ کراچی .....

चार नसीह़तें

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ***इरशाद फ़रमाते हैं :*** *"मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम* رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی *की सोह़बत में रहा उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की, कि जब लोगों में जाओ तो इन चार बातों की नसीह़त करना :*

﴿1﴾ *जो* ***पेट भर कर*** *खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।*

﴿2﴾ *जो* ***ज़ियादा सोएगा*** *उस की उ़म्र में बरकत न होगी।*

﴿3﴾ *जो सिर्फ़* ***लोगों की ख़ुश्नूदी*** *चाहे वोह रिज़ाए इलाही से मायूस हो जाएगा।*

﴿4﴾ *जो ग़ीबत और* ***फ़ुज़ूल गोई*** *ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा।"*

(मिन्हाजुल आ़बिदीन स. 107)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

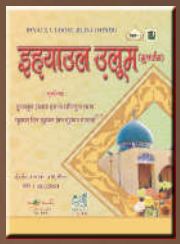

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात मग़रिब की नमाज़ के बा 'द आप के शहर में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526

अजमेर :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586

हुबली :- ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092

बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी, फ़ोन : 09369023101

Web : www.dawateislami.net / E- mail : maktabadelhi@gmail.com